Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्सर्ग

हिन्दी के श्रेष्ठ सम्पादक

और

साहित्य के मर्मज्ञ

स्वर्गीय

श्रद्धेय पंडित चन्दूलाल जी मेहता

की

पवित्र स्मृति में

SPS
891.433 V 84 T
10510

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्सर्ग

हिन्दी के श्रेष्ठ सम्पादक

और

साहित्य के मर्मज्ञ

स्वर्गीय

श्रद्धेय पंडित चन्दूलाल जी मेहता

की

पवित्र स्मृति में

SPS
891.433 V 84 T
10510

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Turak Tarunee

by

Vishombar nath Jija

Shiv Ram Gupta

Benang

1938

1936

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इक्का रानी

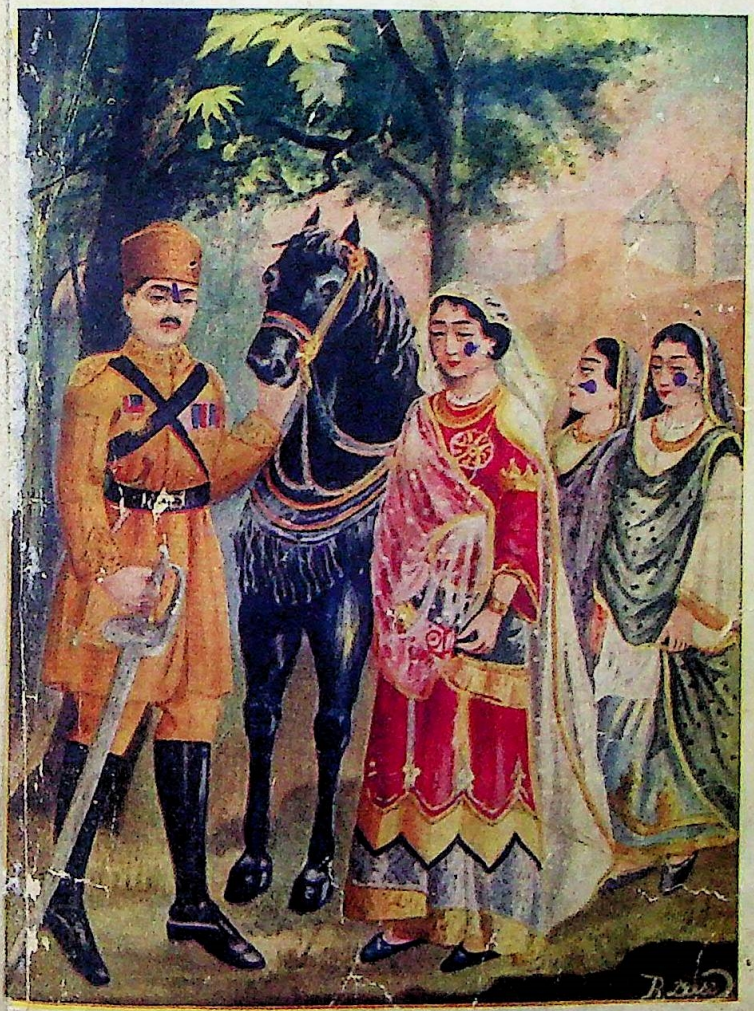

लेखक—
विश्वम्भर नाथ जिज्जा।

(उपन्यास-बहार आफिस)

CC-0. Public Domain. Funding by MoE-IKS

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो शब्द

तुर्की के प्राण मुस्तफ़ा कमाल पाशा को कौन इतिहासप्रेमी नहीं जानता ? उसने तुर्की को नाश होने से बचाया। उसके विचारों की स्वतंत्रता और क्षमता की प्रसिद्धि आज सारे संसार में गूँज उठी है। उसने देश को एक ओर स्वेच्छाचारी सुलतानों, धर्मान्ध ख़लीफाओं और मुल्लाओं से, तथा दूसरी ओर यूरोप की बलवान ईसाई शक्तियों के पंजे से मुक्त किया। मुस्तफ़ा कमाल ने कितनी ही लड़ाइयाँ लड़ी हैं, कितने ही भीषण संग्रामों में विजय पायी है। उसने युवा तुर्कों के स्वतंत्र प्रजातंत्र राष्ट्र की नींव डाली है।

पर ये बातें केवल ऐतिहासिक चर्चे की हैं। जिनका इस पुस्तक से प्रायः कुछ नहीं, या बहुत कम सम्बंध है। इसमें केवल कमाल की एक प्रेम कहानी है जिसका सारांश यह है कि मु० कमाल पाशा ने किसी समय एक अबोध बालिका से प्रेम किया था। उसी प्रेमिका से प्रथम मिलन, बाद में प्रेम की पीड़ा, वियोग-वेदना व्याकुलहृदय की विलापपूर्ण आतुरता, तथा चिरमिलन के लिये चंचल उत्सुकता इत्यादि औपन्यासिक छींटों का इसमें समावेश है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाद में कमाल का उससे विच्छेद हो गया। देश की राजनीतिक हलचल की असाधारण परिस्थितियों के घटना-चक्र में पड़ कर कमाल ने एक अन्य शिक्षित युवती से सम्बंध किया, जिसके साथ अन्त में उसने विवाह भी कर लिया। यह विवाह उसकी प्रथम प्रेमिका सहन न कर सकी। उसने कमाल के खेमे से कुछ दूर गिर कर जिस तरह आश्चर्य पूर्वक प्राण त्याग दिये, वह बहुत ही रोचक और चमत्कारिक है। लड़की की उस मृत्यु का समाचार संसार के पत्रों में प्रकाशित हुआ था। उसी समाचार के आधार पर यह "तुर्क तरुणी" उपन्यास तैयार हुआ है। इसमें ऐतिहासिक घटनाएँ प्रायः सब प्रामाणिक हैं। केवल वर्णन, काल्पनिक औपन्यासिक ढंग में है।

विश्वम्भर नाथ जिज्जा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुर्क जरूरी

R. K. Jangid

१
परिचय

With all the joys of Spring,
and Morning in her eyes.

सन् १९१५ का बसन्त ऋतु था। यूरोप में महायुद्ध की भीषण अग्नि और क्रान्ति धधक रही थी। राज-लिप्सा के लिये घोर द्वन्द मचा था। जर्मन, इंग्लैण्ड तथा फ्रान्स, रूस, रूम इत्यादि राष्ट्रों ने अपने अपने अस्तित्वकी बाज़ी लगादी थी और भयानक पहाड़ी डाकुओं की तरह निर्दय हो लड़ रहे थे। तोपों की दहाड़ और शस्त्रों की झनकार ने पृथ्वी को कम्पायमान करदिया था। संसार के प्रायः समस्त महान राष्ट्र इंग्लैंड के पक्ष में थे। जर्मनी के पक्ष में केवल रूम (तुर्की)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और आस्ट्रीया थे। पैशाचिक विजय की लालसा ने शक्तिशाली राष्ट्रों को लूट मार और नर-संहार के लिये तैयार कर दिया था। असंख्य विषाक्त गोलों, गोलियों की वर्षा ने लहलहाते गांवों और नगरों को नष्ट कर दिया था। मनुष्यों की बस्तियां उजाड़ और वीरान होगयी थीं। शान्ति का शत्रु, युद्ध का राक्षस पृथ्वी के वक्षस्थल पर रक्तपात करता हुआ तांडव नृत्य करने लगा। विश्वव्यापी महासमर से सारे संसार में हाहाकार मचा था। जर्मनी का मित्र तुर्की, एशिया के फाटक पर खड़ा हुआ अँग्रेज़ों को रोक रहा था। तुर्कों से अंग्रेजों के अनेकों युद्ध हुए और कितनी ही बार अंग्रेजी सेनाओं को पराङ्मुख होना पड़ा। तुर्की ने युद्ध की तैयारियां जोरों पर की थीं। तुर्क-सेनाओं का संगठन, कवायद और उनका पयान, एक स्थान से दूसरे स्थान को होरहा था। गोले, बारूद और रसदों की गाड़ियाँ रणक्षेत्रों की ओर भेजी जारही थीं। परन्तु, हम अपने पाठकों को इस युद्ध की आग से बचा कर तुर्की के एक पहाड़ी ग्राम का सौन्दर्य्य दिखाते हैं, जो हर तरह प्राकृतिक शोभाओं से परिपूर्ण, रमणीक और मनोहारी है।

* * * *

उत्तर तुर्की के पहाड़ी प्रदेश में, दजला नदी के किनारे, गेज़ाल नाम का एक छोटा सा हराभरा गांव है। इसके चारों ओर ऊंची ऊंची पर्वत-श्रेणियों का सिलसिला दूरतक चला गया है। जिनके बीच में यह छोटा सा हराभरा गांव प्राकृतिक शोभा और सौन्दर्य्य का उद्यान दिखता है। नानाप्रकार के वृक्षों, पौधों और फूलों की मनोहरता से पूर्ण गेज़ाल गांव, पर्वतों का एक हलका हिंडोल सा मालूम होता है-जिसमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रभात-पवन और संध्या समीर के शीतल झोंके पुलकित प्रकृति को आनन्ददायी झूले झुलाते हैं।

संध्या समय सूर्य्यभगवान अस्ताचल पहुंचने के पूर्व, अपनी अवशिष्ट किरणें, पर्वत शृङ्गों पर डालते हुए ग्राम का सौन्दर्य्य बढ़ा रहे हैं। शिखरों की आड़ में से, कंचन-कामिनी की प्रदीप्त ज्योति की तरह, अरुण किरणें चमक रही हैं। पर्वतों पर फैली हुई सूर्य्य की अरुण आभा और पृथ्वी पर विस्तृत वनस्पतियों की हरियाली जैसे अलग २ अपनी मनोहर छटा दिखा रही हैं, मनुष्यों और पशु पक्षियों के हृदय वशीभूत कर रही हैं। संध्या का नील अरुण आकाश, उसमें उड़ते हुए कहीं कहीं हलके मेघों के टुकड़े, चतुर चितेरे की अपूर्व मनोरंजक कला प्रस्फुटित करता है।

ऐसे सुहावने समय में एक पन्द्रह वर्ष की तुर्क-बालिका हरित मैदान में घूमते हुए फूल चुन रही है। उसके साथ दो सुन्दर सहेलियां भी हैं, जो उसके पीछे धीरे धीरे चल रही हैं। बालिका की मूल्यवान तुर्की लिबास से मालूम होता है, कि वह किसी सम्पन्न घरकी लड़की है। वह एक प्रकार का तुर्की जामा, जिसे "फ़रीज़ी" कहते हैं, पहने थी; जिस में लहंगा, सलूका और गुलाबी रंग की ओढ़नी सिली थी। उसने निर्जन स्थान में मुंह पर की नक़ाब उलट दी और स्वतंत्रतापूर्वक कभी यह फूल कभी वह फूल तोड़ती हुई घूम रही है। उसके बायें हाथ में एक फूलों की डाली है, जिसमें उसने बहुत से रंगविरंगी पुष्प तोड़ कर एकत्र किये हैं। सखियों ने गुलाब के फूलों से उसका सिंगार कर दिया था।

बालिका कभी सरलतापूर्वक सखियों से हंसती है, ठहर कर बातें करती है, फिर घूमती है। इठला के बदन तोड़ती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुई चलती है, कभी रुककर सखियों को कोई चीज़ दिखाकर हंस देती है। उसका गौरवर्ण, कान्ति और सौन्दर्य्य से परिपूर्ण मुख, गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था। उसके मदमाते नेत्रों में चन्द्र का चशक (जाम) नाच रहा था। उसकी सुडौल नाक, पतले पतले होंठ, उन्नत ललाट और कमान सी खिंची भौंहें, सारे मुख की अपूर्व सुन्दरता प्रकट करती थीं। सौन्दर्य्य के तीक्ष्ण तेज से तमतमाता हुआ मुखड़ा बड़ा ही भोला और सरल था। उसके दायें गाल पर एक काला तिल है, जिसने उसके सौन्दर्य्य की महिमा असंख्य गुना बढ़ादी है। गुलाब के फूलों की बहार में वह स्वंय एक खिला पुष्प मालूम होती है। उसकी दोनों सहेलियों ने भी अपने अपने मुख पर की नकाबें उलट दी हैं और वे धीरे धीरे बालिका के पीछे चल रही हैं।

उस स्थान से प्रायः दो तीन मील की दूरी पर, पहाड़ी घाटियों में तुर्क-सेनाओं का पड़ाव पड़ा है। तुर्क-बालिका उस ओर देखने लगी और सखियों को उगंली से उधर दिखा दिखा कर बातें करने लगी।

इसी समय दूर पहाड़ी मार्ग से एक युवा तुर्क (यङ्ग टर्क) सरपट घोड़ा फेंके आता हुआ दिखायी दिया। बालिका की चंचल दृष्टि उधर दौड़ गयी। उसने देखा, कि तीव्रगामी तुर्की घोड़ा बड़ी तेज़ी से दौड़ता चला आरहा है। देखते देखते घोड़ा बहुत ही निकट आगया, परन्तु सहसा यह क्या? घोड़ा ऊंचे नीचे पहाड़ी मार्ग में ठोकर खाकर गिरा और अपने सवार को भी उसने दूर फेंक दिया।

घोड़ा गिरते देख तुर्क-बालिका, सखियों सहित सवार की सहायता के लिये दौड़ गयी। उसने देखा, कि सवार दाहिने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाथ को भूमि पर टेकते हुए उठने का उद्योग कर रहा है। बालिका पास गयी। उसने और उसकी सखियों ने संभाल कर सवार को उठाया।

तुर्क सवार उठा। उसने अपने सैनिक वस्त्र ठीक किये। उसे कुछ चोट न आयी थी। उसने बड़ी कृतज्ञता से बालिका की ओर देखा। सवार ने होठों पर हलकी हंसी लाते हुए और मस्तक को विनम्रता से झुकाते हुए कहा,--"आपने मेरी इस समय बड़ी सहायता की। इस उपकार के लिये मैं आपका आजीवन ऋणी रहूंगा।"

बालिका अल्हड़ स्वभाव से हंस कर बोली,--"मैंने आप को गिरते देखा, तभी मेरा दिल घबराया। आपका घोड़ा बड़ी तेज़ी से आरहा था।" इतना कहकर वह तुर्क सवार को निहारने लगी, बलवान, रूपवान सवार का तेजपूर्ण मुख देखने लगी।

सवार ने विनम्रता से फिर कहा,—"भद्र महिला! तुमने बहुत कष्ट सहन कर मुझे बचाया। मैं हृदय से तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। तुमको और आज के तुम्हारे कार्य्य को कभी न भूलूँगा। क्या मैं तुम्हारा नाम और परिचय पूछ सकता हूँ?"

सुन्दरी बालिका अभिमानी माता पिता की पुत्री थी, इसलिये वह स्वंय अपना नाम किसी को न बताती थी। परन्तु, युवा तुर्क के पूछने पर उसने प्रथम बार अपना वह नियम और अभिमान तोड़ा। उसने निःसङ्कोच अपना नाम बता दिया,—"मेरा नाम ख़ानम अज़ीज़ा है।" उसने कहा मैं-"यहाँ के ज़मींदार सर्दार सफ़दर की लड़की हूँ। मैं इस समय घूमने निकली थी। आपका घोड़ा जब बड़ी दूरसे आरहा था, तभी से मैं उसे देख रही थी। और दिलमें डर रही थी कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घोड़ा क्यों इतनी तेज़ी से दौड़ रहा है। इतने ही में घोड़ा आपका गिरा, और मैं घबराकर दौड़ी आयी। यह मेरा सौभाग्य था जो आपसे वीर सैनिक को मैं कुछ सहायता पहुंचा सकी, क्या आप भी अपना परिचय मुझे बतायेंगे ?"

युवा तुर्क ने सिर झुका कर कहा–"मैं एक साधारण सैनिक हूँ। मेरा नाम मुस्तफ़ा कमाल है। वह जो दूर सेनाका पड़ाव है, मैं वहीं जारहा हूं।"

बालिका ने सरलतापूर्वक कहा,––"आपका नाम मुस्तफ़ा कमाल है ! बहुत ही अच्छा नाम है !" फिर उसने अपनी सखियों की तरफ़ ताक कर कहा,–"यह बड़े ही महान सैनिक मालूम होते हैं !"

मुस्तफ़ा कमाल अपना घोड़ा ठीक करने लगे। उन्हें सैनिक पड़ाव पर जाने की शीघ्रता थी। उन्होंने कहा,—"अच्छा अब मैं पड़ाव की ओर जाता हूँ। फिर मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करो। तुम्हारी आज की सहायता को और तुमको, मैं कभी न भूलूँगा।"

यह कहते हुए मुस्तफ़ा कमाल अपने घोड़े पर सवार हुए। बालिकाने कहा,–"कभी इधर से जाते हुए, यदि आपको कष्ट न हो, तो मेरे घर आइयेगा। वह जो सामने प्रासाद दिखायी देता है, वहीं मैं रहती हूँ। अवश्य आइयेगा। मेरे पिताजी भी आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न होंगे।"

बालिका ने ये वाक्य इतनी उत्सुकता से कहे, कि मुस्तफ़ा कमाल उसका मुख निर्निमेष नेत्रों से देखने लगे। घोड़े पर चढ़कर जब नीचे खड़ी सुन्दरी को देखा, तो उन्हें ऐसा मालूम हुआ, कि आज के पहले ऐसी सुन्दरी तुर्क-तरुणी उन्हों ने कभी नहीं देखी। अत्यन्त शान्त और गम्भीर हृदय वाले क-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माल का मन एकबार कुछ विचित्र चंचल हो उठा। मन में ऐसी इच्छा हुई कि एकबार फिर घोड़े से गिरें और उसी सुन्दरी के सहारे उठें।

कमाल ने अपने चमकीले नेत्रों की ज्योति से सुन्दरी को फिर देखा, और विनय पूर्वक कहा,–"हाँ, मैं अवश्य आऊँगा। अब जाता हूं, मुझे क्षमा करना। तुम्हें देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ।"

यह कहते हुए कमाल ने उसे कृतज्ञतापूर्वक सलाम किया। ख़ानम अज़ीज़ा ने भी उसे सलाम किया।

तत्पश्चात कमाल ने घोड़े को एंड़ लगायी। घोड़ा हवा से बातें करने लगा। तुर्की–बाला उसे खड़ी बराबर देखती रही, जब तक कि घोड़ा आंखों से औझल न होगया। अज़ीज़ा उस ओर देखती हुइ लौटने लगी।

संध्या होगयी थी–सूर्य्य के डूबने से संध्या की कालिमा क्रमशः फैल रही थी। अज़ीज़ा का प्रफुल्लित मुख जैसे उदासी के साथ बारम्बार उसी तरफ देखता था, जिधर युवा सवार का घोड़ा गया है। एक सखी ने कहा–"बानूं! रात हो रही है, अब घर चलो।"

अज़ीज़ा ने ठहर कर कहा,–"हाँ चलो।" वह मन्द मन्द गति से घरकी ओर रवाना हुई। उसका मुख कुछ उदास और चिन्तित होगया था। हृदय प्रेम की नवसंचारित कल्पनाओं से पुलकित हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

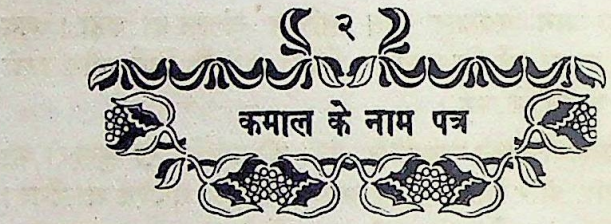

२

कमाल के नाम पत्र

Since thus I have endowed you with the whole.
Joy of my flesh, and treasure of my Soul,
And your life debt to me looms so supreme,
Love, shal! I wax ungenerous as to seem.
By sing or supplication to demand.
An answering gift from your reluctant hand.

Sarojni Naidu.

दो दिन बीत गये, पर फिर वही युवा तुर्क सवार न दिखायी दिया। अज़ीज़ा उसी सवार को याद करती है। उस उद्यान में आती है और कभी कभी अपनी प्यारी सखी शिताबी से उसकी चर्चा और प्रशंसा करती है।

अज़ीज़ा के नेत्र कभी अश्रुपूर्ण हो जाते हैं। एक मुग्ध प्रेमिका की तरह वह उस युवा तुर्क की चिन्ता करती थी, फिर जैसे बेबस होकर पलंग पर पड़ी अँगड़ाइयां लेती थी, करवटें बदलती थी। व्याकुल विचारों की वेदना हृदय में हलचल मचाये थी।

अज़ीज़ा ने धीरे से सखी से कहा,—"शिताबी! वह सवार फिर न आया। क्या नहीं आयेगा? मैं तो समझती हूँ कि वह एक सच्चा योद्धा है और अपना वचन पूर्ण करने के निमित्त अवश्य आयेगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिताबी ने हंसकर कहा,–"क्यों बानू, इतना अधीर क्यों होती हो ? वह यदि, कदाचित भूल गया और नहीं आया तो तुम्हीं एक पत्र भेजकर उसे याद करो। तब देखो, तागे में बंधे सरकार आते हैं या नहीं ?"

इतना कहकर शिताबी ज़ोर से हंसी। अज़ीज़ा ने खिन्न होकर कहा,—"चुप कम्बख़्त ! इतना हंसती क्यों है ? अच्छा मान ले, यदि मैं उसे पत्र भेजूँ तो लिखूँ क्या ? शिताबी ! कुछ उपाय कर। बता, जल्दी बता, मुझे क्या करना चाहिये ?"

शिताबी ने कहा–"यह क़लम, दावात, कागज़ लीजिये और अपने कमाल को एक पत्र लिख डालिये।"

"और यह पत्र लेकर जायगा कौन ?" अज़ीज़ा ने चिन्ताकुल हो प्रश्न किया।

"यदि आज्ञा हो तो मैं ही मर्दाने लिबास में जाऊँ। वह भी मुझे देखकर एकबार चकित हो जायँगे।" शिताबी ने हंसकर कहा।

अज़ीज़ा ने प्रसन्न होकर कहा,–"हाँ सखी, ठीक है ! मैं पत्र लिखती हूँ–तूही लेकर जा।" इसके बाद अज़ीज़ा ने एक छोटा सा पत्र लिखकर शिताबी को दिया।

शिताबी ने तुर्क-सैनिक के वस्त्र पहनें। मुँह को काली नक़ाब से ढँका। तमंचा, छुरा लगा कर ठीक एक युवा तुर्क की तरह लगने लगी। अज़ीज़ा का पत्र कोट के भीतरी जेब में रखा और घोड़े पर सवार होकर सैनिक पड़ाव की ओर रवाना हुई।

चांदनी रात में शिताबी घोड़े पर धीरे धीरे जा रही थी। प्रायः आध मील जाने पर उसे सामने से कई घोड़े आते हुए दिखायी दिये। शिताबी एक तरफ़ पेड़ की आड़ में जाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चुप चाप खड़ी हो गयी। जब वे सवार निकल गये तो वह आगे बढ़ी।

थोड़ी देर के बाद शिताबी सैनिक पड़ाव के पास पहुँची। कई बन्दूक-धारी तुर्क सिपाहियों ने आकर उसे घेर लिया और बारी बारी से प्रश्न करने लगे।

"तुम कौन हो जो इस समय सैनिक पड़ाव में आये हो?" एक सिपाही ने कहा।

"अजी, यह कोई शत्रु पक्ष का गुप्तचर मालूम होता है। देखो, कैसी शरारत से चुपचाप खड़ा है। तू मुँह पर से अपनी नक़ाब हटा।" कहता हुआ एक सिपाही शिताबी की नक़ाब हटाने के लिये आगे बढ़ा।

निष्ठुर सिपाहियों के कर्कश कंठ से शिताबी कुछ भय-भीत न हुई। वह तुरन्त पीछे हट कर मर्दानी बोली में बोली,—"मुस्तफ़ा कमाल कहाँ हैं? मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।"

मुस्तफ़ा कमाल का नाम सुनते ही सिपाही कुछ रुके। उन्होंने आपस में कहा,—"यह प्रधान नायक से मिलना चाहता है।" सिपाहियों ने फिर शिताबी से कहा,—"तुम ऐसे नहीं नायक से मिल सकते। पहले तुम अपना नाम बताओ और मुंह पर से नक़ाब हटाओ।"

शिताबी ने ज़रा दृढ़ता पूर्वक कहा,—"मैं हरगिज़ नकाब न हटाऊंगा और न अपना नाम बताऊंगा। तुम जाकर प्रधान नायक को ख़बर दो, कि एक चिरपरिचित मनुष्य उनसे अभी मिलना चाहता है। अत्यन्त आवश्यक कार्य्य है। न मिलने से बड़ी हानि होगी।"

ये शब्द शिताबी ने ऐसी ज़ोर से कहे, कि मूर्ख सिपाहियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने न जाने क्या समझा। उन्होंने कहा,—"चलो, हम नायक को ख़बर करते हैं, वह अपना समझेंगे।"

सिपाहियों ने जाकर मुस्तफा कमाल को ख़बर दी, कि एक अपरिचित नक़ाबपोश आपसे मिलना चाहता है।

प्रधान नायक मुस्तफ़ा कमाल इस समय अपने सैनिक 'केम्प' में बैठे युद्ध के नकशे देखने में निमग्न थे। "अपरिचित नकाबपोश" सुनते ही उन्हें न जाने अपने किस गुप्तचर की याद हो आयी। उन्होंने आज्ञा दी,-"उसे अन्दर लाओ!"

नकाबपोश शिताबी ने केम्प के भीतर घुसते ही देखा, कि मुस्तफ़ा कमाल एक कुर्सी पर बैठे हैं। उनके सामने दो तुर्क सैनिक और बैठे हैं।

मुस्तफ़ा कमाल ने नकाबपोश से कहा,—"क्या समाचार लाये?"

"समाचार बहुत ही आवश्यक है, परन्तु पहले यहां एकान्त होना चाहिये तब बताऊंगा।" शिताबी ने कहा।

मुस्तफ़ा कमाल एक अत्यन्त चतुर सैनिक हैं। नकाबपोश (शिताबी) का "एकान्त" शब्द सुन कर उन्होंने सोचा, कि मेरा कोई गुप्तचर इस ना समझी से बातें न करेगा। उसे यह अवश्य जानना चाहिये, कि मैं इस समय एकान्त में हूँ।

उन्होंने सोचा, कि कदाचित शत्रु का कोई गुप्तचर हमारे केम्प में घुस आया है। बिना एक क्षण का भी बिलम्ब किये उन्होंने लपक कर नकाबपोश की कलाई पकड़ ली और दूसरे हाथ से ज़बर्दस्ती उसकी नकाब ऐसी ज़ोर से खींची कि नकाब फट गयी। हाथ पकड़ते ही शिताबी चिल्लाई। नकाब फटते ही लेम्प के प्रकाश में सुकोमल रमणी मुख दिखागया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमाल पहले, चकित रह गये, फिर उन्होंने डपट कर पूछा--"तू कौन है ?"

शिताबी बिल्कुल न डरी। वह कमाल के झपटने और चिल्लाने पर मन ही मन हंसी। उसने केवल अपनी कलाई मलते हुए कहा,—"हाय, मेरे अल्लाह ! मैं मर गयी। अज़ीज़ा ने आज मेरी जान सासत में डाली।"

अज़ीज़ा का नाम सुनते ही मुस्तफ़ा कमाल चौंक उठे। इस प्यारे नाम अर्ज़ीज़ा को वह अब तक न भूले थे, बल्कि कभी कभी कोई काम करते हुए, उन्हें उसी हरित उद्यान की सुधि हो आती थी। वह अलग हट कर कुछ ध्यान में पड़ गये। उन्होंने दोनों तुर्क सैनिकों को आज्ञा दी, कि कमरे के बाहर चले जाओ।

शिताबी ने मुंह बनाकर और अपनी कलाई मलते हुए कहा,-"मेरी दुर्दशा करने के पूर्व ही आपने क्यों न इन दोनों सैनिकों को निकाला ? आपने मेरी नक़ाब फाड़ डाली। हाय ! मेरी कलाई तोड़ डाली।"

मुस्तफ़ा कमाल मन में मुस्कराये, और वह मुस्कराहट उनके होठों पर भी आ गयी। उन्हें उस दिन की घोड़े पर से गिरने वाली दुर्घटना याद आयी। साथ ही अज़ीज़ा का अपूर्व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार याद आया। अज़ीज़ा का सौन्दर्य्य आलस्यपूर्ण कटाक्ष, मृदु सरल स्वभाव सभी स्मर्ण हो आये।

वह अपनी कुर्सी पर बैठ गये। और शिताबी को आदर-पूर्वक एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। कमाल ने विन-म्रता से मुस्कराकर कहा,—"ऐसी विनम्रता जिसे कोई भी स्त्री क्षमा कर देती—तुम इस समय की मेरी धृष्टता को क्षमा करना। अच्छा, बताओ, तुम क्या चली ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिताबी ने कहा,—"मैं आपसे यही कहने आयी हूँ, कि जिस का दिल चुराकर आप आये हैं, उसे फिर सूरत तो दिखायी होती! अज़ीज़ा आप ही का नाम याद करती और रोया करती है।"

मुस्तफ़ाकमाल यह सुन कर मन में बहुत प्रसन्न हुए। वह सोचने लगे,—"क्या वह मुझे प्रेम करने लगी है? अरे, इतनी दूर तक तो मैंने कभी न सोचा था!"

शिताबी ने जेब से अज़ीज़ा का पत्र निकालकर कमाल को दिया। कमाल ने उत्सुकता से पत्र ले लिया और उसे पढ़ने लगे।

"मेरे प्रिय पुरुष कमाल! हे मेरे प्यारे दिलाराम! तुम क्या मुझे भूल गये? तुम फिर क्यों न आये? मैं तो नित्य तुम्हारा दर्शन करने के लिये उसी उद्यान में आती हूँ, पर तुम कहाँ हो-प्रियतम! यदि तुम्हें भी मेरा प्रेम हुआ हो; तो तुम्हें उसी प्रेम की सौगंध है-अज़ीज़ा के प्राण की सौगंध है; एकबार अवश्य आओ! तुम्हारी ही तरफ़ तृषित नेत्र लगे हैं। यदि मुझे भूले न हो, तो तुरन्त आओ! विशेष हाल शिताबी से जान लेना। तुम्हारी अज़ीज़ा।"

पत्र पढ़कर, प्रेम के प्रचुर अनुराग से, कमाल को रोमांच हो आया। क्षुधित प्रेमी की तरह प्रेम-पाश में फंसना अच्छा मालूम हुआ। उन्होंने मन में सोचा-"अहा, वह मुझे प्यार करने लगी है! यह मुझे मालूम ही न होने पाया, कि प्रेम-स्रोत की निर्मल तरङ्ग ने हार्दिक भावनाओं की बालू सरीखी लकीरों को धोकर बहा दिया है।"

पत्र को हाथ में लिये, कमाल ने मृदु गम्भीरता के साथ मीठे और कोमल स्वर में कहा,-"शिताबी! देखो, तुम जाकर उसे (अज़ीज़ा को) मेरे प्रेम का निश्चय करा दो। अज़ीज़ा से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहना, कि मैं भी उसके लिये, उसी की तरह, व्याकुल और चिन्तित हूँ। मैं कल सन्ध्या समय ठीक पांच बजे उसी उद्यान में मिलूँगा।"

शिताबी ने धीरे से कहा,-"आप दो हरफ़ लिख दीजिये। आपकी भाषा और आपके भाव मैं उनके (अज़ीज़ा के) सामने कहां से लाऊँगी?"

कमाल ने गर्दन झुकाये कहा,-"अच्छा, मैं लिख देता हूँ।"

कमाल ने कुछ विशेष नहीं लिखा, केवल यही शब्द लिख दिये-"प्यारी अज़ीज़ा! घबराना नहीं। मैं कल संध्या समय उसी स्थान पर मिलूँगा।" "कमाल"

पत्र लिफ़ाफ़े में बन्द कर शिताबी को दे दिया। शिताबी ने झुक कर सलाम किया और फिर मुँह रंजीदा बना कर कहा,—"आपने मेरी नकाब फाड़ डाली। अब, मैं किस तरह जाऊँ?"

कमाल ने हंस कर कहा,-"घबराओ नहीं। मैं तुम्हें अपनी नकाब देता हूँ।" यह कहते हुए कमाल ने अपनी काली रेशमी नक़ाब शिताबी को दी। शिताबी ने नकाब मुंह पर लगा ली, और जाने के लिये तैयार हुई। कमाल भी उसके साथ केम्प के बाहर निकले। शिताबी से मार्ग में तुर्क पहरेदारों से कुछ झगड़ा झंझट न हो, इसलिये घोड़े पर सवार होकर शिताबी के साथ गये और बहुत दूर तक उसे पहुँचा आये।

शिताबी निर्विघ्न घर पहुंची।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

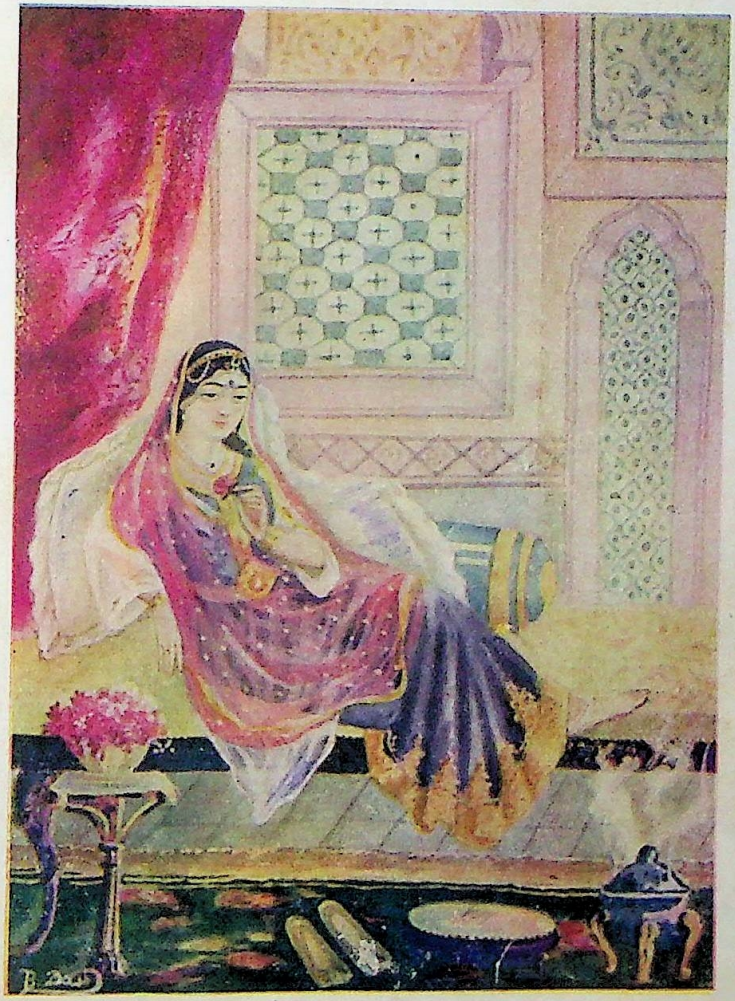

अज़ीज़ा अपने एकान्त कमरे में अकेली बैठी अपने प्रिय पुरुष का चिन्तन कर रही थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३

प्रेम की चिन्ता

What can Love say ? Now all is told, dear,
And yet it seems' tis all to tell;
The words that are so trite and old, dear,
But never lose their first sweet Spell;
For while the Stars keep watch above thee,
And while the winds shall rise and fall
These simple words, "I love thee, I love thee,"
Shall be most beautiful of all.

आधी रात का समय है। ख़ानम अज़ीज़ा अपने कमरे में बैठी कमाल का चिन्तन कर रही है। वह रह रह कर दर्वाज़े की तरफ़ देखती है, फिर हताश होकर हाथ मलती है। उस उत्सुकता उसकी कल्पना से भी तीव्र और विस्तृत है। उसकी अधीरता जैसे लङ्गर बन कर उसे कभी दुःखदायी, कभी सुखदायी समुन्द्र में डुबोती है। वह बारम्बार व्याकुल होकर यही सोचती है कि, शिताबी क्या जवाब लायगी ?

इतने ही में खटका हुआ। अज़ीज़ा की आंखें फिर दर्वाज़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की तरफ गयीं। उसने देखा, अब की सचमुच प्रसन्न शिताबी ने कमरे में प्रवेश किया। अज़ीज़ा ने असीम उत्सुकता से पूछा–"शिताबी, कैसी आयी ?"

शिताबी ने कुछ हंस कर कहा–"बानू ! कुछ न पूछो। किसी तरह जान सलामत लेकर आयी हूँ, नहीं तो, तुम्हारे कमाल ने मुझे आज मार ही डाला था।"

अज़ीज़ा ने घबरा कर कहा–"क्यों, क्या हुआ ? क्या वह कुछ नाराज़ हुए थे ?"

शिताबी ने हंसते हंसते सब वृतान्त सुनाया। कलाई उमेठने, नकाब फाड़ने की बातें सुन कर अज़ीज़ा कुछ चकित हुई। पर शिताबी ने यह कह कर अज़ीज़ा की भयप्रद शङ्का का समाधान किया कि, "कमाल ने मुझे शत्रु पक्ष का गुप्तचर समझ कर ऐसा उदंड व्यवहार किया।" अज़ीज़ा के भी होठों पर थोड़ी हंसी आयी। शिताबी ने कहा,–"देखो, यह नकाब जो मैं लगाये हूं, मुस्तफा कमाल ने मुझे दी है।" अज़ीज़ा ने वह नक़ाब तुरन्त शिताबी से ले ली।

इसके बाद शिताबी ने मुस्तफ़ा कमाल का पत्र अज़ीज़ा को दिया। अज़ीज़ा ने वह पत्र हृदय से लगाया, फिर क्षण भर के लिए आंखें मूँद लीं। लिफ़ाफ़ा खोल कर पत्र पढ़ा। प्रियतम कमाल की लिखी दो पक्तियां ही बहुत थीं। वह पढ़ कर बहुत ही प्रसन्न हुई कि, कमाल कल आयंगे।

शिताबी ने कहा–"कमाल ने मुझे आज्ञा दी है कि, मैं तुम्हें उनके प्रेम का विश्वास करा दूं। वह तुम्हें सत्य हृदय से उतना ही प्यार करते हैं, जितना क़ैस ने लैला को, या फ़रहाद ने शीरी को किया था।" यह कहती हुई शिताबी खिल-खिला कर हंस पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अज़ीज़ा ने शिताबी का कंधा पकड़ कर कहा-"सच बता, उन्होंने क्या क्या कहा ?"

शिताबी ने हंसी रोक कर कहा-"बानूँ ! सच कहती हूँ, अल्लाह मुझे ग़ारत करदे जो झूठ कहूँ, वह (कमाल) भी तुम्हें बेहद्द प्यार करते हैं। तुम जितनी देर उनसे जुदा हो, उनकी रूह उनकी क़ालिब से जुदा है। उनका दिल, दिमाग़ तुम्हारे ही प्रेम से भर गया है, और वह तुम्हें मृदु स्मृति की नांई हर समय याद करते हैं। कल उसी उद्यान में वह तुमसे मिलेंगे।"

अज़ीज़ा प्रेम से विह्वला हो फिर कमाल का पत्र पढ़ती थी। वह बारम्बार पढ़ती थी, परन्तु तृप्त नहीं होती थी।

* * * * *

दूसरे दिन संध्या के चार बजे अज़ीज़ा उसी उद्यान में जाकर कमाल की बाट जोहने लगी। उसके साथ शिताबी है। अज़ीज़ा की दृष्टि सुदूर क्षितिज में लगी है, जिधर से उसका "प्रिय पुरुष" कमाल आयेगा। पूरा एक घंटा समाप्त हो गया, परन्तु अब तक वह न आया।

अज़ीज़ा की व्याकुलता और अधीरता बराबर बढ़ती जाती थी। वह आज शिताबी से अधिक बातें न करती थी। केवल, कमाल को देख रही थी।

इतने ही में दूर से घोड़ा आता दिखायी दिया। अज़ीज़ा ने प्रसन्नता के आवेश में उछल कर कहा-"वह है !" शिताबी ने कहा-"हाँ, वही है !"

घोड़ा, पास आया, जिस पर युवा तुर्क मुस्तफ़ा कमाल बैठे थे। कमाल आते ही घोड़े से नीचे कूद पड़े। अज़ीज़ा दौड़ कर पास चली गयी। तृषित नेत्रों ने एक दूसरे को देखा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अज़ीज़ा ने विह्वल और गद्गद हो अपने दोनों हाथ आगे बढ़ा दिये, जैसे उन हाथों को कोई पकड़ले । कमाल ने बढ़कर सुन्दरी के दोनों हाथ पकड़ लिये और खींच कर अपने हृदय से लगा लिया।

कमाल के हृदय पर उसका मस्तक पड़ा था। कमाल ने उसकी ठोढ़ी पकड़ कर प्यार से कहा-"अज़ीज़ा ! प्यारी अज़ीज़ा !"

अज़ीज़ा केवल कमाल के नेत्रों की पुतलियों में देखती रही, पर मुँह से न कुछ कहा गया। नेत्रों के द्वारा प्रेम अपनी मूक भाषा में बोल रहा था।

कमाल ने फिर कहा-"अज़ीज़ा ! मेरी लैला ! मैं तुझे प्यार करता हूँ !"

इस बार अज़ीज़ा के नेत्रों से प्रेम-अश्रु बहने लगे। उसने अबकी गद्गद कंठ से कहा-"कमाल ! मेरे प्रियतम !" वह फिर चुप हो गयी और कमाल को स्थिर दृष्टि से देखने लगी।

अज़ीज़ा का सुकोमल मुख इस समय प्रेम और यौवन की लालसाओं से उद्धत नहीं, बल्कि सरल और अत्यन्त निरीह हो गया था। उसके नेत्र कटाक्ष कभी कुटिल नहीं थे। और इस समय तो वे विचित्र भोले मन मोहने वाले ऐसे हो गये थे, जैसे उसकी वह अनूठी सरलता ही काफी शरारत कर रही थी, जिसने कमाल की सुधबुध भुला दी, और उसका दिल खींच लिया।

कमाल ने, उस मनोहर, सरलता और लावण्यता की पुतली का मुख अपने मुख से लगा कर कहा-"अज़ीज़ा ! मेरी प्राण ! तू कैसी है ? तेरा प्रेम शराब है, या अमृत है, जो मुझे मस्त कर रहा है और मुझे जिला रहा है ? अज़ीजा !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राणप्यारी अज़ीज़ा! तू मेरी पवित्र आत्मा है--मैं तुझे प्यार करता हूँ।"

अज़ीज़ा कमाल के हृदय से लिपटी, जैसे लता वृक्ष से लिपटती है। वह जैसे नींद से जागी, उसने अपने भरे यौवन मदमाते नेत्रों से देखा, और अबकी पूरी शक्ति लगा कर उसने धीरे से कहा-"क्या तुम मुझे प्यार करते हो? प्यारे कमाल! सच बताओ! ईश्वर के लिये तुम मुझे बराबर यही कहते रहो कि तुम मुझे प्यार करते हो!"

कमाल ने मुग्ध होकर कहा-"हाँ प्रिये! मैं करोड़ों बार करोड़ों कंठ से कहता हूँ कि, मैं तुझको, और केवल तुझी को प्यार करता हूँ। तू मेरे हृदय की करुण कल्पना, कमनीय कामना, और सुघर साधना है। मैं तुझको सारे संसार में सब से अधिक प्रेम करता हूँ। तू ही मेरी आदर्श कामिनी है!"

अज़ीज़ा ने मचल कर मुँह भोला बनाकर कहा,-"प्रियतम! तुम मेरे कान में कहो कि तुम मुझे प्यार करते हो! नहीं-कहो, मेरे कान में कहो!"

कमाल ने प्रेम में पूर्णतया उन्मत्त होकर, उसके कान के पास मुँह ले जाकर कहा-"हाँ प्रिय प्राण! मैं तुझे हृदय की समस्त भावनाओं से प्यार करता हूँ। यह हृदय तेरा है-और तू मेरी है।"

यह कहते हुए कमाल ने प्यारी के होठों से अपने होंठ मिलाये। युग्म प्रेमियों ने एक दूसरे को अच्छी तरह देखा और चुम्बन किया। कमाल इस समय उद्भ्रान्त चित्त हो प्रिया को अपनी बाहों में लपेटे खड़े थे। अज़ीज़ा ज्ञानहत हो उनकी छाती से चिपकी थी।

कमाल ने उसे देख कर कहा-"प्रिये! क्या हमने प्रतिज्ञा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की ? हाँ, प्रेम की पवित्र प्रतिज्ञा की है ! हमने प्रेम के चुम्बन से प्रेम के ख़ज़ाने पर, प्रेम की मोहर लगादी है। प्रेमसागर में डूब कर हम कभी निकलना नहीं चाहते। क्यों अज़ीज़ा ! हमें एक दूसरे को प्यार करना अच्छा मालूम होता है ! हम प्यार करने के लिये पैदा हुए हैं !" यह कहते हुए कमाल ने प्रिया के असंख्य चुम्बन लिये।

कुछ देर बाद अज़ीज़ा ने कहा—"आज मैं तुम्हें अपने घर ले चलूँगी। प्यारे, चलो, मेरे घर चलकर आज मेरे मेहमान बनो।"

कमाल को जाने में कुछ आपत्ति न थी, परन्तु उनके सामने देश-सेवा का महान कार्य्य था। उस कर्तव्य का ध्यान करते हुए कमाल कुछ चिन्तित हुए। उन्होंने कहा—"नहीं, आज नहीं। क्योंकि आज मैं बहुत ही कठिनाई से समय बचाकर तुमसे मिलने आया हूँ। सैनिक पड़ाव आज अवश्य जाना है। आज मेरे ऊपर गुरुतर सैनिक ज़िम्मेदारियां हैं, जिनका मैं कोई यथोचित प्रबंध करके पड़ाव से नहीं चला था। परन्तु, कल मैं प्राण रहते अवश्य आऊंगा। इसमें तुम तनिक भी सन्देह न करो।"

अज़ीज़ा ने अपनी स्वाभाविक सरलता से आग्रहपूर्वक कहा—"नहीं आज ही चलो। कल भी आना, नित्य आना, परन्तु आज तो अवश्य चलो।"

कमाल ने प्रिया को फिर हृदय से लगाया और, अगाढ़ प्रेम की पूर्ण विनय से कहा—"प्यारी अज़ीज़ा ! आज नहीं ! देखो, देश पर शत्रुओं ने आक्रमण किया है। इस आक्रमण से देश की रक्षा करनी मेरा परम कर्तव्य है। देश ने मुझपर भरोसा करके जो थोड़ी सैनिक ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसमें तनिक भी त्रुटि न हो, यह ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है। इस (तुर्की) देश में पैदा हुआ, यहीं के अन्न जल ने मेरी परवरिश की, यहां की शिक्षा, सभ्यता और नीति मैंने सीखी अब, जब, मैं सब तरह देश की सेवा करने लायक हुआ, तो क्या मैं एक दिन, या एक मिनट की त्रुटि से भी अपना कर्तव्य अधूरा छोड़ कर देश को धोखे में डालूँ, और हानि पहुँचाऊं? इस लिये, अज़ीज़ा! आज तुम मुझे कल की प्रिय मिलन की आशा में बिदाई दो। कल मैं अपनी अज़ीज़ा के घर अवश्य आऊँगा।" यह कहते हुए कमाल ने उसके कपोल अपने कपोल से चिपका लिये। कमाल की वाणी ने प्रभाव डाला, और अज़ीज़ा के दिल पर असर हुआ, यद्यपि आँखों में आंसू आ गये थे।

उसने रुंधे हुए कंठ से कहा-"अच्छा, जाओ प्रियतम्! देश का तुमसे कल्याण हो। परन्तु, कल आना अवश्य, नहीं तो मैं प्राण दे दूंगी।"

कमाल ने उसे प्यार कर के और समझा के कहा-"मैं कल अवश्य आऊँगा। तुम निश्चिन्त रहना। कल मैं संध्या के पूर्व तुम्हारे घर पर पहुँच जाऊँगा।"

इसी समय उत्तर दिशा से कई सवार आते हुए दिखायी दिये। कमाल ने अज़ीज़ा से कहा-"देखो प्रिये, वह सैनिक गुप्तचरों का दल आ रहा है। इन्हीं के साथ मैं पड़ाव लौट जाऊंगा। अच्छा, अब तुम घर जाओ। दिल में रंजीदा न होना, बल्कि मेरे कर्तव्य की ओर ध्यान देते हुए तुम प्रसन्न हो, कि आज तुम्हारा कमाल देश-सेवा के निमित्त लोहे के चने चबाकर रहेगा, और यदि आवश्यकता होगी तो देश के लिये प्राणोत्सर्ग कर देगा, जो देश कि मेरा और तुम्हारा जन्म-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दाता है। परन्तु विश्वास रखना, कल मैं अवश्य आऊँगा। इसमें कदापि त्रुटि न होगी।"

अज़ीज़ा के कोमल हृदय ने यह कठोरता स्वीकार की। युग्म प्रेमी फिर एक दूसरे के गले मिले। तत्पश्चात अज़ीज़ा घर की ओर विदा हुई। उसके अतृप्त नेत्र मुड़ मुड़ कर कमाल को देखते थे। शिताबी का हाथ पकड़े हुए वह पीछे कमाल को देखती थी, और आगे कदम बढ़ाती थी।

इतने में तुर्क सवारों का दल आ गया। मुस्तफ़ा कमाल अपने घोड़े पर सवार हुए। आने वाले सवार सब कमाल के सैनिक गुप्तचर थे, जो आसपास के गुप्त समाचार लेकर लौट रहे थे। उन्होंने मुस्तफा कमाल को सलाम किया। कमाल ने उनसे कुछ बातें कीं, तत्पश्चात पड़ाव की ओर सब रवाना हो गये।

४
प्र० सेनापति की आज्ञा

"We live in deeds, not years.....
.....
.....He most lives
Who thinks most, feels the noblest, acts
.....the best."

(P. J. Bailey.)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात्रि समय मुस्तफ़ा कमाल पड़ाव में पहुँचे। आवश्यक सैनिक कार्य्यों और चिट्ठी पत्रों को देखने के बाद वह युद्ध के नकशे देखने लगे। उन्हें एक चिट्ठी से यह समाचार मालूम हुआ कि, तुर्की के प्रधान सेनापति अनवर पाशा ने जर्मनी से कई दक्ष सैनिक कर्मचारी बुलाये हैं, जो तुर्क सेना का पुनः संगठन करेंगे। कमाल को यह बात अच्छी न मालूम हुई। कमाल ने मन में कहा कि, 'देखें' जर्मनी के रथ के पीछे तुर्की कितनी दूर तक घसीटा जाता है!"

युद्ध के नकशे देखते देखते कमाल का ध्यान सहसा बट गया। उनके मन में कुछ दर्द मिश्रित चिन्ता होने लगी और उनका एकाग्र चित्त युद्ध के कोलाहल से सहसा अलग हो, उसी प्रिय कल्पना-अज़ीज़ा-की ओर खिंच गया। संध्या समय अज़ीज़ा से मिलन, फिर उसका उन्हें घर चलने के लिये निमंत्रण देना, और कमाल का इनकार, अज़ीज़ा का प्रेम और करुण रोदन इत्यादि बारम्बार याद आता है। उनके हृदय में अज़ीज़ा की प्रेममयी मूर्ति धंसी हुई है, और वे उद्विग्न हो उसका चिन्तन करने लगे।

इसी समय दो तुर्क सैनिकों ने कमरे में प्रवेश किया। कमाल का ध्यान फिर भंग हो गया। उन्होंने देखा कि उनके सामने प्रधान सेनापति अनवर पाशा के दो ख़ास गुप्तचर खड़े हैं। उन्होंने सलाम किया।

कमाल को ये दोनों बड़े मनहूस मालूम हुए। कमाल ने उनसे पूछा—"क्या समाचार लाये हो?"

एक गुप्तचरने कहा,—"प्र०सेनापतिने आपके नाम यह आज्ञा-पत्र भेजा है।" यह कहते हुए आज्ञापत्र कमाल के हाथ में दे दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमाल और प्रधान सेनापति (अनवर) में नहीं बनती थी। क्योंकि, कमाल को अनवर पाशा की युद्ध-नीति पसन्द न थी। अनवर पाशा की कितनी ही बातों का मुस्तफ़ा कमाल ने खुल कर विरोध और प्रतिवाद किया था। इसी लिये अनवर कभी कमाल को राजधानी और शासन के निकट नहीं रखता था। प्रायः कमाल को तुर्की के दूर प्रदेशों में रहना पड़ता था। अनवर पाशा की मित्रता जर्मनी से खूब गहरी और पक्की थी। जर्मनी के सम्राट कैसर विलियम अनवर का स्वागत करने के लिये सदा तैयार रहते थे। अनवर के कारण जर्मनों का प्रभाव तुर्की में बहुत बढ़ गया था।

कमाल ने प्रधान सेनापति (अनवर) का आज्ञापत्र पढ़ा। उन्हें आज्ञा बिल्कुल अरुचिकर मालूम हुई। पत्र में लिखा था—" सेनानायक मुस्तफ़ा कमाल को आज्ञा दी जाती है कि वह तुर्क युवराज के साथ बर्लिन जाने के लिये तैयार रहे। इस सप्ताह के अन्दर ही युवराज जायंगे। यह यात्रा तुर्की के हित के लिये सैनिक दृष्टि से कितनी आवश्यक है, यह समझना ही तुम्हारा कर्तव्य है। " यह आज्ञापत्र पढ़कर कमाल एकबार गम्भीर हो गये। सिगार पीते हुए कमरे में टहलने लगे। उन्होंने मन में कहा—"इस भयानक युद्धकाल में, युवराज को कार्य्यक्षेत्र से हटाकर बर्लिन भेजने में क्या अभिप्राय और रहस्य है! मैं इससे सहमत नहीं हूँ।...परन्तु जाना ही होगा! "

कमाल का ध्यान फिर उसी प्रेम-प्रतिमा की ओर गया। बर्लिन की बात हटाकर अर्ज़ीज़ा की बात सोचने लगे। इतना विशाल सैनिक हृदय जो फ़ौलाद से भी बढ़कर सुदृढ़ और कठोर है, प्रेम की उष्णता से मोम की तरह पिघल गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने झुँझलाकर कहा—"मैं उस प्रिया से कल अवश्य मिलूँगा। मैंने उस रोती हुई बालिका (अज़ीज़ा) से प्रतिज्ञा की है। प्राण जाय तो जाय, पर मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ सकता।"

कमाल उस मनोरम प्रिया की कल्पना करते हुए एक आराम कुर्सी पर लेट गये। अर्धरात्रि व्यतीत हो चुकी थी। केम्प के बाहर चांदनी खिली थी। मैदान में सन्नाटा छाया था। परिश्रम से थके हुए शस्त्रधारी तुर्कों के दल गश्त लगा कर चहुंओर पहरा दे रहे थे। कमाल को नींद आने लगी। उनकी आंखें बन्द हो गयीं। परन्तु, उनके हृदय और आत्मा में, कल्पना के साम्राज्य में, एक चंचला प्रिया नाचने लगी। वह स्वप्न में अज़ीज़ा के अनमोल अधर चूम रहे थे। उछाह-पूर्ण मधुर मिलन का अपूर्व अनुराग अनुभव करने लगे। जैसे एक आनन्द कानन में कमाल और अज़ीज़ा प्रेमालिंगन में एक दूसरे को लपेटे घूम रहे हैं। कुछ काल के उपरान्त कमाल ने सफ़ेद फूलों और मोतियों से अज़ीज़ा को सुन्दर शृङ्गार करके सजाया। अज़ीज़ा को आंख भर देखने भी न पाये कि सहसा, आकाश फटा, और अज़ीज़ा के चारों ओर चार चांद चमकने लगे। आकाश से तारों का एक झूला पृथ्वी पर लटकने लगा, जिसपर बहुत सी परियाँ बैठी थीं। उनके बीच में मणिमुक्ता जटित एक चांदी सोने का खाली सिंहासन था। इतनेही में अज़ीज़ा न जाने पवन के झोंके से किस तरह उड़कर, कमाल की बाहों से छुट कर, उस सिंहासन पर जा बैठी, और उज्वल परियों के मध्य में एक प्रदीप्त उज्वल नक्षत्र की नांई चमकने लगी। झूले ने एक लम्बी पेंग ली, और अज़ीज़ा पृथ्वी से आकाश की ओर जाने लगी। कमाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी घबराकर सितारों के झूले की ओर दौड़े, पर उसे न पाया। कमाल के विना अज़ीज़ा शोकातुर मुख बनाये नीचे पृथ्वी की ओर देख रही थी; और कमाल नीचे खड़े आकाश की ओर ताकते के ताकते रह गये। कमाल विक्षिप्त हो पुकारने लगे—"अज़ीज़ा! अज़ीज़ा!" पर, अज़ीज़ा अनन्त आकाश की शून्यता में जाकर अन्तर्ध्यान हो गयी। कमाल को अपनी पुकारों का उत्तर न मिला।

इस समय व्याकुलता के कारण कमाल का कंठ मन्द हो गया। उनका स्वर समाप्त हो गया। घबराते ही घबराते, और आकाश की तरफ़ देखते ही देखते कमाल की आँखें सहसा खुल गयीं।

सबेरा हो गया था। सेना में बिगुल बज रहा था। पल्टन क़वायद कर रही थी। कमाल तुरन्त उठ खड़े हुए। पानी से मुँह धोया। वह केम्प के बाहर निकले और पल्टनों का निरीक्षण करते चले गये।

सारा दिन आवश्यक सैनिक कार्य्यों और परामर्श में व्यतीत किया। परन्तु, कमाल एक क्षण के लिये भी अज़ीज़ा को न भूले थे। दिन के तीन बजे उन्होंने अपने मातहत सेना-नायक अहमद बे को केम्प का जिम्मेदार अधिकारी बनाया, और उससे कहा कि,—"मैं एक अति आवश्यक कार्य्य से जा रहा हूँ। सम्भव है, आज रात्रि समय में न आ सकूँ तो तुम कुछ चिन्ता न करना। मैं कल सबेरे जरूर आजाऊंगा। तुम केम्प से होशियार रहना।"

संध्या के पांच बजे मुस्तफ़ा कमाल सादे वस्त्र पहन कर अज़ीज़ा के घर रवाना हुए। घोड़ा तेजी से जारहा था। हृदय की प्रसन्नता उमड़ी पड़ती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५

उत्सुकता के बाद विदाई

In the evening twilight,
When the hour was late.
Deep in conversation,
Standing at your gate :
Hou I loved to linger,
In the fading light,
Heedless of the Shadows,
Heralding the night.
Telling to each other.
All our thoughts and fears,
Voicing hopes and fancies.
For the coming years :
Standing their together
Speaking heart to heart
Till the fleeting minutes.
Told us we must depart.

कमाल सोचते जा रहे थे कि,—अज़ीज़ा कितनी उत्सुक होगी। वह मेरे लिये बाट जोहती होगी। मुझे देखते ही खिल जायगी। परन्तु, आज का मार्ग पृथ्वी की परिक्रमा से भी अधिक लम्बा हो गया था। पर, सच तो यह है कि आज मिनटों का मार्ग पलों में तय हो रहा था। घोड़े से तेज कमाल का मन दौड़ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संध्या हो रही थी। कमाल उस हरित मैदान के निकट पहुँचे। कमाल ने दूर से देखा कि,—अज़ीज़ा सखी सहित खड़ी है।

कमाल आकर घोड़े से तुरन्त कूद पड़े। अज़ीज़ा फुर्ती से उनकी बाहों में चली गयी; उसने कहा—"मैं बड़ी देर से खड़ी तुम्हारी बाट जोह रही थी और दिल में डर रही थी, कि शायद तुम न आओ।"

कमाल ने उसके कपोलों को दोनो हाथों से थपथपाते हुए कहा,—"नहीं प्रिये! क्यों न आता! आज सारा दिन तुम मेरे हृदय में समायी थी।" यह कहते हुए कमाल ने उसे हृदय से दबा लिया।

अज़ीज़ा उत्सुकता, प्रसन्नता, और उत्साह से भरी थी। कमाल का हाथ पकड़े उसने घर की ओर पयान किया। अज़ीज़ा ने कमाल की चर्चा अपने पिता से करदी थी और घर में स्वागत के लिये तैयारी की थी।

अज़ीज़ा के पिता सर्दार सफ़दरबे एक धनी मानी जमीनदार हैं। तुर्की के सुलतान ने किसी विशेष कार्य्य से प्रसन्न हो यह (ग़ेज़ाल) गांव उन्हें पुरस्कार स्वरूप दे दिया था। सर्दार सफ़दरबे का घर कोई मामूली घर न था, एक आलीशान महल था, जिसके अन्दर कई छोटी छोटी सुन्दर कोठियाँ और बाग, बगीचे, तालाब इत्यादि थे। अज़ीज़ा की माँ नहीं थी। यही एक लाडली पुत्री थी, जिसका स्नेह पिता को सान्त्वना और आनन्द देता था। पुत्री के मुख से मुस्तफ़ा कमाल की बातें सुन कर सर्दार को आश्चर्य हुआ कि, यह कौन सेनापति है? क्या यह वही मुस्तफ़ा कमाल है जो दिनोदिन तुर्की में प्रसिद्धि पारहा है? सर्दार सफ़दर पलङ्ग पर लेटे यह समाचार पत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में पढ़ रहे थे कि तुर्की के मुहम्मद पांचवे युवराज की हैसियत से जर्मनी की राजधानी बर्लिन जा रहे हैं। उनके साथ जो तुर्क सेनापति और कर्मचारी जायंगे, उनमें एक मुस्तफ़ा कमाल पाशा का भी नाम था।

इतने ही में अज़ीज़ा ने कमाल के साथ महल में प्रवेश किया, उसने दौड़ कर पिता से कहा—"देखो बाबा! यही मुस्तफ़ा कमाल हैं, जो उस दिन घोड़े से गिर गये थे, जिसकी कहानी मैंने आपको सुनायी थी।"

मुस्तफ़ा कमाल ने आगे बढ़कर सर्दार को सलाम किया। सर्दार ने पलङ्ग से उठकर कमाल से प्रेम-पूर्वक हाथ मिलाया। उसने देखा कि मुस्तफ़ा कमाल एक अत्यन्त ही गम्भीर और विवेकवान पुरुष हैं, जिनके तेजपूर्ण मुख से वीरता और असीम साहस के अतिरिक्त और कोई भाव नहीं झलकता। उसमें सर्वत्र मानसिक और शारीरिक बल दिखाता है।

कमाल एक कुर्सी पर बैठ गये। अज़ीज़ा पिता के कंधे से लगी खड़ी कमाल को देख रही थी। सर्दार सफ़दर ज़रा बातूनी आदमी थे, बातें करने का उन्हें बड़ा शौक़ था, कोई मिल जाय तो उससे घन्टों बातें करते रहें।

सर्दार ने आरम्भ में वर्तमान महायुद्ध की चर्चा छेड़ी। उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर कमाल अत्यन्त संक्षेप में देते थे। कुछ देर बाद सर्दार ने पूछा—"क्या मुहम्मद पाँचवे बर्लिन जा रहे हैं? यह उन्हें एकाएक क्या सूझी?"

कमाल इस समाचार पर कुछ भी बातचीत करनी न चाहते थे। उन्होंने टालने के लिये अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। सर्दार ने समाचारपत्र दिखाते हुए कहा—"अजी, देखो, अख़बार में लिखा है। और उनके साथ मुस्तफ़ा कमाल पाशा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जांयगे। यह कौन कमाल हैं, क्या आप ही तो नहीं है ?" सर्दार आंखें फाड़कर कमाल को देखने लगा।

परन्तु कमाल ने उन्हें यह कह कर निराश कर दिया कि, "नहीं, मैं नहीं हूँ। मैं यह भी नहीं जानता कि यह कौन कमाल हैं।"

सर्दार ने फिर विशेष बातें नहीं की। अज़ीज़ा कमाल के साथ सामने बाग में टहलने लगी। एक तालाब के निकट पहुँच कर दोनों पत्थर की बेंच पर बैठ गये। और नाना प्रकार की हृदय प्रफुल्लित करने वाली बातें करने लगे। जल में लाल, हरी मछलियां तैर रही थीं, इधर युग्म प्रेमियों के नेत्र एक दूसरे को देखते हुए आनन्द से नाच रहे थे। प्रिया के सरल कटाक्षों के साथ उसकी मृदु बोली भी, कमाल को बिन दामों का दास बना रही थी।

रात्रि समय कमाल को बड़ा सुन्दर प्रीति-भोज दिया गया। अज़ीज़ा के प्रबंध से भोज में और कोई शरीक न हुआ था। एक बड़े कमरे में कई लैम्पों का प्रकाश था, जिसमें कमाल बैठे खा रहे थे, दो दासियां और शिताबी भोजन परोस रही थीं। अज़ीज़ा पास ही एक कुर्सी पर बैठी कमाल को निरख रही थी।

कमाल ने अज़ीज़ा से कहा-"तुम भी खाओ! तुम कब भोजन करोगी ?"

अज़ीज़ा ने मृदु स्वर में कहा-"एक बात कहूँ! मेरा जी चाहता है कि-तुम्हारे ही साथ खाऊँ।"

कमाल ने तुरन्त कहा-"हाँ, हाँ, आओ! मेरी भी यही इच्छा होती थी।"

कमाल के टेबल के पास ही बगल में अज़ीज़ा एक कुर्सी

Sri Pratap Singh Library
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर बैठ गयी, और प्रियतम की थाली में शरीक हो गयी। कितने ही लुकमें अज़ीज़ा ने अपने हाथ से कमाल को खिलाये। दोनों ने एक दूसरे के स्वाथ्य का प्याला पीया। दोनों मग्न हुए।

कमाल ने हँसकर कहा-"प्रिये ! तुम सुन्दर गुल हो, मैं तुम्हारा दिलजला बुलबुल हूँ। तुम्हारे प्रेम के प्रकाश का मैं एक पतङ्गा हूँ। देखो, तुम्हें पाने के लिये कितना लालायित हूँ-जैसे कोई निर्धन पारस प्राप्ति के लिए तरसता है।"

अज़ीज़ा ने भोलेपन से कहा-"तुम्हारे मुख से ये शब्द कैसे अच्छे प्यारे मालूम होते हैं ! परन्तु मैं भूलती हूँ। ये शब्द मुझे कहने चाहिये, तुमने मेरे मुख से प्यारे शब्द छीन लिये ?" यह कहती हुई अज़ीज़ा कमाल के हृदय से लग गयी।

भोजन के उपरान्त अज़ीज़ा कमाल को अपने सुसज्जित कमरे में ले गयी। प्रेम की अनेक बातें और घातें होने लगीं। दोनों एक निर्विघ्न आनन्द में तल्लीन थे। अर्ध रात्रि व्यतीत हो चुकी थी। चांद आकाश में खिला था और सारा संसार चन्द्र-रजनी में स्नान कर रहा था। अन्दर, कमरे में दो प्रेमी संसार को विस्मृत कर प्रेम-सागर में डूबे हुए थे।

पहले कमाल ने शान्ति भंग की, और कहा-"अज़ीज़ा ! मेरी प्राण ? तू अपने इस क्षुद्र प्रेमी को कभी भूलेगी तो नहीं ? मैं कुछ दिनों के लिये यहां से बाहर जाऊंगा, परन्तु तेरी चिन्ता मुझे सदा सतायेगी....."

अज़ीज़ा ने चकित भाव से कमाल का मुख देखा, और कहा-"कहां जाओगे ? मेरे प्राण के आधार ! तुम कहां जाओगे ? मैं तुम्हारे बिना तड़प तड़प के मर जाऊँगी ! नहीं, न जाओ। मैं तुम्हारी खुशामद करती हूँ, न जाओ।" यह कहती हुई अज़ीज़ा कमाल से और भी सटकर बैठ गयी, जैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह कमाल को जाने न देगी। अज़ीज़ा के नेत्र आँसुओं से भर आये थे।

कमाल ने प्रेम पूर्वक समझा कर कहा–"मेरा जाना आवश्यक है, परन्तु तुम क्यों इतना दुःखित होती हो? मैं बहुत ही शीघ्र फिर तुमसे आ मिलूँगा। तुम सदा एक पवित्र धर्म, और ईश्वरीय प्रसाद की तरह मुझे याद रहोगी। तुम एक पुनीत साधना की तरह मेरे हृदय में समायी हो। तुम्हें भूल कर मैं जीवित नहीं रह सकता। तुम्हारे प्रेम के दिव्य प्रकाश ने मेरे हृदय को आलोकित कर दिया है। उस आलोक में तुम्हीं को देखता हूँ। अज़ीजा ! प्यारी ! बोलो, मैं अधिक दिवस तुम्हारा वियोग न सहन कर सकूँगा। बहुत ही शीघ्र लौट कर तुम्हें देखूँगा।"

कमाल ने अपनी एक अंगूठी उंगली से उतार कर उसे दी, जिस पर कमाल का नाम खुदा था। अज़ीज़ा ने अंगूठी लेली। फिर दुःखित स्वर में पूछा–"बताओ, कितने दिनों में लौटोगे?"

कमाल ने कहा–"एक मास के भीतर ही आ जाऊँगा।"

अज़ीज़ा ने कहा–"हाय ! एक मास तो एक शताब्दि प्रतीत होगा। नहीं, प्राणप्यारे ! इतने दिनों के लिए न जाओ।"

कमाल ने कहा–"मैं यथाशक्ति शीघ्र ही आने का प्रयत्न करूँगा। परन्तु, तुम्हें मेरे प्राण की शपथ है, न घबराना। न कुछ चिन्ता करना। सदा प्रसन्न रहना। सुखी रहना।"

इसके बाद युग्म प्रेमी पारस्परिक शपथ और पवित्र प्रतिज्ञाओं से एक दूसरे को विश्वास दिलाते रहे। कमाल बिदाई के लिये तैयार हुए।

रात्रि का पिछला पहर था। रोती हुई अज़ीज़ा को कमाल सान्त्वना देकर समझा रहे थे। अज़ीज़ा ने गद्गद कंठ से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा,-"हे मेरे प्रिय पुरुष ! मेरे प्रियतम कमाल ! जाओ ! सुखी रहो, विजय लाभ करो। समय की लम्बी मियाद घटा कर शीघ्र मिलना। मैं तबतक समस्त सुख त्याग कर तुम्हारी याद करती रहूँगी।"

कमाल ने प्रेम से विह्वल हो कर कहा,-"मैं भी तबतक एक मात्र तुम्हारा ध्यान करते हुए सुख की नींद न सोऊँगा। अच्छा, प्रिये ! अब जाने दो। इश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

इसके बाद कमाल के साथ अज़ीज़ा नीचे उतरी। कमाल उसे प्रेम और प्रतिज्ञा के सान्तवनापूर्ण वाक्यों से ढारस दे रहे थे। परन्तु, प्रियतम के वियोग से अज़ीज़ा का हृदय टूक टूक हो रहा था।

कमाल ज्योंही घोड़े पर सवार हुए और घोड़ा बढ़ाया, अज़ीज़ा विक्षिप्त विरहिनी की तरह चिल्ला उठी-"ठहरो ! ठहरो ! हे मेरे प्यारे पुरुष कमाल ! एक बात सुनते जाओ !"

कमाल ने घोड़ा रोक लिया। पीछे मुड़कर देखा, चाँदनी रात में अज़ीज़ा छाया की तरह खड़ी बुला रही है। कमाल फिर प्रिया के पास लौट आये। अज़ीज़ा दौड़ कर आयी, और कमाल का कंधा पकड़ कर कहने लगी,—"मैंने कुछ कहने के लिये तुम्हें पुकारा था, परन्तु क्या कहना चाहती हूँ, सो भूल गयी।"

कमाल ने कहा-"अच्छा, तुम जबतक वह बात याद न कर लो, मैं यहीं खड़ा रहता हूँ।" कमाल अज़ीज़ा को पकड़े खड़े रहे।

अज़ीज़ा ने आतुरता से कहा-"हाँ, याद आयी। मैं तुम्हारा अधिक समय नष्ट न करूँगी। जहाँ जाना, वहाँ से अपना एक कुशलपत्र भेजना। इतनी मेरी विनती मानो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमाल ने अटल हृदय से कहा–"हाँ, हाँ, प्राणप्यारी ! पत्र अवश्य भेजूँगा। तुम निश्चिन्त रहो।"

कमाल ने प्रेयसी को फिर आलिङ्गन करके चुम्बन किया। अज़ीज़ा रोती ही रही। उसने अस्फुट स्वरों में कहा,–"जाओ प्यारे ! मुझ अभागिनी के लिये अपने कर्तव्य पालन में हर्ज न करो। प्राणप्रिये ! जाओ। हे प्राण की मंगलमय कामना ! ईश्वर तुम्हारा मंगल करे !"

प्रेम और आशीष के शब्द सुनते हुए कमाल ने अपना घोड़ा बढ़ाया। उनका हृदय वियोग के असहनीय खेदों और आघातों से व्यथित हो रहा था। अनुताप के सहस्रों तीर उनका कलेजा बेध रहे थे।

रात प्रायः दो घन्टे और बाकी थी। पश्चिम दिशा में चान्द डूब रहा था। अज़ीज़ा वहीं ज्ञानहत हो कर खड़ी उस ओर देखती रही।

कुछ काल के पश्चात वह घर लौटी। रात्रि बहुत व्यतीत हो गयी थी, तो भी उसके नेत्रों में नींद न थी। वह अपने कमरे की खिड़की में से बैठी दूर नदी के जल की ओर देख रही थी। दजला नदी के स्वच्छ जल पर चन्द्रकिरणों की अनुपम शोभा फैली। जिसे देख कर जल की लहरियों की तरह, अज़ीज़ा के भी हृदय में प्रेम की उत्तान तरङ्गों का असीम आन्दोलन होने लगा। प्रेम की सरसता का वेग नेत्रों में भी उमड़ आया। अज़ीज़ा बहुत देर तक उसी तरह बैठी कमाल की याद में आँसू बहाती रही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

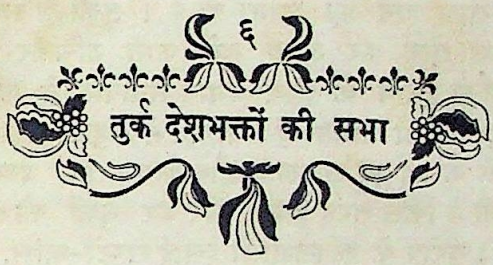

६

तुर्क देशभक्तों की सभा

रात्रि का पिछला पहर कमाल के सदर मुकाम में भयप्रद सन्नाटा छाया था। तुर्क सैनिक खेमों के बाहर गश्त लगा रहे थे। सैनिक सदर मुकाम के एक छोटे खेमें में कुछ तुर्क जंगी कर्मचारी बैठे गोष्ठी कर रहे थे। वे लोग इसी प्रश्न पर विचार कर रहे थे, कि मुस्तफ़ा कमाल को बर्लिन जाना चाहिये, या नहीं? प्रायः सभी कर्मचारी इस प्रस्ताव के विरुद्ध थे। वे सब सच्चे देशभक्त तुर्क थे, जो प्रधान सेनापति (अनवर) और उसके दल को देश के लिये हानिकारक समझते थे। और इसलिये वे सारे तुर्क शासक दल से घृणा करते थे। ऐसे विकट मतभेदों की परिस्थिति में उन देशभक्तों को एक मात्र मुस्तफ़ा कमाल का सहारा और बल था, जो नये उन्नतिशील आत्मा की तरह उनमें देश-प्रेम और स्वतंत्रता की अग्नि सदा प्रज्वलित रखता था।

तुर्क देशभक्तों की इस समय आवश्यक परामर्श-सभा हो रही थी, जब कि मुस्तफ़ा कमाल अज़ीज़ा से मिलकर लौटे। मुस्तफ़ा कमाल ने खेमें में प्रवेश किया। उन्होंने उन्हें सम्बोधन करते हुए कहा—"मेरे वीर सहयोगियो! तुमने युवराज मुहम्मद पांचवे की बर्लिन-यात्रा की सूचना सुनी है। तुम्हें यह भी मालूम है, कि प्रधान सेनापति ने मुझे भी युव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राज के साथ जाने की आज्ञा दी है। तुर्की के इन दुर्दिनों में स्वदेश छोड़ कर जाना मुझे कभी रुचिकर नहीं है। मुझे यहाँ से हटाने के लिए प्रधान सेनापति ने जो षड्यंत्र किया है, उसे मैं जानता हूँ। परन्तु, मैं शत्रुओं और विश्वा-सघातकों के उद्देश्य सफल न होने दूँगा। हम देख रहे हैं, कि जर्मनी ने किस तरह झेमड़े चीर कर तुर्की को हड़प कर लिया है। यूरोप के शक्तिशाली ईसाई राष्ट्रों-फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि से इस समय तुर्की के लिये शत्रुता मोल लेनी नितान्त भूल और अदूरदर्शिता है। यह महायुद्ध जर्मनों की ओर से पूरी अदूरदर्शिता के साथ आरम्भ किया गया है, जर्मनों ने आरम्भ ही से एक के बाद एक भयानक भूलें की हैं, जिनका परिणाम जर्मनी के साथ साथ तुर्की को भी खूब भोगना पड़ेगा। मैं कहता हूँ और तुम मेरे कथन की सत्यता कुछ दिनों में शीघ्र ही देख लोगे, जब कि यह देश महायुद्ध में पराजित होगा-तुर्कसाम्राज्य मिट जायगा और अनवर के साथ वर्तमान तुर्क शासकों की सत्ता सदाके लिये नष्ट हो जायगी।"

यहां पर कमाल ने अत्यन्त गम्भीर ध्वनि में कहा-"हे देशभक्त युवा तुर्को! देश पर विपत्ति के घनघोर बादल घिर आये हैं। मैं एक एक क्षण में तुर्की का पतन देख रहा हूँ। इस समय यदि तुर्क शासकवर्ग भूलें कर रहा है, तो हम उसके समस्त कार्य्यों को बड़ी सावधानी से देखें। मैं कल या परसों बर्लिन चला जाऊँगा, परन्तु तुम को यह याद दिला जाता हूँ, कि अपने कर्तव्य से सदा सावधान रहना। याद रखो, देश हमारा है, अन्तरङ्ग या बहिरङ्ग विपत्तियों से बचना केवल हमारा कर्तव्यही नहीं, बल्कि हमारा अधिकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। संसार की कोई शक्ति हमें इस एक मात्र पवित्र अधिकार से बंचित नहीं कर सकती। देश-रक्षा! देश-रक्षा! आर म्भ से अन्त तक देश-रक्षा ही करना हमारे जीवन का एक मात्र पवित्र कर्तव्य और ध्येय है।"

अन्तिम वाक्य उच्च ध्वनि में कहते हुए मुस्तफ़ा कमाल कुर्सी पर बैठ गये। समस्त उपस्थित तुर्क सैनिकों के हृदय भीषण साहस और उत्साह से भर गये। इन मुट्ठी भर कट्टर तुर्क देशभक्तों ने सच्चे सैनिकों की तरह समस्त सुख त्यागकर तुर्की की हर तरह रक्षा करने का दृढ़ संकल्प कर लिया है।

कमाल का प्रभावशाली भाषण सुनकर उन्हें बड़ा जोश आया, उन्होंने प्रधान सेनापति के प्रति निन्दात्मक शब्द कहे, और कमाल की बर्लिन यात्रा का विरोध किया। उन्होंने यहाँ तक कहा कि, कमाल बर्लिन जाने से इनकार करदें और यदि आवश्यकता पड़े तो अनवर पाशा के विरुद्ध खुलकर विद्रोह घोषणा करदी जाय।

कमाल ने कहा,—"परन्तु, नहीं। हम बर्लिन यात्राका, या अभी किसी तरह का विरोध प्रकट न करें। मैं बर्लिन जाऊँगा, यह मेरे लिये अच्छा अवसर है कि—मैं जर्मनी में जाकर जर्मनों के कूटनीतिक हथकंडे और षड़यंत्र देखूँ। तुम लोग मेरे पीछे सावधान रहना। कल यहाँ मेरी जगह अनवर के पक्षका एक दूसरा सेना नायक नियुक्त होगा। तुम उसकी आज्ञा मानना, परन्तु अपना अन्तरिक संगठन भंग न करना। याद रखना, तुम में से एक एक मनुष्य पर देश रक्षा का वैसाही भार है, जैसे तुम अलग अलग स्वयं अपने जीवन की रक्षा कर रहे हो।"

कमाल बहुत देर तक अपने सहयोगियों से वार्तालाप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करते रहे, और उन्हें हर तरह की मुल्की तथा सैनिक बातें समझाते रहे। वे कमाल के शब्द इस तरह ध्यानावस्थित हो सुनते थे, जैसे कोई राजा या ऋषि के वाक्य, आदरपूर्वक सुनता है और उन्हें हृदयङ्गम करता है।

कमाल एक महान योद्धा हैं, और रणविद्या के पूर्ण आचार्य हैं। परन्तु, साथही वे अन्य विद्याओं के दर्शन शास्त्र, गणित, न्याय और विज्ञान के भी पूरे ज्ञाता हैं। इसलिये कमाल की बातें केवल एक योद्धा की बातें नहीं होतीं, बल्कि उनकी समस्त बातें एक अनुभव शील ज्ञानी पंडित की तरह शुद्ध हृदय से निकलती थीं, जिनका प्रभाव सुनने वालों पर इतना पूर्ण पड़ता था, कि वे उन्हें मानते थे और तदनुसार कार्य्य करने के लिये तत्पर हो जाते थे।

तुर्कों से वार्तालाप करने के पश्चात कमाल ने बर्लिन यात्रा की तैयारी की। उस समय उनके हृदय में केवल दो भाव थे। एक तो देश सेवा का और दूसरा था अज़ीज़ा का प्रेम। पहला भाव जितना ही महान और दृढ़ था, दूसरा भाव उतनाही सरल और कोमल था। दोनों ही भाव बीर शिरोमणि कमाल को सत्य सन्तोष का अपार आनन्द देते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७
बर्लिन यात्रा

तुर्की के युवराज मुहम्मद पाँचवें जर्मनी की राजधानी बर्लिन रवाना हुए। उनके साथ मुस्तफ़ा कमाल पाशा और कई तुर्क सैनिक रक्षक की हैसियत से गये थे। जर्मनी के जगत् विख्यात सम्राट क़ैसर विलियम के राजमन्दिर में तुर्क युवराज ठहराये गये। स्वागत में कोई त्रुटि न की गई थी।

उस दिन तुर्क युवराज के आगमन के उपलक्ष में सम्राट क़ैसर ने महान भोज दिया। जर्मनी के बड़े बड़े मंत्री और राजनीतिज्ञ भोज में उपस्थित हुए थे। कैसर और साम्राज्ञी क़ैसराइन के बीच में एक मूल्यवान कुर्सी पर तुर्क युवराज बैठे थे। कमाल पाशा और अन्य तुर्क सेनापति युवराज के दांये बांये बैठे। सामने एक बड़े भारी टेबुल पर भोजन चुना गया।

क़ैसर बीच बीच में युवराज से खूब बातें करते थे और मग्न होकर हँसते थे। प्रायः घन्टे डेढ़ घंटे तक धीरे धीरे भोजन करते रहे। इस वार्तालाप में ही क़ैसर ने तुर्की के सम्बन्ध में युवराज से बहुत बातें पूछ लीं। प्रधान तुर्क सेनापति अनवर पाशा के सामरिक कौशल की खूब प्रशंसा की। कमाल कभी कभी कनखियों से क़ैसर को देख लेते थे। कमाल को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोड़ कर और जितने तुर्क सेनापति युवराज के साथ थे, वे सब अनवर के पक्ष के थे।

भोजन के उपरान्त, युवराज को जर्मन अप्सराओं का मुग्धकारी नाच दिखाया गया। क़ैसर खुश हो कर बीच बीच में खूब जोर से हंसते थे और युवराज को प्रसन्न करते थे। थोड़ी देर के बाद नाच बन्द हुआ, और क़ैसर ने नाचनेवाली सुन्दरियों को निकट बुला कर उनके हाथ चूमे। क़ैसर ने एक अपूर्व सुन्दरी का हाथ चूमते हुए तुर्क युवराज से कहा, "देखो, यह सुन्दरी कितनी रूपवती है! मैं इसे बहुत प्यार करता हूँ। एक अशुभ संयोग के कारण मेरा विवाह इससे न हो सका, परन्तु बिना विवाह किये ही यह सुन्दरी मेरे हृदय की रानी है।"

कुछ देर तक इसी प्रकार चुहुल होती रही। इसके बाद सब नाचने वालियाँ बिदा करदी गयीं। क़ैसर ने युवराज से कहा:-"कहो, तुम्हें कुछ आनन्द मिला। मैं देखता हूँ, तुम सन्तुष्ट और प्रसन्न हुए हो।"

युवराज ने कहा,-हाँ, आपके साथ तो सदा आनन्द मिलता है।"

क़ैसर ने कमाल की तरफ़ देखकर कहा,-"यह युवा तुर्क नाच गाना शायद पसन्द नहीं करता। मैं जानता हूँ, यह युद्ध प्रिय है।"

कमाल ने सिर झुका कर विनम्रता के ऐसे सम्मान पूर्ण तेवर दिखाये, मानो, आप जो कह रहे हैं, ठीक कह रहे हैं। पर मुँह से कुछ न बोले।

क़ैसर ने फिर तुरन्त कमाल के नेत्रों से नेत्र मिला कर युद्ध की बातें छेड़ दीं। क़ैसरने कहा,-"तुर्क सेनाएं इस समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रणक्षेत्र में जर्मनों के समान वीरता दिखा रही हैं। मैं इससे बहुत प्रसन्न हूँ। इस युद्ध में तुर्की के सहयोग का मुझे गर्व है। परन्तु, मैं चाहता हूँ कि तुर्क सेनाएं और भी साहस दिखायें।"

मुस्तफ़ा कमाल ने अपना मस्तक उन्नत करके कहा,—"श्रीमान! इस युद्ध में तुर्की जितना वीर दीखता है, उससे वह कई गुना अधिक वीर है। हमारी सेनाएं जमकर अंग्रेजों से युद्ध कर रही हैं, और उन्हों ने किसी तरफ अंग्रेजी सेनाओं को विश्राम नहीं लेने दिया है। और जब समय आयेगा, तुर्की अपनी तलवार की असली चमक दिखा कर संसार को चकित कर देगा।"

इस पर कैसर का रोबीला चेहरा तन गया। उसने क्षण भर के लिये गुरेर कर मुस्तफ़ा कमाल की ओर देखा। फिर बड़ी मीठी हंसी से हंस कर कहा—"ठीक है। यही मैं चाहता हूँ। मुझे तुर्की का बड़ा भरोसा है। एशिया के फाटक पर तुर्की, मेरा ऐसा सच्चा सन्तरी है, जिसके बल का मैं सदा विश्वास करता हूँ।"

मुस्तफ़ा कमाल ने मन में कहा—"तुर्की जर्मनी का सन्तरी है!" परन्तु, प्रकट में कैसर से कुछ न कहा। युवराज के साथ जो कई अनवर पाशा के पक्ष के सैनिक थे; उनमें से एक ने खुशामद के साथ कैसर से कहा;—"श्रीमान सदा तुर्की के बल का विश्वास करें। जर्मनी के साथ तुर्की का जीवन मृत्यु का नाता होगया है। जर्मनी की साम्राज्य विस्तार की नीति से तुर्की की पूर्ण सहानुभूति है और तुर्की सदा साथ देगा।"

परन्तु, क़ैसर भृकुटि बदल बदल कर मुस्तफ़ा कमाल की ओर देखते थे। वार्तालाप के पश्चात क़ैसर ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपस्थित तुर्क सैनिकों की सराहना की, पर मुस्तफ़ा कमाल की विशेष रूप से प्रशंसा की। कमाल केवल धन्यवाद प्रकट करते हुए गम्भीर मुख बना लेते थे, और क़ैसरी प्रशंसा का हृदय पर कुछ भी प्रभाव न पड़ने देते थे।

दूसरे दिन मुस्तफ़ा कमाल, जर्मन राजभवन के एक कमरे में टहलते हुए नाना प्रकार के विचारों में निमग्न थे। तुर्की के भविष्य पर चिन्ता कर रहे थे। परन्तु इसके साथ ही उनका हृदय शृङ्गाररस की कल्पना में डूबा हुआ प्रेयसी अज़ीज़ा की ओर भी खिंच जाता था। कमाल ने सोचा कि अज़ीज़ा को एक पत्र लिखें। कमाल इसी उधेड़बुन में थे, कि एक जर्मन सैनिक ने उनके कमरे में प्रवेश किया।

कमाल ने उसकी ओर देखा और आने का कारण पूछा। जर्मन सैनिक ने सम्राट क़ैसर का एक कार्ड देकर कहा,-"सम्राट ने आपको याद किया है।" प्रिया को पत्र लिखने का भाव मन ही में रह गया।

कमाल उसी समय सम्राट के समीप गये। कमाल ने अदब से सलाम किया। सम्राट क़ैसर ने मृदु हास्य के साथ कहा,-"मुझे तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं। तुम युद्ध की सफल गति देख रहे हो। हमारी बहुसंख्यक जर्मन सेनाएं इधर फ्रांसीसों और रूसियों से युद्ध में फंसी हैं, इसी कारण हम तुर्की के लिये अबतक विशेष सैनिक सहायता नहीं भेज सके हैं। तुर्की की वास्तविक सैनिक दशा क्या है? क्या तुर्क सेनाएं उधर कुछ महीने शत्रुओं को रोक सकेंगी?"

मुस्तफ़ा कमाल ने कहा,-"श्रीमान जब मुझसे पूछ रहे हैं, तो स्पष्ट ही कहूँगा। शत्रु का बल कभी न्यून करके नहीं देखना चाहिये। उधर के रण क्षेत्रों में अंग्रेजों का सैनिक बल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिनों दिन बढ़ता ही जाता है। तुर्क यद्यपि उनका सामना करते हैं, पर जर्मनी से सहायता अवश्य पहुँचनी चाहिये। इस समय जो थोड़ी सी जर्मन सेना तुर्क रणक्षेत्रों में हैं, वह पर्याप्त नहीं हैं। अंग्रेजों के बहुसंख्यक हिन्दुस्तानी सेनाओं के दल एकत्र हो रहे हैं, और लाल समुद्र तथा भूमध्य सागर में अंग्रेजों के जंगी जहाज़ी बेड़ों के दल अचानक आक्रमण करने के लिये तैयार हैं। भीषण संघर्ष का समय तो अब आरहा है।"

क़ैसर ने कहा,-"अच्छा, मैं तुम्हारी ये बातें मान लेता हूँ, परन्तु देखो जर्मनी से बग़दाद तक जब हमारा प्रभुत्व हो जायगा, तो क्या उधर के मुसल्मानी राज्य ईरान, अफ़गानिस्तान भी हमें विजय करने होंगे; अथवा भारत पर आक्रमण करने के लिये ये मुसलिम देश हमें सीधा मार्ग दे देंगे ? हमारे जर्मन जासूस अभी उन देशों में सफलता पूर्वक कार्य्य नहीं कर सके हैं, अफ़गानिस्तान बेतरह अंग्रेज़ों के प्रभावपाश में फंसा है, इसलिये मैं उन देशोंको विजय करने की बात सोचता हूँ।"

कमाल ने कहा-"श्रीमान ! उन मुसल्मानी देशों की स्थिति अभी अन्धकार में है। हमारी पूर्ण विजय देखने के बाद उन देशों के दिल हमारी तरफ़ फिर सकते हैं। पर, विजय के पूर्व मैं कोई भविष्यवाणी करने का दुःसाहस नहीं कर सकता।"

क़ैसर—मुझे इस युद्ध में रूसने बहुत कष्ट पहुँचाया। रूसका मूर्ख सम्राट ज़ार निकोलस व्यर्थ ही इस युद्ध में आ अटका। इससे हमें बहुत हानि पहुँची। जब जर्मन सेनाएं फ्रान्स की ओर बढ़ने की चेष्टा करती हैं, तभी रूसी सेनाएं हमें उत्तर से दबाती हैं। यदि इस समय रूस मेरे विरुद्ध न न होता, तो मैंने अबतक निश्चिय ही फ्रान्स और इंग्लैण्ड विजय कर लिये होते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमाल कुछ न बोले, केवल गम्भीर मुख बनाये सुनते रहे। क़ैसर ने गर्व से सिर ऊंचा कर के कहा-"ओह! तो भी जर्मन शस्त्र रूस और समस्त मित्रराष्ट्रों की गर्दनें तोड़ने के लिये काफ़ी है। अमूल्य जर्मन रक्त जिस भूमि पर गिरता है वह भूमि पवित्र हो जाती है। और जर्मन रक्त गिरने के बाद जर्मनी की विजय त्रिलोक में कोई नहीं रोक सकता। संसार के दुष्टों का दमन करने ही के लिये ही आज जर्मनी ने शस्त्र उठाये हैं, और ये शस्त्र शत्रुओं का नाश किये बिना अब न रखे जायँगे।"

कमाल ने मन में कहा-"इतना अभिमान है तो पतन भी अवश्य होगा। क़ैसर सरीखा शक्तिशाली चाहे तो संसार का शुभ कर सकता है, परन्तु उसकी राज-लिप्साकी अशुभ कल्पनाएं उसीका नाश करेंगी।"

कमाल ने, क़ैसर की तीखी आँखों से आँख मिलाते हुए कहा-"मुझे अपनी विजय में कुछ भी सन्देह नहीं है, ईश्वर हमारे साथ है।"

इसके बाद इधर उधर राजनैतिक बातें होती रहीं। क़ैसर ने प्रसन्नचित्त हो कमाल से कहा-"मैं तुम्हारी बातों से बहुत सन्तुष्ट हुआ हूँ। मैं तुम्हारी प्रशंसा प्रधान सेनापति (अनवर) कि लिखूँगा। तुम तुर्की के एक साहसी सेनापति हो।"

कमाल मन में क़ैसर से चिढ़ते थे। परन्तु, उन्होंने प्रसन्न चेष्टा दिखाते हुए धन्यवाद प्रकट किया। सम्राट क़ैसर ने कमाल को विदा किया।

कमाल फिर अपने एकान्त कमरे में आकर गूढ़ विचारों में निमग्न हो गये। क़ैसर की चालों पर विचार करते रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु, कमाल को फिर वही प्रिया याद आयी। वह अपूर्व अज़ीज़ा का रूप लावण्य, व्यवहार और सत्कार याद आया। उन्होंने खीज कर मन में कहा—"जर्मनी से कब बिदाई होगी, जो प्राण प्रिया को फिर देखूँ।" वह कुर्सी पर बैठ कर अज़ीज़ा को प्रेम पत्र लिखने लगे। पत्र लिख कर एक लिफाफे में बन्द किया, उस पर सर्दार सफ़दर का पता लिखा। तुर्की के ख़ास हरकारे बर्लिन से तुर्की डाक लाते थे, उन्हीं तुर्की हरकारों के थैले में कमाल का पत्र गेज़ाल गांव की ओर रवाना हुआ।

८
प्रेमियों का पुनर्मिलन

And spring, and all things that have gone from me,
And that shall never be;
All vanished hopes, and most hopeless bliss
That 'Comes with her to Kiss'.

—Francis Thompson.

कुछ ही दिनों के बाद युवराज मुहम्मद जर्मनी से विदा हुए। कैसर ने प्रसन्न होकर अपना एक चित्र कमाल को दिया था। परन्तु, कमाल ने उस चित्र को रखने की कुछ परवाह न की। विदाई के समय वह चित्र वहीं कमरे में छोड़कर कमाल रवाना हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुर्की लौटने पर कमाल की एक मात्र लालसा अज़ीज़ा से मिलने की थी। परन्तु, राजधानी कुस्तुन्तुनिया में जब पहुँचे, तो प्रधान सेनापति अनवर पाशा उन्हें एक दूसरे जंगी कार्य्य पर नियुक्त करना चाहते थे। कमाल से बातें करने पर अनवर को पता लगा, कि कमाल अब भी जर्मनी के पक्षपाती न हुए। अनवर ने उन्हें बलगारिया की राजधानी सोफ़िया में तुर्क राजदूत के साथ रहने की आज्ञा दी। कमाल उस राजदूत के सामरिक परामर्शदाता नियुक्त हुए। लाचार हो, उन्हें कुछ दिनों के लिये अज़ीज़ा का ख़्याल फिर परित्याग करना पड़ा। वह तुरन्त सोफ़िया भेज दिये गये।

परन्तु, कमाल तुर्की के युद्ध में शरीक होने का बराबर विरोध करते रहे। जब उन्होंने अपने विरोध का कोई अच्छा परिणाम न देखा, तो अन्त में उन्होंने चिढ़कर अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। इसबार इस्तीफ़ा देने के बाद कमाल तुरन्त अज़ीज़ा से मिलने के लिये रवाना होगये।

दोपहर के समय कमाल का घोड़ा गेज़ाल गांव में पहुँचा। ख़ानम् अज़ीज़ा ऊपर कमरे में पलङ्ग पर लेटी कमाल की बातें शिताबी से कर रही थी। उसने शिताबी से कहा—"देख, अन्त में यह निश्चय हो ही गया, कि तुर्की का यशस्वी सेनापति मुस्तफ़ा कमाल मेरा प्रिय आदर्श पुरुष है। बर्लिन से उनका प्रेम-पत्र जो आया है, उससे अब कोई सन्देह न रह गया। भला, उन्हें मेरी याद तो रही। जिस दिन से पत्र आया है, मैं नित्य एक बार उसे पढ़कर आँसू बहाती हूँ। शिताबी! कमाल कब आयगें? मेरा जी चाहता है कि मैं भी बर्लिन जाऊँ, और उनसे मिलूँ।"

शिताबी ने कहा—"नहीं बानू! आप कहाँ जायँगी? वह स्वयं ही आयेंगे। आप घबरायें नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकार इन दोनों की बातें हो ही रही थी, कि महल के एक पहरेदार ने आकर अज़ीज़ा को एक पत्र दिया, जिसपर लिखा था–"मुस्तफ़ा कमाल।" अज़ीज़ा ने चौंक कर पहरेदार से पूछा,–"यह पत्र किसने दिया ?"

पहरेदार ने कहा,–"नीचे एक सवार खड़ा है, उसीने दिया।"

अज़ीज़ा खुशी के मारे उछल पड़ी। उसने और शिताबी ने पहले अपने कमरे की खिड़की से देखा। देखा, एक नकाब-पोश सवार खड़ा है।

अज़ीज़ा शीघ्रता पूर्वक नीचे दौड़ आयी। अज़ीज़ा को देखते ही मुस्तफ़ा कमाल ने अपने मुख पर से नकाब हटायी। कमाल का स्वरूप पहिचानते ही अज़ीजा दौड़कर विक्षिप्त की नाईं उसके हृदय से लिपट गयी। जैसे कोई अबोध बच्चा रोता है, उस तरह रोने लगी।

अज़ीज़ा कमाल को साथ लिये ऊपर आयी। वह शीघ्रता के साथ एक एक प्रश्न करने लगी। कमाल का कुशल समाचार पूछने के बाद अज़ीज़ा ने कहा–"क्यों ? तुमने बर्लिन जाते समय बताया क्यों नहीं, कि तुम बर्लिन जा रहे हो ?"

कमाल ने उसे प्यार करते हुए कहा–"उस समय बताने की क्या आवश्यकता थी ! मैं ने तुम से कह दिया था, कि मैं जहां जाऊँगा वहाँ से अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार तुम्हें पत्र भेजूँगा। तदनुसार मैंने पत्र भेजा। परन्तु, मैं तुमसे अब एक बात कहूँगा, जिसे तुम मानना और सदा ध्यान में रखना।"

अज़ीज़ा ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा—"क्या ? क्या ? कहो ?"

कमल—मेरा समाचार तुम बहुत ही गुप्त रखना। यह किसी को भी न मालूम होने पाये, कि मैं तुम्हारे यहाँ आता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूँ। मैं सैनिक हूँ, इस युद्ध काल में मेरा चलना फिरना किसी पर प्रगट न होना चाहिये।

अज़ीज़ा ने कहा–"हाँ ठीक है। मैं बहुत ही सावधान रहूँगी। तुमने पहले मुझसे क्यों न कहा?" इसके बाद अज़ीज़ा ने शिताबी से कहा,–"देख शिताबी! तू भी ध्यान रखना और इनका समाचार सदा गुप्त रखना!"

कमाल और अज़ीज़ा में बहुत तरह की प्रेम वार्ता होने लगी। दोनों के हृदय एक ही प्रेम–भावना से भरे थे। दोनों के नेत्र एक दूसरे को देख कर मुग्ध होरहे थे। अतृप्त हृदयों की उष्ण उच्छ्वा से एक दूसरे के दग्ध हृदय को शीतल कर रही थीं।

संध्या के चार पांच बजे तक कमाल, उस प्रिया के प्रलोपन व्यस्त रहे। बिदाई के समय अज़ीजा बहुत ही कातर हो अनुनय विनय करके उन्हें रोकने लगी। "थोड़ा और ठहरो! थोड़ी देर ज़रा और ठहरो!" कहती हुई कमाल को उठने नहीं देती थी। कमाल भी प्रिया को बारम्बार प्रेम पूर्वक सान्तवना देते हुए हार्दिक चाहना प्रगट कर रहे थे। संध्या की कालिमा फैलने पर कमाल बिदा हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घोर युद्ध में कमाल की विजय

The crimson cloud of War had from the North,
Blinded the light of day,
Or again,
For many a heart
Ran purple in its rage, and with a wrath
Tumultuons, sought to burst its heaving sides
With words of fierce defiance; Scathe and Scorn.

T. O. D. Dunn.

युद्ध में तुर्की को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिये अंगरेजों ने भीषण जंगी तैयारियाँ की थीं। बहुत समय के बाद इस बार अंगरेजों को अच्छा अवसर मिला था, कि वे तुर्की को परास्त कर तुर्क साम्राज्य पर अधिकार करलें, और इस तरह ब्रिटिश साम्राज्य विस्तार की निति पूर्ण हो। यूरोप अफ्रीका और एशिया के मध्य में तुर्की की राजधानी कुस्तुन्तुनिया एक अत्यन्त आवश्यक स्थान है। यूरोपीय रणपंडितों की राय से, जिसके हाथ में कुस्तुन्तुनिया होगा वह उक्त तीन महाद्वीपों पर राज्य करेगा। यह महान राज लिप्सा इस बार पूर्ण हो रही थी, यदि अंगरेज कुस्तुन्तुनिया और तुर्की पर अधिकार कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी महान विजय के लिये अंगरेजों ने इस बार बड़ी प्रबल जंगी तैयारियाँ की थीं। अंग्रेजों के जल और स्थल सेनाओं के दुर्दंड दल, आगे बढ़े चले आते थे। यूरोप और एशिया के मध्य में दर्रेदानयाल एक अत्यन्त आवश्यक जल मार्ग है, जिसके निकट अंगरेजों की सेनाओं का जमावड़ा था। भूमध्यसागर की ओर से अंगरेजों के जंगी जहाज़ आकर दर्रेदानयाल के सामने डटे थे। दर्रेदानयाल और बासफ़ोरस को दो तंग जल प्रणालियाँ भूमध्यसागर से मिलाती हैं, ये दोनों जल प्रणालियाँ एशियाई और यूरोपीय तुर्की के बीच से गयीं हैं। इन दोनों प्रणालियों के दोनों तटों पर, पहाड़ियों का सिलसिला है, जिनके ऊपर तुर्की तोपें लगी थीं। इन तोपों की सीधी मार जल पर पड़ती थी और इस मार के सामने किसी भी शक्तिशाली शत्रु के जंगी जहाज़ आगे बढ़ने का सहास नहीं कर सकते थे। एशियाई तट पर भयङ्कर युद्ध नाद था।

यूरोपीय तट पर राजधानी कुस्तुन्तुनिया है और एशियाई तट पर स्कुटारी है। कुस्तुन्तुनिया प्रायः पांच शताब्दियों से तुर्कों का केन्द्रस्थल और इसलाम का रक्षक रहा है। तुर्कों ने सदा उसे इसाई शत्रुओं की गृद्ध दृष्टि से सुरक्षित रखा। इस बार यूरोपीय महासमर में अंगरेजों ने सुअवसर देखा, और सर्व प्रथम मोहाने दर्रेदानयाल पर आक्रमण करना निश्चय किया।

बड़ी ही भीषण स्थिति थी। तुर्की के लिये जीवन और मृत्यु का प्रश्न था। दर्रेदानयाल की रक्षा कौन करे? प्रधान तुर्क सेनापति अनवर-पाशा और अन्य तुर्क सेनापतियों ने परामर्श कर यही निश्चय किया, कि मुस्तफ़ा कमाल पाशा को दर्रेदानयाल की रक्षा करने का काम सुपुर्द किया जाय। मुस्तफ़ा कमाल को जब यह आज्ञा मिली तो वह एक सच्चे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वीर सैनिक की तरह तैयार हो गये। दर्रेदानयाल के युद्ध का गुरुभार कमाल ने अपने ऊपर ले लिया।

उस समय दर्रेदानयाल में १६०,००० तुर्क सेना मुस्तफ़ा कमाल की अधीनता में थी। उन्होंने इस सेना का सुचारु रूप से संगठन और संचालन किया। शत्रु और मित्र सभी दंग हो रहे थे, कि कमाल इस युद्ध में क्या करेंगे? दुर्दण्ड अंगरेजी सेनाओं का सामना कमाल किस प्रकार करेंगे? यही देखने के लिये सारा संसार अकुलाया था।

अन्तिम भयानक घड़ी आयी, जब कि दोनों ओर से गोले बरसने लगे। दर्रेदानयाल से कुछ दूर अनारकोट स्थान के पास भीषम संग्राम हुआ, जिसमें अंगरेजों को अच्छी तरह परास्त होना पड़ा। कमाल ने इस योग्यता और दक्षता के साथ सैन्य संगठन किया था, कि बहुत ही अल्प संख्यक तुर्क सैनिक काम आये, परन्तु अंगरेजों की फ़ौज बुरी तरह पिटी, और अंगरेजों को सब तरह से भारी हानि उठाकर पीछे हटना पड़ा। इस पराजय से अंगरेज लज्जित हुए, पर मुस्तफ़ा कमाल के नाम ने सारे संसार में ख्याति पायी। अनवर पाशा और जर्मन अधिकारी चकित रह गये। सारी तुर्क सेना में मुस्तफ़ा कमाल का नाम फैल गया, और तुर्क सैनिक कमाल की चर्चा और प्रशंसा करने लगे। तभी से अंगरेजों ने मुस्तफ़ा कमाल की बीरता पहचानी और उनकी इज्जत करनी जानी। उन्हें "डिफेंडर आफ़ दि डार्डानेल्स" अर्थात् दर्रेदानयाल की रक्षा करने वाला कमाल कह कर याद करने लगे। सारे यूरोप में कमाल की प्रशंसा फैल गयी। यूरोप ने चकित होकर तुर्की के इस बीर योद्धा को देखा, और दांतों तले उंगली दबायी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु, प्रशंसा की इस प्रतिध्वनि में प्रधान सेनापति अनवर पाशा प्रसन्न न था। उसने कदाचित सोचा था, कि दर्रे-दानयाल के युद्ध में मुस्तफ़ा कमाल मर खप जायंगे और उसे अपने एक प्रबल प्रतिद्वन्दी से छुटकारा मिल जायगा। पर, कमाल तो युद्ध की आग में से और भी यशस्वी होकर निकले, इसलिये अनवर फिर उन्हें दूर हटाने की फिक्र करने लगा। अबकी अनवर ने उन्हें कोहक़ाफ़ की सीमा पर रूसियों से लड़ने के लिये भेजा। कोहकाफ़ की सीमा पर रूसियों की प्रचंड सेनाएं तुर्कों पर आक्रमण कर रही थीं; जिनका सामना करने के लिये मुस्तफ़ा कमाल को आज्ञा दी गयी।

कमाल को यह आज्ञा यद्यपि बुरी मालूम हुई, पर सैनिक आज्ञा टाल न सकते थे। इसके बाद, उन्हें अज़ीजा का भी ध्यान आया और उन्होंने सोचा कि कोहकाफ जाते हुए मार्ग में अज़ीज़ा से भेंट करेंगे। "अज़ीज़ा से मिले बहुत दिन हो गये। वह अबोध बालिका मेरी याद में व्याकुल होगी, मुझे हर समय याद करके रोती होगी, उसे देखना मेरा कर्तव्य है।" यह सोचते हुए कमाल कोहकाफ़ जाने के लिये तैयार हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१०
मिलन और विछोह

What can Love bring ? Nay, who shall say, dear ?
For what is there, Love hath not done ?
Love giveth joy where sorrow lay, dear,
And casteth light where light was none,
Dumb lips must sing when Love doth find them,
Deaf ears catch music in each sound,
Sad eyes forget the tears that blind them
When love hath gently wrapped them round.

विजयी मुस्तफ़ा कमाल की ख्याति सारे तुर्की में गूँज गयी थी। तुर्क समाचार पत्रों में दर्रेदानयाल के युद्ध के विस्तृत समाचार छपे थे। मोटे अक्षरों में कमाल की सैनिक वीरता, और युद्ध सम्बंधी कार्य्यों का विवरण प्रकाशित हुआ था। कितने ही अखबारों में दर्रेदानयाल के विजेता मुस्तफ़ा कमाल का चित्र भी निकला था, जिसे तुर्क जाति के लोग अभिमान पूर्वक देखते थे।

अज़ीज़ा अपने एकान्त कमरे में अकेली बैठी अपने प्रिय पुरुष का चिन्तन कर रही थी। उसे कुछ ध्यान न था, कि संसार में क्या हो रहा है, न वह इसके जानने की कुछ परवाह करती थी। उसके हृदय में, प्राण में और कल्पना में केवल कमाल बसा था। दोपहर के समय अज़ीज़ा पलङ्ग पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ी करवटें ले रही थी, प्राणप्रियतम् से मिलन की उतकंठा सता रही थी।

इतने में शिताबी आयी। उसके हाथ में एक तुर्की अखबार था, और आंखों में आश्चर्य भरा था। उसने अख़बार अज़ीज़ा को दिखाते हुए कहाः—"देखो बानूँ! यह दर्रेदानयाल का विजेता कौन है?"

अज़ीज़ा कभी अख़बार नहीं देखती थी, और उसे एक तरह की अख़बारों से चिढ़ थी। उसने बिना देखे अख़बार को दूर फेंक दिया, और कहा-"रहने दे शिताबी! मुझे नहीं अच्छा लगता।"

शिताबी ने आग्रह पूर्वक फिर अख़बार उठा अज़ीज़ा के सामने रखा। "आप देखें तो, यह कौन बीर पुरुष हैं!" शिताबी ने कहा।

अज़ीज़ा के नेत्र इस बार अख़बार पर पड़े। उसने पहली ही दृष्टि में देखा-एक लम्बा युवा तुर्क फ़ौजी वर्दी में खड़ा है। चित्र के नीचे लिखा है-"दर्रेदानयाल का विजेता, सेनापति मुस्तफ़ा कमाल।" अज़ीज़ा अत्यन्त ही उत्सुकता के साथ चित्र देखने लगी। वह लम्बा छरहरा शरीर, सुन्दर सुडौल चेहरा, मनमोहने वाली आखें हैं।

इस सूरत को अज़ीज़ा ने तुरन्त पहिचान लिया। अज़ीज़ा ने फिर आश्चर्य से शिताबी की ओर देखा, और कहा-"अरी शिताबी! मैं तेरे सदके जाऊँ, यह तो वही मेरा प्यारा कमाल है! देख, क्या ही बीर बाने सिंहभाव से खड़ा है, जैसे अभी अपने शत्रुओं को विजय कर लेगा।"

शिताबी ने हँसकर कहा-"मान लीजिये, यह वही कमाल न हों, तब?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अज़ीज़ा ने प्यार से झिड़क कर कहा–"अरी चुप कम्बख़्त! तेरे मुँह में आग लगे! मैं अपने जीवन की बाजी लगा कर कहती हूँ, कि यह वहीं कमाल हैं। मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कह सकती हूँ, कि यह वही मेरा प्रियतम् है।"

अज़ीज़ा ने वह चित्र बारम्बार देखा, नेत्र अश्रुपूर्ण हो गये। मुँह से एक आह निकल गयी। उसने शिताबी को आज्ञा दी, कि तू मुझे यह सारा समाचार पढ़ कर सुना। शिताबी समाचार पढ़ने लगी, जिसमें कमाल के वीर कार्य्यों का विवरण विशेषता के साथ लिखा था।

शिताबी जब अख़बार पढ़ चुकी, तो अज़ीज़ा के नेत्र सजल हो रहे थे। उसने कहा–"क्यों शिताबी! इतनी महान विजय प्राप्त करने के बाद भी क्या कमाल को छुट्टी नहीं मिली? हाय, मनुष्य युद्ध क्यों करता है? एक दूसरे को मारता क्यों है? कहीं गोली लग जाय, तो प्राण निकल जाय। उस ईश्वर को धन्यवाद है, जिसने मेरे प्राणप्यारे की रक्षा की।" अज़ीज़ा ने मस्तक झुकाकर भक्तिपूर्वक ईश्वर की बन्दना की और कहा–"शिताबी! अबकी कमाल आयेंगे तो मैं उन्हें युद्ध पर न जाने दूँगी।"

शिताबी ने कहा,–"नहीं बानूँ! वह न मानेंगे। योद्धा का काम ही युद्ध करने का है। आप क्यों रोकेंगी?"

अज़ीज़ा खिड़की से दूर उद्यान की सड़क की ओर देख ही थी। उसने देखा, कि सड़क से कई अश्वारोही घोड़े दौड़ाते चले आ रहे हैं। अज़ीज़ा ने कहा,–"देख शिताबी! सवार कैसा प्राण तजकर घोड़े दौड़ा रहे हैं। स्वंय कष्ट सहते हैं और घोड़ों को कष्ट देते हैं!"

शिताबी ने कहा–"नहीं, कष्ट क्यों कहती हैं? यह दौड़ धूप ही उनका जीवन है। घोड़सवारी में ही उन्हें सुख है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दस बारह सवार आये और निकल गये। उनमें से एक नकाबपोश सवार आकर अज़ीज़ा की कोठी के पास ठहरा। अज़ीज़ा खिड़की में से बराबर देख रही थी। उसने शिताबी से कहा—"शिताबी! देख नीचे कोई सवार आया है।"

शिताबी आज्ञानुसार नीचे गयी। नकाबपोश सवार फाटक के पहरेदारों से सर्दार सफदर और अज़ीज़ा को पूछ रहा था। शिताबी ने पहुँच कर कहा—"आप कहाँ से आये हैं?"

शिताबी को देखते ही उसने तुरन्त अपनी नकाब हटादी। शिताबी ने चकित होकर कहा—"कौन? मुस्तफा कमाल!" शिताबी ने झुक कर सलाम किया। और कहा—"आइये हजूर! बहुत दिनों के बाद आये!"

मुस्तफ़ा कमाल ने कोठी में प्रवेश करते हुए कहा—"शिताबी! अज़ीज़ा कैसी है?"

शिताबी ने मुस्कराकर कहा—"चलिये, देख लीजिये। आप ही को हर समय याद करती हैं। इस समय भी आपही की चर्चा थी।"

सीढ़ियों पर चढ़ते हुए मुस्तफ़ा कमाल ने देखा,—"ऊपर चौड़ी सीढ़ी पर खड़ी अज़ीज़ा देख रही है। अज़ीज़ा ने कमाल को ज्योंही देखा, वह विक्षिप्त की भांति दौड़ी, सिढ़ियाँ उतरने लगी। कमाल ने भी उसी समय उसकी ओर देखा। युग्म प्रेमियों के नेत्र मिले। कमाल केवल पांच छः सीढ़ियाँ चढ़ पाये थे, कि अज़ीज़ा गिरती पड़ती आकर उनके हृदय पर लग गयी। एक शब्द भी मुँह से बोला न गया। कमाल कमाल के कंधे पर सिर रखे पड़ी रही। सीढ़ी पर खड़े कमाल, प्राणप्यारी को अपने बाहों में लिये थे। कमाल ने कमाल ध्वनि में कहा—"मेरी लैला! प्यारी अज़ीज़ा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अज़ीज़ा ने सिर उठाकर कमाल को ओर देखा। अज़ीज़ा बोलना चाहती थी, पर प्यार के कारण प्राण-कंठ के पास आ गया था। कोमल कमल नेत्र केवल कमाल को देखने में निमग्न थे। अज़ीज़ा के अवरुद्ध कंठ से ध्वनि निकली—"कमाल! प्यारे कमाल!"

कमाल बारम्बार प्यारी के होंठ चूम रहे थे। उन्होंने पूछा-"अज़ीज़ा! तू अच्छी तो थी? तेरे लिये मैं सदा चिँन्तन किया करता था।"

कुछ देर सीढ़ियों पर ठहरे दोनों बातें करते रहे। इसके बाद अज़ीज़ा कमाल की कमर में हाथ डाले खेलती हुई सीढियाँ चढ़ने लगी। अपने कमरे में पहुँचकर अज़ीज़ा ने कहा—"कमाल प्यारे! तुम इतने दिन कहाँ थे? मैं रात दिन तुम्हें याद करती थी। स्वप्न में तुम्हें देखती थी, रोती थी, पर प्यारे तुम्हारा पता न मिलता था। मैं चिट्ठी भेजती तो कहाँ? तुम अबकी मुझे ऐसा भूले, कि चिट्ठी भेज कर भी याद न किया!"

कमाल चुपचाप हँसते रहे। युद्ध सम्बन्धी बातें बालिका से कहनी उचित न समझी। वह उससे अपना व्यक्तित्व छिपाना चाहते थे। कमाल ने कहा,-"प्यारी! तुम जानती हो, मैं एक सैनिक हूँ। देश-सेवा के निमित्त युद्ध करना ही मेरा धर्म है। अज़ीज़ा! मैं उसी सेवा में लगा था। आज सैनिक सेवाओं से थोड़ा अवकाश मिलते ही तुम्हें देखने आया हूँ। प्राणप्यारी से बढ़ कर कोई सुन्दर ध्यान मेरे हृदय में नहीं था।"

अज़ीज़ा से अब न रहा गया। उसने झट वह समाचार पत्र उठाकर कमाल को दिखाया, और पूछा-"क्यों प्यारे!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह कौन दर्रेदानयाल का विजेता मुस्तफ़ा कमाल पाशा हैं ? क्या तुम बता सकते हो ? " यह कहती हुई अज़ीज़ा शरारत भरी आंखों से कमाल को देखने लगी।

समाचार पत्र में अपना चित्र देखकर कमाल मन में हँसे। उन्हें प्रसन्नता मालूम हुई, कि प्यारी ने उनका चित्र रख छोड़ा है। पर, उन्होंने अब भी छिपाना चाहा और अपनी अनभिज्ञता दर्शाते हुये बोले,—"हाँ यह एक सेनापति मुस्तफ़ा कमाल है। जिससे मेरा कुछ सम्बन्ध नहीं है !"

अज़ीज़ा ने फूटती हुई हँसी से कहा,—"प्यारे ! क्यों छिपाते हो ? क्या इस चित्र में और तुम में कुछ भी अन्तर है ? देखो तो सिवाय तुम्हारे और किसी कमाल में यह वीर भाव, यह शौर्य्य और यह सिंह तेज नहीं आ सकता ! तुम बताओ ! मुझसे मत छिपाओ !" कहती हुई अज़ीज़ा कमाल से मचलने लगी।

कमाल ने एक बार सोचा, फिर प्यारी से रहस्य छिपाना उचित न समझा। उन्होंने हँस कर कह दिया,—"हाँ, यह मेरा ही चित्र है।"

अज़ीज़ा ने अत्यन्त प्रसन्नता, और उछाह से कहा,—" अहा मेरे प्यारे ! इतना बड़ा कराल युद्ध इन कोमल हाथों से लड़ना पड़ा।"

कमाल ने कहा,—" प्यारी ! वह एक साधारण युद्ध था। अभी और भी भयङ्कर युद्ध आगे होंगे। मातृभूमि अबकी बुरी तरह शत्रुओं के चङ्गुल में फँस गयी है। मैंने अपना क्षुद्र जीवन इसी में लगा दिया है। मैं तुर्की के लिये जीवित हूँ, और तुर्की के लिये मरूँगा।"

अज़ीज़ा ने चिहुँक कर कहा,—" तुम्हारे शत्रु मरे ! तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीओ, जुग जुग जीओ। परन्तु प्यारे! बताओ, तुम मुझे क्यों भूल गये थे?"

कमाल ने उसका हाथ अपने हृदय पर रख कर दबाया और कहा,-"नहीं प्रिये! मैं तुम्हें एक क्षण के लिये भी नहीं भूलता था। युद्ध के भयङ्कर गोलों के नाद में तुम्हारे मधुर प्रेम की करुण-कल्पना मेरे हृदय में मचलती थी, विरह की वेदना सताती थी। मैं उसी प्रिय वेदना को हृदय में धारण किये हुये, बाहर शत्रुओं से युद्ध करता था और मन में प्यारी अज़ीज़ा को याद करता था।"

इसी प्रकार बहुत बातें होने पर कमाल ने बीच में कहा,-"देखो प्यारी! मेरा यह रहस्य किसी को न मालूम हो, कि-मैं वही दर्रेदानयाल का कमाल हूँ। शिताबी से और अपने पिता से भी न कहना।"

अज़ीज़ा ने हँस कर कहा-"शिताबी तो यह रहस्य जानती है, बल्कि सबसे पहले उसी ने मुझे बताया। पिता भी शायद कुछ कुछ जानते हैं। परन्तु मैं अपना यह अभिमान क्यों छिपाऊँ, कि तुम दर्रेदानयाल के बिजेता मेरे कमाल हो!"

कमाल-"किन्तु, मेरा रहस्य प्रकट करने का मूल्य जानती हो, क्या है? मुझे अपना प्राण दे देना होगा-मेरी मृत्यु हो जायगी।"

अज़ीज़ा ने डर कर कहा-"नहीं,नहीं,प्यारे! ऐसा न कहो।"

कमाल-तुम मेरा अभिप्राय नहीं समझीं शत्रु के गुप्तचर न जाने किस भेष में कहाँ घूम रहे हैं! सम्भव है, तुम्हारे रहस्य प्रकट करने से मुझे कुछ हानि पहुँचे।"

"तब मैं न बताऊँगी। मेरी बोटी बोटी भी काट डाली जायगी तो भी न बताऊँगी। प्यारे! तुम निश्चिन्त रहो,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं किसी से न कहूँगी। शिताबी को और पिता जी को भी मना कर दूँगी।"

प्रायः दो घन्टे तक दोनों बातें करते रहे। दोनों ही एक दूसरे में तन्मय थे। कमाल उसकी लटों में उंगलियाँ उलझाते हुये बोले-"देखो प्यारी! संध्या हो रही है। मेरे जाने का समय हो आया है।....."

अज़ीज़ा ने एक दम बहुत ही व्याकुल हो कर कहा-"कहाँ जाओगे? अभी जाओगे? इतने दिनों के बाद आये और जाने के लिये अभी तैयार हो गये! सरेशाम सबेरा कर दिया। नहीं, प्यारे! मैं न जाने दूँगी।" यह कहती हुई अज़ीज़ा कमाल का मुख देखने लगी।

कमाल ने उसकी व्याकुलता देखकर बहुत तरह से समझाया। "प्यारी लैला! घबराओ नहीं। हमारे चिर मिलन के दिन अभी निकट नहीं हैं। हमारा स्थायी मिलन तो उसी दिन होगा, जिस दिन शत्रुओं की धृष्टता से देश पूर्ण-रूप से स्वतन्त्र हो जायगा। उस दिन प्यारी, मैं तुमसे शादी कर लूँगा। क्यों, मुझसे शादी करोगी?"

यह कहते हुए कमाल ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। शादी का शब्द आज के पहले कभी अज़ीज़ा के कानों में नहीं पड़ा था। अज़ीज़ा ललाये हुये नेत्रों से कमाल को देखने लगी, जैसे अव्यक्त भाषा में पूछ रही थी,—"क्या प्यारे, मुझसे शादी करोगे?"

कमाल ने उसे प्यार किया, और चुम्बन करते हुये कहा-"जिस दिन तुर्की वर्तमान विपत्तियों से मुक्त हो जायगा, उसी दिन मैं अज़ीज़ा प्राणप्यारी से शादी करूँगा। तबतक मैं ठहरूँगा, जिस तरह लड़के परीक्षा पास करने के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ठहरते हैं।" यह कहते हुये कमाल हँस दिये, और अज़ीज़ा को भी हँसाने की चेष्टा की। परन्तु, कमाल के वियोग की कल्पना करते हुये वह ठिठक कर उन्हें देख रही थी।

अज़ीज़ा ने इतना ही पूछा,—"प्यारे, बताओ अब कहाँ जा रहे हो?

कमाल ने कहा—"क्या यह भी बताऊँ? या, यह न पूछो?

अज़ीज़ा ने आग्रहपूर्वक कहा—"हाँ, बताओ। मैं किसी से भी न कहूँगी।"

कमाल ने धीरे से कहा—कि—"मैं कोहक़ाफ़ की ओर जा रहा हूँ।"

अज़ीज़ा ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा,—"जाओ प्राणप्यारे! मेरा प्राण तुम्हारे प्राण में पड़ा है। ईश्वर तुम्हें लाखों युद्धों में विजय प्रदान करे।"

यह कहते हुये अज़ीज़ा कमाल के हृदय से लग कर रोने लगी। कमाल ने उसके बिखरे बाल संभाले, कपोलों को सहलाया, और कंठ में चुम्बन लिया। "अच्छा प्रिये! अब मुझे जाने दो! दुःखी न रहना, न कभी मेरे लिये कुछ चिन्ता करना। मैं फिर शीघ्र ही आ मिलूँगा।"

कमाल जाने के लिये तैयार हुए। अज़ीज़ा ने कहा,—"क्या पिता जी से नहीं मिलोगे?" कमाल ने कहा—"नहीं, मुझे अब जाने की जल्दी है। संध्या समाप्त हो गयी और रात हो रही है। पिता जी से मेरा सलाम कहदेना।"

कमाल ने फिर अन्तिम बार प्यारी को दबा कर आलिंगन किया और रवाना हो गये। अज़ीज़ा बहुत देर तक रोती रही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११
महायुद्ध का अचानक अन्त

कोहकाफ़ तुर्की का एक अत्यन्त सुन्दर और रमणीक प्रदेश है। यहाँ विस्तृत पर्वत श्रेणियों तथा प्राकृतिक दृश्यों का समूह इतना रमणीक है, कि यह सारा प्रदेश सदा वसन्त बहार का आनन्द देता है।

इसकी उत्तरी सीमा पर रूस साम्राज्य फैला है। यहीं बहुसंख्यक रूसी सेनाएँ एकत्र हो, तुर्की से युद्ध कर रही हैं। रूस का सम्राट ज़ार निकोलस जो अमानुषिक अत्याचारों के लिये जग प्रसिद्ध था, सदा से यही चाहता था, कि तुर्की के उत्तरी प्रदेशों और कुस्तुन्तुनियाँ तक उसका अधिकार हो जाय। महायुद्ध में अंग्रेजों का मित्र-राष्ट्र बनकर रूस ने तुर्की पर आक्रमण आरम्भ कर दिया था। रूसियों ने आशा की थी, कि इस बार तुर्की को तहे तेग़ करके वे अपने दिल की मुराद पूरी कर लेंगे।

रूसी सेना के विराट दल, कोहक़ाफ़ की सीमा पर एकत्र थे। उनका संचालन स्वयं सम्राट ज़ार के भाई ग्रांड-डियुक-निकोलस कर रहे थे। रूसी सेनाओं का प्रचंड रूप देख कर यही मालूम होता था, कि इस बार तुर्कों को पूर्ण रूप से पराजित होना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु, इसी समय तुर्की के सर्वश्रेष्ठ योद्धा मुस्तफ़ा-कमाल पाशा उत्तरी सीमा पर अपनी सेनाओं, तोपख़ानों, और रिसालों सहित पहुँच गये। यहाँ भी मुस्तफ़ा कमाल ने ऐसी सुदृढ़ मोर्चेबन्दी की, और ऐसा अपूर्व युद्ध कौशल दिखाते हुये लड़े, कि रूसियों के छक्के छूट गये। कई दिनों तक रूसियों से घोर संग्राम हुए। रूसियों के कई आवश्यक स्थान ले लिये और उन्हें परास्त कर पीछे हटा दिया। इस विजय से भी मुस्तफ़ा कमाल की ख्याति हुई।

रूसी युद्ध के बाद मुस्तफ़ा कमाल फिर कुस्तुन्तुनिया लौटे। वह अबतक अनवर पाशा तथा अन्य तुर्क अधिकारियों की युद्ध नीति से असन्तुष्ट थे। उस समय बग़दाद अंगरेज़ों के हाथ में था। तुर्की में कई जर्मन सेनापति पहुँचकर तुर्कों का संगठन कर रहे थे। अनवर पाशा और जर्मन सेनापतियों ने हठ किया, कि अंगरेज़ों से बग़दाद लड़कर लेलिया जाय। पर कमाल ने इसका विरोध किया और अनवर पाशा को बहुत समझाया, कि इस समय शक्तिशाली अंगरेज़ों पर आक्रमण करना उचित नहीं। पर कमाल की राय न मानी गयी; अन्तमें कमाल ने चिढ़ कर अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

परन्तु, तुर्की का कर्ता धर्ता अनवर पाशा कुछ नहीं सुनता। उसने कमाल के इस्तीफ़े की परवाह न की, बल्कि उन्हें हलब में जा कर रहने की आज्ञा दी। यह कमाल को एक प्रकार का निर्वासन दंड दिया गया था।

हलब से कमाल ने तुर्क महामंत्री (ग्रांड वज़ीर) तलअत पाशा और युद्ध मंत्री अनवर पाशा के पास एक पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने तुर्की की दुर्दशा लिखी और तुर्क प्रजा का नाश दिखाया। कमाल ने उस पत्र में यह स्पष्ट लिख दिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था, कि यदि अब भी युद्ध जारी रख गया तो तुर्की का नाम निशान मिट जायगा। और अंगरेजी सेना तुर्की में घुस आयेगी और सारे तुर्की में इसाईयों का राज्य फैल जायगा।

मुस्तफ़ा कमाल की इस भविष्यद्वाणी पर तुर्की के मदांध शासकों ने कुछ ध्यान न दिया, बल्कि उन बातों को मुस्तफ़ा कमाल की मूर्खता का एक नमूना समझा। पर, उक्त बातें मुस्तफ़ा कमाल ने पूरे विश्वास के साथ लिखी थीं, जिनकी सत्यता इतिहास जानने वालों से छिपी नहीं है।

कमाल हलब में चुपचाप न बैठे थे, बल्कि एक सच्चे देश-भक्त की तरह दिन रात देशोद्धार की चिन्ता किया करते थे। कुछ माता के सपूत युवा तुर्क भी उनके साथ थे, जो केवल देशभक्ति और संयम का प्रचार करते थे। तुर्कों में स्वदेश प्रेम की शिक्षा देते फिरते थे, और अपनी स्वतंत्र शक्ति बढ़ाने में लगे थे।

इधर अंगरेजी सेनाओं का बल दिनों दिन बढ़ता ही जाता था। अनवर और उसके दल को एक अच्छे सेनापति की आवश्यकता थी। कमाल को बुलाने के लिये उनके पास अनवर ने पत्र भेजा। इस पत्र में कमाल की खूब प्रशंसा की थी।

देश की दुर्दशा का ध्यान कर कमाल फिर एक बार तैयार हो गये। फलीस्तीन में अंगरेजी सेना का बल बढ़ा हुआ था, इसलिये इस बार कमाल को फ़लीस्तीन में जाकर युद्ध करने की आज्ञा दी गयी। वहाँ अंगरेजों के पैर अच्छी तरह जम चुके थे। कमाल की सैन्य संख्या इस बार बहुत कम थी, पर तौ भी वे युद्ध करने के लिये बढ़े।

बग़दाद की ओर बढ़ते समय एक दिन कमाल मार्ग में अपनी सेनाओं का पड़ाव डाले पड़े थे। उसी समय उन्हें अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक विश्वस्थ मित्र की चिट्ठी मिली, जिससे मालूम हुआ, कि महायुद्ध सहसा बन्द हो गया। यह समाचार जानने के बाद कमाल ने बगदाद की ओर जाकर अंगरेजों से युद्ध करना व्यर्थ समझा।

मुस्तफ़ा कमाल दुःखित हृदय से कुस्तुन्तुनिया लौट आये। सन् १६१६ के १६ नवम्बर को जर्मन महायुद्ध बन्द हुआ था। कमाल जिस दिन कुस्तुन्तुनियाँ पहुँचे, उस दिन अंगरेजी सेना ने कुस्तुन्तुनिया में प्रवेश किया था। तुर्क सुल्तान का सूर्य्य सदा के लिये अस्त हो गया।

१२
साम्राज्यों का पतन

For, in and out, above, about, below.
'Tis nothing but a magic Shadow-show
Played in a Box whose Candle is the Sun.
Round which we Phantom Figures come and go.

[Omar Khyam.]

प्रायः पांच वर्ष के घोर संग्राम के पश्चात् जर्मनी की सैनिक शक्ति शिथिल होने लगी। और उसके साथ तुर्की का भी पूर्ण ह्रास हुआ। जिस जर्मनी ने निज बल के भरोसे सारे संसार को युद्ध के लिये चुनौती दी थी, अब वह प्रायः टूटा हुआ बेकाम सा दीखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर, "मित्रराष्ट्रों" (अंग्रेज़, फ्रेंच इत्यादि) की शक्ति भी कमज़ोर हो गयी थी। ज़ारशाही का रूस, जो "मित्रराष्ट्रों" का एक महान बलशाली मित्र था, उसका भी पतन दो वर्ष पूर्व (सन् १९१७ में) ही हो गया था। रूस में भयानक रक्तपातपूर्ण विप्लव होने के बाद, अमीरों की राज-सत्ता नाश हुई; सम्राट् ज़ार, साम्राज्ञी ज़ारीना और उनके बच्चे तथा ज़ारशाह के अन्यान्य सम्बंधी और सहायक मार डाले गये थे। रूसी क्रान्तिकारी नेता एम. लेनिन और उसके साथी बोल्शेविकों ने श्रमजीवियों (मज़दूरों और किसानों) का साम्यवादी प्रजातंत्र शासन स्थापित किया। यही बोल्शेविकों की रूस में सरकार थी, जो जर्मनी से युद्ध करने के विरुद्ध थी और इसी बोल्शेविक सरकार ने रूस का भाग्य अपने हाथ में लेते ही यह स्पष्ट घोषणा कर दी, कि हम जर्मनी से नहीं लड़ेंगे! इस तरह, रूस सन् १९१७ में ही महायुद्ध से अलग हो गया था। तब, इसके बाद मित्रराष्ट्रों (अंग्रेज, फ्रेंच) को बड़ी चिन्ता यह हुई, कि जर्मनी से लड़ने के लिये अब रूस सरीखा कौन बलवान राष्ट्र उनका साथ देगा?

परन्तु, "मित्रराष्ट्रों" को यह चिन्ता अधिक नहीं करनी पड़ी, क्योंकि इंग्लैण्ड का चिरस्थायी मित्र संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका तुरन्त जर्मनी से युद्ध करने के लिये तैयार होगया। फ्रेंचों और अंग्रेजों की सहायता के निमित्त, लाखों अमेरिकन सेनाएं धड़ाधड़ एटलान्टिक महासागर पार कर, फ्रेंच रणक्षेत्रों में पहुँचने लगी। अमेरिकन सेनाओं के आगमन से वीर जर्मनी का हृदय भी अब शङ्कित हो उठा। जर्मनी में अब कदाचित् लड़ने का साहस न रहा, अथवा जर्मन राजनीतिज्ञों ने प्रथम बार दूरदर्शिता और बुद्धिमानी से काम लिया, यानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महायुद्ध बन्द करना उन्होंने स्वीकार किया ! जर्मनी में भी विप्लव हो गया था, परन्तु यह रक्तपातहीन विप्लव था। इसमें रूसी सम्राट् की तरह जर्मन सम्राट् कैसर के प्राण नहीं लिये गये, बल्कि क़ैसर ने स्वंय ही राज-सिंहासन त्याग दिया; और अपने बाल बच्चों सहित वह जाकर हालेण्ड में रहने लगे। हालेण्ड की कृपालु महाराणी ने कैसर को शरण दी थी।

रूस सम्राट् और जर्मन सम्राट् की हमने दुर्दशा देखी। यही दशा आस्ट्रीया के अभिमानी सम्राट् फ़र्डिनेंड फ्रान्सिस की भी हुई, जो जर्मनी का मित्र था। आस्ट्रीया में भी विप्लव हुआ और सम्राट् फ्रान्सिस सिंहासन से च्युत हुए।

इसी प्रकार तुर्क सुल्तान, खलीफ़ा का भी पतन हुआ। महायुद्ध रुकने के बाद, "मित्रराष्ट्रों" के दल ने (जिसमें अब अमेरिका भी शरीक था) पराजित जर्मनों के साथ संधि की, जिसकी बड़ी कड़ी शर्तें थीं; परन्तु जर्मनी ने कुअवसर देख वह संधि स्वीकार करली।

इधर, तुर्की की दशा और भी शोचनीय हो रही थी, तुर्क साम्राज्य का भी पतन हुआ ! विजयी अंग्रेजी सेनाओं ने तुर्की में प्रवेश किया। कुस्तुन्तुनिया, स्तम्बोल आदि नगरों पर अधिकार कर लिया। तुर्की के शिलिशिया प्रदेश में फ्रेंच सेनाओं ने अधिकार किया। तुर्कों के पुराने शत्रु, यूनानी एशियामाइनर में पहले ही से घुस पड़े थे। अब, सुअवसर देख यूनानियों ने स्मर्ना पर भी अधिकार कर लिया। तुर्की के आरमीनिया प्रान्त में विद्रोह मचा हुआ था। इस प्रकार तुर्की साम्राज्य का अङ्ग भङ्ग हो गया और एक पुराने टूटे फूटे जहाज की तरह तुर्क साम्राज्य महानाश के अनन्त सागर में समा गया। आज तुर्की के इन दुर्दिनों में उसके स्वार्थी और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अहङ्कारी सेनापतियों और मंत्रियों का पता भी न था। उन्हों ने जुआड़ियों की तरह देश के भाग्य का दाँव, युद्ध के चौसर पर लगा दिया था और फिर हार गये थे। इस हार से उनके (मंत्रिओं और सेनापतियों) तन, प्राण की कुछ भी हानि नहीं हुई; वे भागकर केवल विदेशों में छिप रहे, और किसी तरह जीवन व्यतीत करने लगे, कितने ही तुर्क सेनापतियों को अंग्रेजों ने कैद कर लिया था, या देश से निर्वासित कर दिया था। परन्तु पराजय के बाद देश की जो दुर्दशा हुई-देश को जिस तरह उन्होंने विदेशियों के पंजे में फँसाया, उसके लिये इतिहास में उनके नाम सदा कलङ्कित रहेंगे। दीन प्रजा के भाग्य से जूआ खेलने वालों का अन्त में यही परिणाम होता है!

कुस्तुन्तुनिया में तुर्क सुल्तान महम्मद पांचवें को नाम-मात्र सरकार रह गयी थी, जो अब अंग्रेजों के इशारे पर काम करती थी। तुर्की का सुल्तान और इसलाम का धर्म-गुरु ख़लीफ़ा एक ही व्यक्ति होता था, आज वह महा अभिमानी व्यक्ति अंग्रेजों की रक्षा या कैद में निर्लज्जता पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा है। तुर्की की सम्पूर्ण स्वतंत्रता नष्ट हो गयी।

परन्तु, देश के ऐसे घोर दुर्दिनों में भी कुछ थोड़े से तुर्क स्वतंत्रता के प्रेमी थे, जो देश की इस दुर्दशा पर आँसू बहा रहे थे। मुस्तफ़ा कमाल इन्हीं स्वतंत्र तुर्कों के सहयोगी और संचालक थे। मुस्तफ़ा कमाल कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों की नीयत समझते थे। कमाल स्वंय जाकर सुल्तान से मिले, सुल्तान को बहुत समझाया, पर जब बुरे दिन आते हैं तो कोई भली बात अच्छी नहीं मालूम होती। सुल्तान ने जब कमाल की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीख न मानी, तो कमाल ने कुछ दिनों के लिये छुट्टी ले ली, और कुस्तुन्तुनिया से विदा हो गये।

मुस्तफ़ा कमाल कुछ दिवस इधर उधर तुर्की में घूमते रहे, और युवा तुर्कों में देश प्रेम की आग सुलगाने लगे। बहुतेरे तुर्कों ने कमाल का साथ दिया। इसके बाद कमाल अनातुलिया प्रदेश में पहुँच कर समस्त छोटी मोटी सैनिक शक्तियाँ एकत्र करने लगे और उन्होंने सबसे पहले यूनानियों को स्मर्ना से भगाने का निश्चय किया। उनकी सैनिक तैयारियाँ देखकर राष्ट्रीय युवा तुर्कों के दिल बहुत बढ़ गये थे।

१३
एक नवीन परिचय

इन्हीं दिनों में जबकि मुस्तफ़ा कमाल अनातूलिया में सैनिक संगठन कर रहे थे, उनका एक सुन्दरी कामिनी से और नवीन परिचय हुआ। यह सुन्दरी स्मर्ना नगर के एक धनाढ्य सौदागर की पुत्री थी। स्मर्ना में जब यूनानियों ने अति अत्याचार किये, तो बहुतेरे तुर्क नर नारी भागकर अनातूलिया में चले गये थे।

वह एक बड़ी चतुर, गुणवती और विद्वान कामिनी थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने यूरोप में खूब भ्रमण किया था, फ्रान्स की राजधानी पेरिस में रह कर उसने शिक्षा पायी थी। उसका रूपरंग स्वर्गीय अप्सरा की तरह मुग्धकारी था। उसकी बोलचाल चतुर से चतुर और साधारण से साधारण पुरुष को भी मोहित किये बिना न रहती थी।

वह, अस्तव्यस्त दशा में कमाल के सामने गयी। उसने यूनानियों के अत्याचार की दुःखभरी कथा बड़े ही कारुणिक शब्दों में कमाल को सुनायी। यूनानियों की लूट मार और दमन कृत्य सुनाते सुनाते उसका सुन्दर मुख लाल हो जाता था और नेत्रों से आँसू बहने लगते थे। कमाल ध्यान पूर्वक उसे देखते थे, और उसकी बातें सुनते थे।

कमाल ने पूछा—तुम्हारा नाम क्या है? तुम यहाँ कब आयी?

"मेरा नाम है, लतीफा हानम्! मैं कल यहाँ आयी हूँ।" उसने कमाल की तरफ़ देखकर कहा।

"तुम स्मर्ना से यूनानियों के कष्ट के कारण क्या यहां भाग आयी हो! तुम्हारे माता पिता कहाँ हैं?"

"मैं किसी तरह अपनी जान बचा कर यहाँ भाग आयी हूँ। मेरे माता पिता भाई सब वहाँ स्मर्ना में कैद हैं। नगर में सर्वत्र यूनानियों के कड़े पहरे हैं। यूनानियों का स्मर्ना में इतना भीषण आतङ्क छाया है, कि नगरवासी काँप रहे हैं। सैकड़ों घर लूट कर उन्हों ने तबाह कर दिये।"

मुस्तफ़ा कमाल क्रुद्ध होकर दांत पीसने लगे। उन्होंने कहा—"क्षुद्र यूनानियों का इतना साहस! यदि मेरे दम में दम है तो मैं इन लुटेरों को अवश्य परास्त करके निकालूँगा। पराजित तुर्की को सब ईसाई राष्ट्र मिलकर आपस में बांट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहे हैं। पर, मैं यदि जीवित हूँ, तो उनकी यह कुत्सित लालसा कभी पूर्ण न होने दूंगा।"

लतीफ़ा हानम् ने कहा—"इस समय वास्तविक स्थिति यही है, कि समस्त ईसाई शक्तियों ने मिलकर तुर्की को हड़प लिया। मैं जब गत वर्ष पेरिस में अध्यन करती थी, तो मैंने वहाँ विश्वस्त सूत्र से यह सुना था, कि यूनान का प्रधान मंत्री एम. वेनिज़िलोज़ फ्रान्स को अपने पक्ष में मिलाने का उद्योग कर रहा है। यही पाजी वेनिज़िलोज़ लन्दन में जाकर अंग्रेज प्रधान मंत्री मिस्टर लायड जार्ज से भी मिला था। सब से अधिक अंग्रेज़ यह चाहते हैं, कि तुर्की पर उनका अधिकार हो जाय और इसमें यदि फ्रान्स तथा इटाली भी शरीक हो जाँय तो अंग्रेज प्रसन्न हैं। मैं आपको यह विश्वस्त समाचार देती हूँ कि यूनानियों की सारी सैनिक तैयारी के पीछे अंग्रेजों का छिपा हाथ है, और अंग्रेज सब तरह यूनानियों की सहायता कर रहे हैं।"

"मैं जानता हूँ, कमाल ने कहा—"मैं यह भी जानता हूँ कि यूनानियों को तोपें और गोली गोले अंग्रेजों ने दिये हैं। पर कुछ परवाह नहीं। यदि ईश्वर हमारे साथ है तो हम अपने सहस्त्रों शत्रुओं को भी परास्त कर देंगे। हम फिर तुर्की को एक महान राष्ट्र बनायेंगे।"

लतीफ़ा हानम् वहीं कमाल के साथ रहने लगी। उसकी चपलता, योग्यता और नीति निपुणता तथा देशभक्ति की बातें सुनकर कमाल बहुत प्रसन्न होते थे। और उसे आदर की दृष्टिसे देखते थे। यह नवीन विचार वाली तुर्क बालिका थी। तुर्की स्त्रियाँ बहुत पर्देनशीन होती हैं, उन्हें देश सेवा, समाज सेवा और राजनीतिक बातें नहीं सिखायी जाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी। वे घरों के पर्दे में रह कर वाह्य जगत की बातों से अज्ञान रहती थीं। परन्तु इधर कुछ दिनों से उत्साही लड़कियाँ विद्या प्रेम करने लगीं। और विदेशों में जा जाकर विद्या अध्यन करने लगीं। मुस्तफ़ा कमाल ने देखा कि लतीफ़ा हानम् भी एक ऐसी ही उन्नतिशील युवती है, जिसे देश प्यारा है, और जो राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बातें जानती है। उसकी बातें और राय कमाल को पसन्द आती थीं। वह कमाल की सभाओं में भाग लेती थी और प्रत्येक प्रश्न पर बहस करके अपनी निष्पक्षराय कायम करती थी।

कमाल के राष्ट्रीय तुर्कों का संगठन दिनोंदिन बढ़ने लगा, और कमालने एक बहुत बड़ा सैनिक दल तैयार कर लिया। गेलीपोली नामक स्थान में कुस्तुन्तुनिया की तुर्क सरकार का भारी शस्त्रागार था। कमालके सैनिक तुर्कों ने एक दिन अचानक उस शस्त्रागार पर आक्रमण कर दिया। थोड़े से तुर्क रक्षक जो वहाँ थे, उन्हें मार भगाया। कमाल के हाथ अस्सी हज़ार बन्दूकें, बहुत सी तोपें और कई लाख कारतूस लगे। इन शस्त्रों से कमाल का सैनिक संगठन और भी सुदृढ़ हुआ। समस्त स्वतंत्रता के प्रेमी तुर्क कमाल के झंडे के नीचे एकत्र हो गये।

अङ्गोरा नामक एक पुराना पहाड़ी नगर है, जहाँ कमालने अपनी राजधानी स्थापित की। अङ्गोरा में तुर्कों ने नयी राष्ट्रीय महासभा स्थपित की और पूरी सफलता के साथ कार्य्य करने लगे। इसके बाद कमाल ने बोल्शेविक रूस से भी संधि करली। बोल्शेविकों के प्रधान आचार्य्य श्रीमान निकोलाय-लेनिन से भेंट की। लेनिन ने सब तरह सहायता करने का बचन दिया। कमाल की स्थिति अब बहुत प्रौढ़ होगयी थी। कमाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने अपना सम्बन्ध कुस्तुन्तुनिया से न तोड़ा था, तार के द्वारा वह कुस्तुन्तुनिया का हाल नित्य जान लेते थे।

परन्तु अंगरेजों को कमाल की बढ़ती हुई शक्ति से अब भय लगने लगा। पहले उन्होंने यह न समझा था, कि कमाल इतना शक्तिशाली हो जायगा। पर अब अंग्रेज चाहते थे कि कमाल का सम्बंध कुस्तुन्तुनिया से न रहे। इस लिये अंगरेजों ने कुस्तुन्तुनिया के तार डाक और युद्ध विभाग के कर्य्यालयों पर अधिकार कर लिया। कमाल का अब कोई सम्बंध राजधानी से न रह गया था।

कमालिस्ट तुर्कों को परास्त करने के लिये अंग्रेज अब उपाय सोचने लगे। कमालिस्टों पर तरह तरह के अपवाद लगाये गये और उन्हें विद्रोही कह कर बदनाम किया गया। जब कोई उपाय सफल न हुआ, तब पश्चिमी अनातूलिया में उनके बिरुद्ध एक छोटीसी सेना भेजी गयी, जिसे कमालिस्टों ने सहजही में परास्त कर दिया।

इसके बाद सन् १९२० के अप्रैल मास में मुस्तफा कमाल पाशाने राष्ट्रीय तुर्क महासभा के प्रधान (प्रेसिडेन्ट) की हैसियत से संसार की प्रत्येक सरकार के नाम एक सूचना पत्र भेजा। इस पत्र में कमाल ने लिखा था, कि "हमारे देश पर मित्रराष्ट्रों ने अन्याय पूर्वक अधिकार कर लिया है, इस लिये स्वदेश को स्वतंत्र करने लिये हम राष्ट्रीय तुर्क अपने पैरों पर खड़े हुए हैं। हमारा दावा अपनी स्वतंत्रता के लिये है। और हम किसी बिदेशी राष्ट्र का तुर्की में हस्तक्षेप न सहन करेंगे।"

कमाल की इस घोषणा पर संसार के अहङ्कारी राष्ट्र हँसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगे, परन्तु सत्यकी विजय में विश्वास करने वालों ने समझा कि तुर्की अवश्य स्वतंत्रता लाभ करेगा।

१४
रमणी हृदय का साहस

कमाल के इन सब कार्य्यों में स्मर्ना की सुन्दरी युवति लतीफ़ा हानम् कमाल की मुख्य सहचरी थी। वह राष्ट्रीय तुर्कों के आन्दोलन और संगठन में भाग लेती थी, और उन्हें खूब उत्साहित करती थी। कमाल उसके सहयोग से प्रसन्न और सन्तुष्ट रहते थे। वह कभी कभी किसी विशेष बात पर हानम् की प्रशंसा भी करते थे, जिसे सुनकर हानम् प्रसन्न होती थी या नहीं, पर उसका चेहरा उस समय अत्यन्त गम्भीर हो जाता था—जिस गम्भीरता से एक विलक्षण मृदु मनोहरता प्रकट होने लगती थी। उस रूप रस भरे मुखड़े को कमाल देखते रह जाते थे।

एक दिन रात्रि समय कमाल अपने सैनिक सदर मुकाम में बैठे युद्ध के नकशे देख रहे थे, और मन ही मन कुछ सोचते थे। बगल की एक कुर्सी पर लतीफ़ा हानम् भी बैठी नक़शा देख रही थी। कमाल ने नकशे पर उँगली से दिखाते हुये कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"यह देखो लतीफ़ा ! यह स्मर्ना का मार्ग है। हमारी सेनाएं इन्हीं पहाड़ी मार्गों से जाकर यूनानियों पर हमला करेंगी।" लतीफ़ा हानम् भी उस मार्ग को देखने लगी।

कमाल कुछ सोचने लगे। फिर उन्होंने उससे कहा—"अच्छी लतीफ़ा ! तुम मेरा एक काम करोगी ? हाँ, तुम्हें करना होगा। बोलो, करोगी या नहीं ?

लतीफ़ा अपनी छाती पर हाथ रख कर कहा—"हाँ, मैं करूँगी। आप जो आज्ञा दें, मैं करने के लिये तैयार हूँ।"

कमाल ने कहा—"तुम मेरा एक पत्र लेकर स्मर्ना जाओ। पत्र अत्यन्त आवश्यक है। स्मर्ना में एक तुर्की सर्दार को वह पत्र दे देना।"

निर्भीक लतीफ़ा बिल्कुल न डरी। उसने कहा—"आप मुझे पत्र दीजिये। मैं अवश्य जाऊँगी।"

कमाल ने कहा—"मैं तुम्हारे साथ अपना एक तुर्क सेनापति कर दूंगा। पत्र तुम अपने पास रखना। वह सेनापति तुम्हें उस सर्दार के पास पहुँचा देगा। परन्तु तुम यदि स्मर्ना पहुँचते ही गिरफ्तार कर ली गयीं, तब ?"

"तो डर क्या है ? आपके कार्य्य के लिये मैं गिरफ्तार करली जाऊँ, मुझे यदि अपना प्राण भी दे देना पड़े, तो चिन्ता क्या है।" लतीफ़ा ने शुद्ध चित्त से कहा। फिर वह कमाल को आतुर हो देखने लगी।

कमाल उसके उत्तर से बहुत प्रसन्न हुये। रमणी हृदय इतना भोला मगर साहसी है ! अपनी कुर्सी और उसके निकट खींच ले गये। उन्होंने मुस्करा कर पूछा—"सुन्दरी ! तुम्हारे प्राण का मूल्य कितना है। बता सकती हो ?"

इस प्रश्न से हानम् कमाल को देख कर कुछ लज्जित सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो गयी। उसने गर्दन झुकाये हुये सलज्ज भाव से कहा—"तुर्की के उद्धार कर्ता के सामने मेरा प्राण तुच्छ है। इसका कुछ भी मूल्य नहीं है!"

कमाल ने कहा—"नहीं लतीफ़ा! तुम इतनी नाचीज़ नहीं हो तुम्हारे प्राण का मूल्य कमाल का एक प्राण है। क्यों लतीफ़ा! एक ही उद्देश्य के लिये दो प्राण किस तरह बलिदान करते हैं?"

लतीफ़ा ने कमल नेत्रों से एक बार कमाल की तरफ़ देख कर कहा—"आत्मबलिदान किस तरह से करते हैं? मैं कुछ नहीं जानती। मैं केवल तुर्की के प्राणात्मा की अनुगामिनी हो गयी हूँ। मैंने अपना तन मन उस पवित्र प्राणी पर उत्सर्ग कर दिया है। मैं उसी तुर्की के प्राणसर्वस्व के लिये आत्म-बलिदान करूँगी, जो मेरा भी प्राण सर्वस्व है!" कहते हुये लतीफ़ा के मस्तक और होटों पर पसीने आ गये, जैसे उसने कमाल के सामने अपने मन की कोई छिपी बात कह दी।

कमाल ने कहा—"ओ सुन्दरी! इस छोटे से प्यारे शरीर में तुमने करुणा और प्रेम का इतना महान विस्तार छिपा रखा है। क्या मैं तुम से यह पूछूँ, कि तुमने प्रेम को कैद कर लिया है? लतीफ़ा! यदि यह सच है तो मुझे यह मालूम भी न होने पाया, कि मैं कितने दिनों से तुम्हारे बेलौस, प्रेम का बन्दी बन गया हूँ!"

यह कहते हुए कमाल ने उसका एक हाथ पकड़ लिया। और उँगलियाँ चूम लीं। लतीफ़ा के स्थिर नेत्र कमाल को देखने लगे। क्षणभर के लिये कमाल कोमल कल्पना के क्षेत्र में अचेत से हो गये।

कमाल ने फिर तुरन्त ही हाथ छोड़कर ज़रा संभल कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"किन्तु लतीफ़ा ! याद रखना। हमारे प्रेम से भी परे और प्रिय कर्तव्य है-जो कर्तव्य ईश्वर ने हमारे हाथों में सपुर्द किया है। हम उस पवित्र कर्तव्य की रक्षा प्रेम से भी बढ़कर करें। कर्तव्य और प्रेम यही दो इस भौतिक संसार के सार हैं। हम एक में विजय पाने के लिये दूसरे की उपेक्षा नहीं कर सकते। यदि किसी मनुष्य के लिये इस जीवन में कुछ कर्तव्य न हो, तो समझ लो कि उसके प्रेम का दिखाव भी एक मिथ्या कल्पना और निरा ढोंग है। जिस मनुष्य ने कभी अपना कर्तव्य पालन करना नहीं जाना, वह क्या कभी स्वर्गीय प्रेम का आदर करना जानेगा ? नहीं, वह मनुष्य बिना पतवार की नौका की तरह संसार सागर में इधर उधर डोलता है। जिस कर्तव्य को कभी कभी हम कठोर समझ बैठते हैं; वही हमारी कठिन परीक्षा का शुभ अवसर है और उस अवसर को सच्चे प्रेमी ही काम में ला सकते हैं। कर्तव्य का पूर्णतया पालन करना ही सत्य प्रेम के जीवन को बनाये रखना है। तभी प्रेमी के आनन्द का वास्तविक विकास होता है।"

यहाँ पर कमाल कुछ ठहरे; लतीफ़ा ध्यानपूर्वक सुनती रही। कमाल ने फिर कहा-"देश का पुनरुत्थान ही हमारा इस समय एकमात्र कर्तव्य है। वह कर्तव्य जब तक पूरा पालन नहीं हो जाता, तब तक हमारे लिये एक क्षण भी आनन्द का नहीं है। क्यों लतीफ़ा ! समझती हो, मैं क्या कह रहा हूँ ?"

"हाँ प्रिय सखा ! समझती हूँ। तुम्हारी ओजस्वी वाक्य-धारा रोम रोम कँपा देती है।" लतीफ़ा ने कहा।

कमाल कुछ देर तक कर्तव्य पालन की आवश्यकता समझाते रहे। इसके बाद उन्होंने लतीफ़ा को स्मर्ना जाने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिये तैयार किया। "कल संध्या समय तुम मेरा पत्र लेकर, एक तुर्की सेनापति के साथ स्मर्ना जाना। यदि दुर्भाग्यवश यूनानी तुम्हें गिरफ्तार करलें, तो कुछ भयभीत न होना। उस समय यदि तुम पत्र नष्ट कर सको, तो नष्ट कर देना। यदि न नष्ट कर सको, तो भी कुछ चिन्ता न करना। तुम एक साहसी नवयुवती हो और मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास है। गुप्त षड्यंत्रकारियों की तरह सदा सावधान रहना, किसी विपत्ति से न डरना। हर एक काम चतुराई से निडर होकर करना।"

लतीफ़ा का रक्तवर्ण सौन्दर्य प्रदीप्त मुख जैसे निर्भीक और अपूर्व साहसी मालूम होता था। उसके चपल-सरस नेत्र कमाल को देखते हुए बिजली की तेजी की तरह चमक रहे रहे थे। वह न जाने कैसे, एक उछाहपूर्ण हृदय से कमाल की आज्ञा पूर्ण करने के लिये उत्सुक थी।

१५

दो षड़यंत्रकारी

रात्रि के अंधकार में दो षड़यंत्रकारी स्मर्ना की सीमा से कुछ दूर घोड़ों पर जारहे हैं। दोनों यूनानी वर्दी पहने हुए और मुँह पर निकाबें पड़ी हैं।

एक सवार ने कहा—"स्मर्ना अब प्रायःआध मील से भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कम दूरी पर है। हमारी यूनानी वर्दियाँ हमें छिपाने के लिये काफी हैं।"

दूसरे ने कहा—"परन्तु हमें अभी यूनानियों का सांकेतिक शब्द मालूम करना है।"

इतने ही में इन दोनों के मुख पर 'सर्चलाइट' का तीव्र प्रकाश पड़ा और चार यूनानी सवार इनकी ओर दौड़ते हुए आये। पर उनके मुख नकाबों से ढके थे, इसलिये सर्च-लाइट का प्रकाश व्यर्थ हुआ। दोनों सवारों ने अपने अपने तमंचे तुरन्त निकाल लिये थे।

चार यूनानी सवार बन्दूकें ताने हुए उनके निकट पहुँचे यूनानी सवारों ने डाँट कर पूछा—"तुम लोग कौन हो? हाथ ऊपर उठाओ!"

परन्तु, उन दोनों के हाथ में भरे तमंचे पहले ही से तैयार थे। दोनों ने दनादन गोलियाँ छोड़नी आरम्भ की। दो यूनानी सवार वहीं ढेर हो गये। एक का घोड़ा बिगड़ा और वह भाग निकला। चौथे सवार को दोनों ने काबू में किया।

एक नकाबपोश सवार ने अपने दूसरे साथी से कहा,—"तुम इस पर तमंचा लगाये रखो। अगर यह ज़रा भी हिले तो तुरन्त मार देना। मैं उस भागे हुए सवार को भी पकड़लाता हूँ, नहीं तो वह जाकर गड़बड़ मचायेगा।

इतना कह कर नकाबपोश ने उस सवार की ओर तेजी से घोड़ा दौड़ाया। वह यूनानी सवार स्मर्ना की सीमा की ओर भाग रहा था। नकाबपोश ने कुछ निकट पहुँच कर पीछे से उसे गोली मारी। निशाना ठीक लगा और वह सवार एक चीख मार कर घोड़े से गिर पड़ा। नकाबपोश ने पहुँच कर देखा कि—गोली उसके गले में लगी थी और वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दम तोड़ रहा था। नकाबपोश यह काम पूरा करके पीछे अपने साथी के पास लौटा। उसके आश्चर्य का कुछ ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि—वह चौथा सवार भी भूमि पर मुर्दा पड़ा है।

साथी नकाबपोश ने कहा—"तुम्हारे जाने पर यह यूनानी मेरे ऊपर झपटा और मैंने तत्काल उसे गोली मारदी।"

पहले नकाबपोश ने कहा—"अच्छा किया, अब हमें बहुत सुगमता हो गयी। आओ, अब हम इनकी तलाशी लें।"

दोनों ने मृतक यूनानियों की तलाशी ली। यूनानियों की जेब से एक एक कार्ड निकला, जिस पर लिखा था—'यू. वी.' एक, एक कार्ड दोनों नकाबपोशों ने अपनी २ जेबों में रख लिया और एक एक बन्दूक दोनों ने, यूनानियों की तरह अपने कंधों से लटका ली। उनके तमंचे और कारतूस की पेटियाँ भी ले लीं।

एक नकाबपोश ने हँसकर कहा—"अब हमारा काम पूरा हो गया। यही "यू० वी०" शब्द इनके सांकेतिक अक्षर हैं, जिनका अभिप्राय मैं समझता हूँ "यूनान की विजय।"

दोनों नकाबपोश यूनानी वर्दी पर तलवार, बन्दूक लगाये, ठीक यूनानी सैनिकों की तरह स्मर्ना की सीमा के निकट पहुँचे। सीमा पर यूनानियों की छावनियाँ पड़ी थीं। यूनानी सैनिक कर्मचारी उन दोनों को देख कर प्रश्न करने लगे, "कौन है?"

दोनों नकाबपोशों ने बेधड़क सांकेतिक अक्षर "यू. वी." कह दिये। यूनानियों ने समझ लिया कि कि ये हमारे ही साथी हैं जो गश्त लगाकर लौट रहे हैं।" फिर इनसे कोई प्रश्न न किया गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों नकाबपोश स्मर्ना नगर की ओर बढ़ने लगे। इन्होंने नगर में जाकर देखा, कि एक एक सड़क और गली में शस्त्रधारी यूनानी सैनिकों का पहरा लग रहा है। नगर से ऐसी भयानक उदासी टपक रही थी, जैसे सारा नगर मातम् में डूबा हुआ है।

एक तंग गली में जाकर दोनों सवार एक छोटे से पुराने मकान के दर्वाजे पर ठहरे। एक सवार ने दर्वाजे के कोने में लगे एक बटन को दबाया, जिसके दबने से मकान के अन्दर घन्टी बजने लगी। एक बड़ा हृष्ट पुष्ट तुर्क जवान दर्वाजा खोलने आया। एक सवार ने धीरे से कहा—"क्यों जाबिर! क्या हाल है?"

जवान जिसका नाम जाबिर था, बाहर निकल आया। यही एक वीर तुर्क जवान स्मर्ना में रह गया है, जो अपने सौ सहयोगियों के साथ इस मकान में गुप्त रूप से रहता है। यूनानियों की नज़र से षड़यंत्रकारियों का यह गुप्तअड्डा अब तक छिपा है। मकान बाहर से देखने में छोटा, पुराना दीखता है, पर भीतर बहुत लम्बा चौड़ा था।

जाबिर ने कहा-"आइये सर्दार! अच्छे समय पर आये। आपसे बहुत बातें करनी हैं।"

दोनों सवार घोड़ों से उतर पड़े और अन्दर गये। मकान के भीतर कई दालान और कमरे थे। कोई पचास युवा तुर्क इधर उधर फैले काम कर रहे थे।

जाबिर दोनों नकाबपोशों को एक कमरे में ले गया और बातें करने लगा। उसने कहा—"सर्दार महाशय! अब सेनापति (यानी कमाल) स्मर्ना पर आक्रमण करने में बिलम्ब क्यों कर रहे हैं? मैंने अपना कार्य्य यहाँ सब ठीक किया है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नकाबपोश सर्दार ने कहा—"तुमने क्या किया है, ज़रा सुनाओ ?"

जाबिर—जिस दिन सेनापति का आक्रमण आरम्भ होगा, उसीदिन स्मर्ना के अन्दर यूनानियों के गोली गोलों के गोदामों में भयानक धड़ाका होगा। कई गोदामों को बारूद के फलीतों से उड़ा देने का मैंने पूरा प्रबन्ध कर लिया है। कल मैंने यूनानी रसद के गोदाम में अग्निकांड कराया था, जिससे शत्रु का बहुत सा अनाज नष्ट हुआ।

सर्दार ने खुश होकर कहा—"शाबाश जाबिर ! तुम एक बहादुर आदमी हो। सेनापति (कमाल) भी कभी कभी तुम्हारे अपूर्व साहस की प्रशंसा करते हैं। घबराओ नहीं, सेनापति अब शीघ्र ही ऐसा भीषण आक्रमण करने वाले हैं कि यूनानी सेना याद करेगी, कि कभी तुर्कों से काम पड़ा था। अच्छा अब सेनापति ने एक और आवश्यक कार्य्य तुम्हारे सुपुर्द किया है, उसे पूरा करो।"

यह कहकर सर्दार ने अपने साथी नकाबपोश की तरफ़ देखा। उसने अपने कोट के भीतरी जेब से एक पत्र निकाल कर जाबिर को दिया, जिसमें लिखा था:—

"प्रिय सहयोगी,

यूनानी और अङ्गरेजों के तार के सिलसिले काट दो। यह कार्य्य तुरन्त होना चाहिये। क. "

इसी समय गली में शोर गुल सुनायी दिया। जाबिर ने जलती हुई मोमबत्ती से पत्र जला डाला। गली में शोर गुल बढ़ने लगा। जाबिर का एक तुर्क जो हर समय एक गुप्त खिड़की में से बैठा गली का हाल चाल देखता था, दौड़ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ आया। उसने जाबिर से घबराकर कहा—"बहुत से यूनानी सैनिक इस गली के मकानों की तलाशी ले रहे हैं। उनकी संख्या प्रायः ४०-५० होगी।"

जाबिर ने चौंककर कहा—"यह ठीक नहीं हुआ। कहीं वे इस मकान की भी तलाशी न लें। खैर, हमें प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये।"

तुर्क सर्दार ने कहा—"परन्तु, तुम युद्ध किसी भी हालत में न करना।"

जाबिर ने कहा—"यदि वे भीतर घुस ही आये, तो बिना युद्ध किये काम न चलेगा।"

गली में शोर गुल बढ़ने लगा। जाबिर ने अपने सौ जवानों को आज्ञा दी, कि तुम लोग अपनी बन्दूकें लिये सुरंग में छिपे तैयार रहो। जाबिर और दोनों नकाबपोश भी सुरंग के एक कोने में छिप गये। मकान का दर्वाजा ज़ोर ज़ोर से से पीटा जा रहा था। मकान की सुरंग में सब लोग छिप गये थे; केवल एक तुर्की लड़का रह गया था। दर्वाजा बहुत पीटे जाने पर लड़के ने जाकर दर्वाजा खोल दिया।

यूनानियों के सैनिक दल धड़धड़ाते हुए भीतर घुस आये। उनके सेनानायक ने लड़के से डांटकर पूछा—"इस मकान में कौन रहता है?"

लड़के ने सरलता से कहा—"मैं ही रहता हूँ।"

सेना नायक फिर ज़ोर से गर्ज कर बोला—"बदमाश लड़के! सच बता, नहीं तो अभी गोली मार दूँगा।"

परन्तु लड़का कुछ न बोला। तब यूनानी नायक ने अपने सैनिकों को आज्ञा दी, कि मकान की तलाशी लो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरंग में छिपे हुए जाबिर ने तुर्क सर्दार से कहा–"देखिये, यूनानियों ने तलाशी लेनी आरम्भ की। वह जो सामने बड़ा कमरा दीखता है, वह हमारा शस्त्रागार है। उसमें बन्दूकें बीस तोपें और गोली गोले हैं। देखिये! देखिये! यूनानी उस दर्वाजे को तोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं।"

जाबिर ने घबड़ाकर अपने सौ जवानों से कहा––"अब ठहरने का मौका नहीं है। गोलियां चलाओ। परन्तु सावधान! एक गोली भी उस शस्त्रागार की दीवार पर न लगे।"

१६
यूनानियों की कैद में

यूनानी सैनिक उस शस्त्रागार के दर्वाजे को तोड़ने का प्रयत्न कर रहे थे। इतने ही में पचास तुर्कों ने पीछे से उन पर गोलियाँ चलायीं। बहुत से यूनानी वहीं गिरकर ढेर हो गये। शेष बीस पचीस यूनानियों ने पचास बन्दूकधारी तुर्कों के सामने हथियार डाल दिये। तुर्कों ने सब यूनानियों को बांध कर एक कमरे में कैद कर दिया।

गोलियों की आवाज़ से पास ही यूनानी छावनी में सन सनी फैल गयी। गली में बहुतेरे मनुष्यों की भीड़ लगी थी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिनमें अधिकांश यूनानी जासूस थे। इन जासूसों ने तुरन्त छावनी में पहुँचकर ख़बर दी, कि गली के छोटे मकान में यूनानी दल घुसे, पर अन्दर से फिर कोई बाहर न निकला। हमें उस मकान पर पहले ही से सन्देह था और वही षड्यंत्रकारी तुर्कों का अड्डा मालूम होता है। उसी मकान के अन्दर एक बार गोलियों की बाढ़ छूटी, फिर कोई आवाज़ न आयी।

जासूसों से यह समाचार पाकर यूनानी सेनापति बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने चार सौ सैनिकों का एक दल मकान पर आक्रमण करने के लिये भेजा।

इसी बीच में दोनों नकाबपोशों ने जो यूनानी वर्दियाँ पहने थे, मकान से बाहर निकलने का उद्योग किया। पर, इसी समय यूनानी फ़ौजों के दल पहुँच गये और धड़धड़ाते हुए भीतर घुसने लगे। इसलिये वे दोनों फिर तुरन्त अन्दर चले गये। अन्दर सौ तुर्क जवान बन्दूकें छतियाए खड़े थे। दोनों ओर से धूआँधार गोलियाँ चलने लगीं मकान के चौड़े आंगन में कोई दस मिनट तक घोर युद्ध होता रहा। सामने बहुसंख्यक यूनानियों को देखकर तुर्क सर्दार ने ज़ाबिर से कहा—"बस, अब लड़ना व्यर्थ है, हथियार डाल दो। हम सब गिरफ़्तार होगये।"

सैकड़ों यूनानियों की अविराम गोली वर्षा के सामने मुट्ठी भर तुर्क पस्त होगये। बहुतेरों की लाशें गिरीं। अन्त में तुर्कों ने आत्मसमर्पण करदिया।

इसके बाद यूनानियों ने सारे घर की तलाशी ली। तुर्कों के अस्त्रशस्त्र बरामद किये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यूनानी सेना नायक ने आगे बढ़कर तुर्कों से कहा-"क्यों पाजी कुत्तों! युद्ध से जी भर गया! सरकारी सैनिक जब घर की तलाशी लेने आवें, तो पीछेसे कायरों की तरह उनपर गोलियाँ चलाना तुम्हारा काम है! चलो आज ही तुम सब तोप पर उड़ा दिये जाओगे।"

जाबिर ने भी कड़ककर कहा-"नामर्द लुटेरो! दूसरे के देश पर अधिकार कर लेना तुम्हारा काम है! थोड़े से तुर्कों पर इतने अधिक सैनिकों का हमला करना तुम्हारा साहस है!" नकाबपोश सर्दार ने इशारे से जाबिर को चुप रहने के लिये कहा। जाबिर फिर चुप होगया।

यूनानियों ने सब तुर्कों को मकान से बाहर निकाला। उन्हें दो कतारों में छावनी की ओर ले चले। सेना नायक दो नकाबपोशों को यूनानी वर्दी में देखकर चकित हुआ और उसने कड़क कर पूछा-"तुम दोनों छद्मवेषी भेस में कौन हो? यह यूनानी वर्दियाँ तुमने कहाँ से पायी?"

पर उन दोनों ने कुछ उत्तर न दिया। तब नायक ने झपट कर दोनों की नकाबे मुखोंपर से हटायी। देखा-एक तुर्क जवान है; दूसरे का मुख सुन्दर बालक सा है। यह बालक और कोई नहीं, कमाल की सुन्दरी सहचरी लतीफ़ा हानम् थी। लतीफ़ा को मन ही मन बड़ा दुःख होरहा था, कि कमाल के जिस आवश्यक कार्य्य के लिये आयी थी, वह कार्य्य पूरा न हुआ।

यूनानी सेना नायक सब तुर्क कैदियों को सैनिक सदर मुकाम की ओर ले चला। सदर मुकाम पहुँचने पर सर्व प्रथम यूनानी वर्दीधारी तुर्क सर्दार और लतीफ़ा प्रधान सेनापति के सामने पेश किये गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

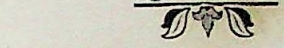

स्थूल शरीर वाला विकट यूनानी सेनापति दोनों को देख कर शैतान की तरह मुस्कराने लगा। उसने अपने कराल नेत्रों से दोनों की ओर देखकर कहा—"क्यों, तुमने देखा, हमारे यूनानी जासूस कैसा ठीक पता लगाते हैं! परन्तु तुम दोनों बदमाशों ने यूनानी वर्दियाँ पहनकर अपने को छिपाने का खूब उद्योग किया। तुम तुर्कों की बड़ी पाजी और नीच जाती है, अभी हम तुम्हें नेस्तनाबूद करेंगे!"

इतना कह कर यूनानी सेनापति भयंकर मुद्रा से दोनों को देख देख कर हँसने लगा। उसने दोनों को वर्दियाँ उतारने की आज्ञा दी और शेष सब कैदी तुर्कों को बन्दीगृह में रखने की आज्ञा दी।

लतीफ़ा हानम् ने, अपने साथी तुर्क को जब वर्दी उतारते देखा तो वह भी उतारने लगी। सिर की फ़ौजी टोपी उतारने पर लतीफ़ा के लम्बे केश लटक पड़े। कोट उतारने पर वक्ष-स्थल के ऊपरी बटन स्वयं ही खुल पड़े।

यूनानी सेनापति बड़ी ज़ोर से ताली मार कर ठठा कर हँसा। "अहाहा! यह तो सुन्दरी कामिनी षड़यंत्र कारी भेष में आयी है। आओ सुन्दरी! ईश्वर ने तुम्हें मेरे लिये भेजने की असीम कृपा की है।"

लतीफ़ा बेपरवाही से अन्य ओर देखने लगी। उसके साथी तुर्क सरदार ने सेनापति से कहा—"आप एक बीर सेनापति मालूम होते हैं! एक निरीह सभ्य स्त्री से इस प्रकार बातें करना आपको शोभा नहीं देता!"

सेनापति ने गुरेर कर कहा—"वाह, यह स्त्री निरीह और सभ्य है, मुझे मालूम ही न था। तभी यूनानी वर्दी पहन कर हमारा भेद लेने आयी थी! हाय सुन्दरी! भेदिये का काम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारा नहीं है ! तुम तो आज मुझे अपने प्यारे प्यारे हाथों से अंगूरी शराब पिलाओ। दोनों जहान का मज़ा तुम्हारे एक पैमाने में है ! अच्छा, तुम यह बता दो कि तुम कौन हो ? हाँ, तुम्हारे कानों में यह हीरे के 'रिंग' हैं, या मिथ्या कांच के 'रिंग' पहन कर अपने रूप की चमक चमका रही हो ! ज़रा मेरे पास आकर मुझे दिखाओ !"

सेनापति की यह चेष्टा देखकर लतीफ़ा के दिमाग़ में एक बात आयी, उसने सोचा, कि यह मनुष्य अवश्य लालची मालूम होता है। उसने कहा--"हाँ, यह हीरे के 'रिंग' हैं, आप ले लीजिये।" लतीफ़ा ने दोनों 'रिंग' उतार कर उसे दे दिये। और फिर कहा--"मैं आपको सच सच अपना हाल बताती हूँ। मैं यहीं स्मर्ना के अमुक धनाढ्य व्यापारी की लड़की हूँ, यदि आप मुझे और मेरे साथी को छोड़ दें, तो मेरे पिता आपको पचास हज़ार रुपये इनाम देंगे।"

इतने रुपयों की आवाज़ ने लालची सेनापति के हृदय में एक सुख की झनकार पैदा कर दी। उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और अपने होंट चाटने लगा।

"नहीं पचास हज़ार तो बहुत थोड़े हैं। एक लाख रुपये दो, तो मैं तुम दोनों को निर्विघ्न तुम्हारे घर पहुँचा दूँ।" सेनापति ने हाथ पसार कर कहा।

लतीफ़ा ने प्रसन्न हो कहा--"अच्छा एक लाख दूँगी। आप हम दोनों को पहुँचा दीजिये।"

सेनापति मनमें सोच रहा था, कि जन्म भर सेना में नौकरी की, लाखों बार जान जोखिम में डाली, पर एक लाख रुपये की शक्ल कभी न देखी। इतने रुपये पाने के बाद तो मैं यह पैशाचिक सैनिक सेवा कभी न करूँगा। मज़े में स्त्री बच्चे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकर इटाली या इंग्लैण्ड चला जाऊँगा, और चैन की बंसी बजाऊँगा। चूल्हेभाड़ में गयी सेना की नौकरी!

सेनापति राज़ी हो गया। उसने लतीफ़ा और उसके तुर्क साथी को घर पहुंचाया। लतीफ़ा का घर स्मर्ना के विख्यात मुहल्ले में था, जिसमें धनाढ्य सौदागरों की ही प्रायः बस्ती थी। इतने दिनों के बाद पिता ने पुत्री को देखा, उसके आनन्द का पारावार न रहा। उसने खुशी से यूनानी सेनापति को एक लाख रुपये दे दिये।

यूनानी सेनापति ने लतीफ़ा के पिता को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा—"ख़बरदार, इस मकान से बाहर कोई मनुष्य न जाने पावे, न अन्दर आने पावे। यदि आज्ञा उलंघन की गयी तो आने जाने वाले मनुष्य को तुरन्त गोली मार दी जायगी।" इसके बाद सेनापति ने उस कोठी पर यूनानी सैनिकों का पहरा बैठा दिया। लतीफ़ा हानम् का पिता भय और घबराहट के मारे कुछ बोल न सका।

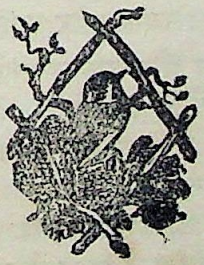

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१७

(देशभक्त तुर्कों की तैयारियाँ)

Hast thou heard the call. O mother ? Arise
for march of the day.
Hast thou heard the trumpet, mother, blown
from the depths of the Soul ?

मुस्तफ़ा कमाल, अपनी राजधानी अङ्गोरा में महान सैनिक संगठन करने में व्यस्त थे। पचासों हज़ार तुर्क दिन रात क़वायद करते थे। सारे नगर में और दूर दूर पहाड़ियों पर तुर्कों की विशाल तोपें, चलते फिरते रिसाले और सैनिक दल दृष्टि गोचर होते थे। मधु मक्खियों के छत्ते की तरह कर्मशील तुर्कों से नगर भरा था। सैनिक संगठन, और फ़ौजी तैयारी के सिवाय और वहाँ कुछ भी न था।

उन तुर्कों ने फ्रान्स और रूस से तोपें, बन्दूकें, गोले और जंगी हवाई जहाज इत्यादि मंगवाये थे। विशेष सहायता रूसी बोल्शेविकों से मिली। रूसी सीमा भी अङ्गोरा के बिल्कुल ही निकट है। अङ्गोरा की तुर्क राष्ट्रीय महासभा ने, जिसके अध्यक्ष मुस्तफ़ा कमाल पाशा थे, रूस से ऐसी संधि की थी, जिसके अनुसार तुर्की की विपत्ति में रूस, और रूस की विपत्ति में तुर्की साथ अवश्य दे। रूस से ऐसी गहरी मित्रता होने के बाद तुर्कों को किसी शस्त्र या वस्तु की कमी न रही। रूस की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजधानी लेनिनग्राड (पीट्रोग्राड) और मास्को तथा अङ्गोरा से बेतार का और हवाई जहाजों का सम्बन्ध लगा था।

कमाल ने देखते देखते समस्त शस्त्रों से अपने सैनिक दल सुसज्जित कर लिये। और इस महान तैयारी की खबर किसी को न लगने पायी। अंगरेज, फ्रान्सीस, या यूनानी तुर्कों के बल का अनुमान भी न कर सकते थे। ये सब राष्ट्र कमालिस्ट तुर्कों को निर्बल ही समझते थे। पर कमालिस्टों का बल समुद्र की तरह बढ़ रहा था। रूस से तो अस्त्र शस्त्र आते ही थे और फ्रान्स ने भी न जाने किस झाँसे और लालच में आकर तुर्कों के हाथ अस्त्र बेचना स्वीकार किया, जिसके लिये बाद में फ्रांन्स को ही पछताना पड़ा।

तुर्कों ने सन् १९२० के मार्च में शिलीशिया पर आक्रमण किया। फ्रान्सीसों के लिये शिलीशिया एक लूट का माल था, जहाँ महायुद्ध के बाद फ्रान्सीसों का क़ब्ज़ा वहाँ हुआ था। हलब के निकट दो महीने तुर्कों ने घेरा डालने के बाद फ्रान्सीसों को बुरी तरह परास्त किया। दजला और फ़रात नदियों के मध्य में तुर्कों ने फ्रान्सीस पल्टन को घेर लिया, और अन्त में उस पल्टन को परास्त होकर पीछे हटना पड़ा। इसी तरह तुर्कों ने कई स्थानों में फ्रान्सीस फ़ौजों को हराया और अन्त में फ्रान्सीसों को शिलीशिया ख़ाली करके निकल जाना पड़ा।

इसके बाद मुस्तफ़ा कमाल को सेनाओं ने यूनानियों पर आक्रमण आरम्भ किया। यूनानी एशियामाइनर (स्मर्ना) के अतिरिक्त थ्रेस प्रदेश में भी जा डटे थे। वे अपने विजय के अभिमान में फूले थे और समझते थे, कि क्षुद्र तुर्क सेनाओं को हम पल भर में परास्त कर देंगे। यहाँ तक कि, इंग्लैण्ड के बड़े बड़े राजनीतिज्ञ और रणपंडित भी यही समझते थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि एशियामाइनर में तुर्कों को परास्त करने के लिये यूनानी यथेष्ट बलशाली हैं।

परन्तु, "अन्तिम भयानक घड़ी आयी। कमालिस्ट तुर्कों ने यूनानियों पर आक्रमण किया। एक्की शहर के उत्तर में दोनों सेनाओं में घोर घमासान संग्राम हुआ। बीस हज़ार तुर्कों के सामने अल्प संख्यक यूनानी फ़ौज को बुरी तरह पिटना पड़ा। यूनान नरेश का एक भाई भी इस युद्ध में मारा गया। इसके बाद यूनानियों को करहिसार और कई आवश्यक स्थान ख़ाली करने पड़े। कई हज़ार यूनानी योद्धा हताहत हुए और तुर्कों ने कैद कर लिये। बड़े बड़े यूनानी सेनापति या मारे गये, या गिरफ़्तार कर लिये गये।

प्रायः सवालाख तुर्क सेना एक स्थान के बाद दूसरा स्थान विजय करती हुई एशियामाइनर में बढ़ने लगी। तुर्क तोपों के भयंकर गोले यूनानियों के दिल दहलाने लगे। हज़ारों यूनानी योद्धाओं की लाशें गिर रही थीं। पहाड़ियों की घाटियों से तुर्क सेना इस तरह भीषण गोलबारी करती हुई आगे बढ़ी, कि यूनानी चारो ओर से घिर गये, जिन्हें तुर्कों ने कैद कर लिया और उनके हथियार छीन लिये।

विजय की देवी ने मुस्तफ़ा कमाल का हाथ चूमा। सारे संसार में यह समाचार फैल गया, कि कमालिस्ट तुर्कों ने एशियामाइनर में यूनानियों को पूर्ण रूप से परास्त कर दिया।

विजयी तुर्क रिसाले स्मर्ना में घुसे। स्मर्ना में थोड़े से यूनानी सैनिक पहरेदार बचे थे, जो इधर उधर भागने लगे, पर भागने के लिये स्थान न मिलता था?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१८

यूनानियों का युद्ध और पराजय

स्मर्ना में लतीफ़ा हानम् अपने मकान में क़ैद के दिन बिता रही थी। यूनानी पहरेदार उसकी कोठी के हर फाटक का पहरा देरहे थे। कमाल का साथ छूट जाने से लतीफ़ा मन ही मन बहुत दुःखी और सन्तप्त हो रोती थी।

उस दिन लतीफ़ा कोठी के बरामदे में बैठी उत्तर दिशा को देख रही थी, जिस दिन कमालिस्ट स्मर्ना की सीमा के निकट यूनानियों को मारते काटते आगे बढ़ते चले आरहे थे। लतीफ़ा ने सहसा देखा, कि यूनानी पहरेदार भयभीत हो भागने लगे।

लतीफ़ा की समझ में नहीं आया, कि पहरेदार एकाएक क्यों भागने लगे। वह कौतुक देखने के लिये नीचे उतर आयी, उसने एक यूनानी पहरेदार से पूछा, कि तुम कहाँ भाग रहे हो?

वह पहरेदार बदहवासी से चिल्लाकर कहने लगा—"अरे! तुर्क आरहे हैं! हाय, मैं कहा भागूँ! तुर्क हमें पकड़तेही मार डालेगें। हाय! मैं व्यर्थ सेना में भर्ती हुआ। मेरे जोरू बच्चे मेरे बिना तड़प तड़प के मर जायँगे। उन्हें कौन रोटी खिलायेगा! अरे बाप रे! तुर्क आये! मैं कहाँ छिपूँ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यूनानी सैनिक की यह दशा देखकर लतीफ़ा हानम् को बड़ा आश्चर्य हुआ। तुर्क अबतक कहीं नहीं दीखते थे। तुर्कों के आगमन का समाचार सुनकर एकबार उसके हृदय में आनन्द की लहर उछल उठी। उसने उत्सुक होकर यूनानी पहरेदार से पूछा—"क्यों, तुर्क कहाँ आ रहे हैं? मुझे तो कहीं नहीं दीखते!"

यूनानी पहरेदार ने सिर पर हाथ मार कर कहा—"अभी आप दो मिनट में उन्हें देखेंगी! हाय! मुझे घर में छिपा लीजिये। मैं जन्म भर आपकी दासता करूँगा। परन्तु मेरी प्राण रक्षा कीजिये। अरे! अरे! वह देखिये! तुर्क आरहे हैं।"

यह कहता हुआ यूनानी पहरेदार बिना कुछ भी उत्तर सुने वहाँसे मैदान की तरफ सिर पर हाथ रखकर भागा। इतने ही में लतीफ़ा ने उत्तर दिशा में बड़ी गर्द उड़ती हुई देखी। और फिर रिसालों के दल आते हुए दिखायी दिये। बहु संख्यक तुर्की रिसालों के दल के दल भूखे शेरों की तरह दौड़ते चले आरहे थे। उनकी भारी तोपों की गड़गड़ाहट से पृथ्वी और आकाश कम्पायमान होरहे थे। सबसे आगे मुस्तफ़ा कमाल पाशा का घोड़ा था।

लतीफ़ा हानम् यह दृश्य देखकर फूली न समायी। वह दौड़ी हुई आगे बढ़कर बिजयी सेना की बहार देखने लगी। सारे नगर में तुर्कों ने फैलकर यूनानियों को गिरफ़्तार करना प्रारम्भ किया।

परन्तु मुस्तफ़ा कमाल विजय के गर्व में भरे हुए पहले लतीफ़ा हानम् के गृह की ओर आये। लतीफ़ा खड़ी देख रही थी। कमाल आते ही घोड़े पर से कूद पड़े और लतीफ़ा हानम को गले से लगा लिया। कमाल ने उसे दोनों हाथों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकड़ कर कहा,–"लतीफ़ा! मुझे क्षमा करना! मेरे कारण तुम्हें नीच यूनानियों की कैद भुगतनी पड़ी! परन्तु, अब हम और तुम दोनों स्वतंत्र हैं!" लतीफ़ा को बारम्बार प्यार करते हुए कमाल अपना अनुराग दिखाने लगे।

लतीफ़ा जैसे कमाल के स्पर्श से पुलकित हो उठी। उसने बड़े प्रेम से कहा–"मेरे वीर सेनापति! धन्य हो! मेरे प्रिय सहयोगी! तुम धन्य हो! मैं किस मुँह से धन्यवाद दूँ, जब कि मैं देखती हूँ कि अन्त समय तक आपके कार्य्यों में भाग लेनेका मुझे सौभाग्य न प्राप्त हुआ। मैं नित्य अकुलाकर रात्रि दिवस आपकी याद में निमग्न रहती थी, और आज का शुभ दिन बैठी देखती थी, कि कब आपकी विजयी सेना स्मर्ना को शत्रुओं से ख़ाली कराती है!"

कमाल ने कहा–"लतीफ़ा! तुम जब से यूनानियों की बन्दी हुई तभी से मेरा हृदय तुम्हारे लिये छटपटाता था–मैं अधीर रहता था। मैंने ही तुम्हें भेजकर कैद कराया, यह जब सोचता था तो मन सहस्रों सन्ताप से भर जाता था।"

लतीफ़ा इस समय किसके सामने खड़ी थी! किसके मधुर सान्तवनापूर्ण वाक्य सुन रही थी। हां, उसी विजयी तुर्क के सामने जो सारे तुर्की का प्राण है–जो उसका भी प्राण है। जिसने एक दिन अपने प्राण के साथ उसके प्राण का मूल्य लगाया था। जिसके साथ उसने कितनी ही रातें कार्य्य क्षेत्र में बितायी थीं। जिसके दिव्य भाषण और उत्तम विचार सुनकर लतीफ़ा का हृदय एक अनिर्वचिनीय प्रेम और भावना से पूरित हो रहा था। वही कमाल इस समय लतीफ़ा को भरे नेत्रों से देख रहा है–और वह कमाल को प्रेम की जादू भरी चितवन से देख कर मुग्ध कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमाल विजय के गर्वपूर्ण आनन्द में भरे थे—सामने लावरायमयी लतीफ़ा जैसे उनकी विजयका पुरस्कार रूप खड़ी थी।

"ओ वीराङ्गना!" कहते हुए कमाल ने उस प्रिय पारितोषिक को हृदय से लगा लिया। कमाल को यह बिल्कुल स्मर्ण न रह गया था, कि पहले वह किसी अन्य कामिनी को प्यार कर चुके हैं।

१६
वियोग की वेदना

Leave me not alone in my garden,
'Tis barren and drear and cold.
My sad heart is slowly breaking,
Its burden of love untold,
I'am restless and filled with longing,
The roses all speak of you,
You call—I am coming dearest,
In the lands where Love come true.

कमाल पाशा की बहुत दिनों से कोई खबर न पाने के कारण ख़ानम् अज़ीज़ा हर समय उनकी चिन्ता करती थी, वह चिन्ता करते २ अधमरी सी हो गयी थी। वह मन ही मन करुण विलाप और रोदन किया करती थी। उसके चित्त में वही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमाल प्रियतम् की। एक चिर वेदना बनी रहती-उसके हृदय में हर समय उसी 'प्रिय पुरुष' की याद, उसीके लिये विषाद-उसीके कारुणिक प्रेम की एक विह्वल मूर्ति सामने स्थिर रहती थी।

विशाल भवन के अन्तःपुर में अज़ीजा दुःखातर बैठी घन्टों सोचा करती थी। उसके पास कोई नहीं रहता था। क्योंकि उसने स्वंय ही शिताबी और अन्य बाँदियों को अपने पास आने से मना कर दिया था। रात्रि में उसे नींद नहीं आती थी-बहुत रात बीत जाने पर, कभी कभी रोकर वह सो जाती थी।

एक रात में उसने भयानक स्वप्न देखा। वह बहुत डरी। स्वप्न को सोचते हुए, सहमते हुए पलङ्ग से उठी। उसने शिताबी को बुलाकर स्वप्न का ब्योरा सुनाया। उसने कहा—"शिताबी! मैंने एक बड़ा बुरा स्वप्न देखा, जिसे देख कर भय के मारे मेरी बोटी बोटी थर्रा उठी। मैंने देखा, जैसे, सारे संसार में घोर युद्ध हो रहा है। कालके समस्त योद्धा दुर्दंड सेनाओंका संचालन कर रहे हैं, पृथ्वी को रक्त से स्नान करा रहे हैं। मुस्तफ़ा कमाल एक सफेद घोड़े पर सवार हो समस्त योद्धाओं को मारते काटते चले आ रहे हैं। यह सारा सामरिक दृश्य देख कर डर के मारे कलेजा कांपने लगा। मैं उस समय बिल्कुल अकेली थी। इतने ही में कमाल का घोड़ा तेजी से आया, कमाल ने तुरन्त मुझे पृथ्वी पर से खींचकर अपने घोड़े पर बैठा लिया। मैं उनके गले से ऐसा लिपट गयी, जैसे मैं अब उनसे कभी न छूटूँगी। कमाल का घोड़ा आकाश मार्ग से उड़ा जा रहा था और मैं आनन्द की गोद में निश्चिन्त बैठी थी। परन्तु, इसी समय जब कि कमाल का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घोड़ा आकाश में मेघों को चीरता हुआ उड़ा जा रहा था, एक सुन्दरी अप्सरा आयी और उसने मुझे जोर से धक्का देकर कमाल की गोद से गिरा दिया। मैं आर्त्तनाद और हाहाकार करती हुई आकाश से पृथ्वी की ओर गिरी आ रही थी—केवल 'कमाल प्यारे! कमाल प्यारे!' ध्वनि करती हुई गिर रही थी। इतने ही में मेरी आंख खुल गयी। मेरा हृदय अबतक भय के मारे काँप कर रहा है। क्यों शिताबी! बता इस स्वप्न का क्या मतलब है? क्या स्वप्न की बातें कभी सच भी होती हैं! ईश्वर न करे, स्वप्न का सत्य कभी मानवी जीवन का अन्त कर दे!"

शिताबी ने कहा—"नहीं बानू! स्वप्न, स्वप्न ही है! स्वप्न कभी सच नहीं होता। यदि ऐसा हो, तो मनुष्य जीवन की बातें स्वप्न ही में निर्णय करले, जो सर्वथा मिथ्या और असम्भव है!"

अज़ीज़ा ने शोकातुर कहा—"अच्छा शिताबी! बता कमाल अब कहाँ हैं? तू तो नित्य समाचार पत्र पढ़ती है, पर कुछ कमाल के सम्बंध में भी मालूम हुआ! मुझे कुछ उस प्रियतम् का भी समाचार सुना।"

शिताबी—हाँ! यूनानियों को परास्त कर कमाल पाशा की विजयी तुर्क सेनाओं ने स्मर्ना और सारे एशियामाइनर पर अधिकार कर लिया है। मैं तो आपको अख़बार सुनाने का प्रयत्न करती हूँ, पर आपही सुनते सुनते रोने लगती हैं, इस लिये मैं नहीं सुनाती।

अज़ीज़ा ने कहा—"नहीं, बहन! तू मुझे सुनाया कर। कमाल का समाचार जहाँ हो, मुझे सुनाया कर। यदि मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोऊँ तो मुझे चुप करा देना, यदि मैं सो जाऊँ तो मुझे जगा देना, पर कमाल का समाचार अवश्य सुनाना।"

उस दिन संध्या समय शिताबी हाथ में एक तुर्की समाचार पत्र लिये हुए आयी, जिसमें कमाल के विवाह का समाचार छपा था। यह एक चौंका देने वाला समाचार था, जिसे पढ़कर शिताबी बहुत ही चिन्तित हुई। समाचार इस प्रकार था-"स्मर्ना के प्रसिद्ध धनाढ्य सौदागर की पुत्री लतीफ़ा हानम् से मुस्तफ़ा कमाल पाशा का विवाह होना निश्चय हुआ था। विवाह उछाह पूर्वक हो गया। लतीफ़ा हानम् एक बड़ी ही विद्वान, रूपवान, और देश भक्त युवती है। यह युवती कमाल की पूर्व परिचिता थी, और इसने तुर्की के लिये बहुत त्याग किये हैं। मुबारक है यह देश, जहाँ वीर कमाल पाशा और वीराङ्गना लतीफ़ा हानम् सरीखे वर, बधु का संयोग होता है!"

पहले तो शिताबी का सहास न हुआ, कि यह समाचार अज़ीज़ा को सुनाये। पर, जब वह अख़बार लिये हुए आयी तो आज अज़ीज़ा ही ने उसे अख़बार सुनाने के लिये कहा।

शिताबी ने दुःख भरे लहजे में कहा—"बानू! आज अख़बार में एक विचित्र समाचार छपा है! कमाल पाशा का विवाह होने वाला है!"

अज़ीज़ा ने चौंक कर कहा-"हैं! कमाल पाशा का विवाह किससे होने वाला है? तू क्या बकती है शिताबी!"

शिताबी—आप स्वंय देख लीजिये। "मेरी समझ में नहीं आता कि यह कौन कमाल पाशा है!"

शिताबी ने वह अख़बार अज़ीज़ा के सामने रख दिया। अज़ीज़ा ने स्वंय आँखें मल मल कर कमाल की दाशी का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाचार पढ़ा। वह बिल्कुल सन्नाटे में आ गयी। जैसे काटो तो बदन में लहू न था!

उसने घबराकर कहा—"शिताबी! यह कौन कमाल है! क्या वही मेरा प्राण प्रियतम् है! ऐसा कदापि नहीं हो सकता। यह समाचार मिथ्या है! शिताबी! तू अभी स्मर्ना जाकर पता लगा। उफ्! मेरा तन बदन ठंडा हो गया है! पर हृदय में भूकम्प से भी भयङ्कर अग्नि प्रज्वलित है। मैं एक क्षण के लिये भी यह सहन विश्वास नहीं कर सकती, कि किसी जादूगरनी से कमाल का विवाह हो! तू जाकर पता लगा मेरा दिल धड़कता है! मुझे सब तरफ़ अशकुन दिखते हैं!"

कुछ ठहर कर अज़ीज़ा ने फिर कहा—"मैं तुझे एक पत्र लिख कर देती हूँ! तू उसे कमाल को दे देना! क्या उत्तर देते हैं!"

उसने रो रो के पत्र लिखा:—"मेरे प्राणधार तुम कहाँ हो! तुम्हारे लिये मेरा प्राण तड़पता—आँखें रोती हैं! क्या अपनी लैला अज़ीज़ा को भूल गये! यदि मेरा प्यार तुम्हारे हृदय में बाकी हो, तो तुरन्त आओ! हे प्यारे! मेरे प्राण के सहारे! अपना दर्शन देकर मुझे जीवन दान दो! नहीं तो, मैं मर जाऊँगी। तुरन्त आओ, आँखें तुम्हें देखने के लिये प्यासी हैं! —तुम्हारी अज़ीज़ा!"

पत्र लिफ़ाफ़े में बन्द कर उस पर अपनी मोहर लगायी लिफ़ाफ़ा चूम कर शिताबी को दिया और कहा—"शिताबी! तू अभी जा। कमाल जहाँ हों, उन्हें खोज कर मेरा पत्र देना, जवाब ले कर आना।"

शिताबी पत्र लेकर स्मर्ना रवाना हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२०

छलिया प्रेम की निराशाएं !

स्मर्ना में कमाल के विवाह की धूम थी। सारा नगर आनन्द में डूबा था। विवाह हुए दो दिन हो गये। परन्तु, नगर वासी अब तक आनन्द मना रहे हैं!

शिताबी घोड़े पर सवार जब स्मर्ना पहुँची, तो उस समय संध्या हो गयी थी। उसे हर तरफ़ तुर्कों की चौकियाँ नज़र आयी। वह प्रधान सैनिक सदर मुकाम के पास पहुँची। वह सोच रही थी, कि अन्दर किस तरह जाऊँ और कमाल से मिलूँ?

परन्तु सौभाग्य वश प्रधान सेनापति मुस्तफा कमाल पाशा इस समय अपने सदर मुकाम से बाहर निकल रहे थे। साथ में उनकी नवविवाहिता स्त्री लतीफ़ा हानम् भी थी; जो रुक रुक कर इठलाती हुई चलती थी। चढ़ी हुई भृकुटि थी, जैसे संसार को न जाने कैसी एक तुच्छ दृष्टि से देखती थी।

शिताबी युगुल जोड़ी को देख कर ज़रा ठिठक गयी। फिर उसने पास पहुँच कर कमाल पाशा को झुक कर सलाम किया। उक़ाब की तरह कमाल की तीव्र दृष्टि बड़ी खूंख़ार मालूम हुई। कमाल ने तनिक ठहर कर कर्कश स्वर में कहा—"यह कौन औरत है!"

शिताबी ने बड़ी दीनता से कहा—"श्रीमान! मेरा नाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिताबी है !·····कमाल को तुरन्त अतीत कल्पना की याद हो आयी। उन्होंने शिताबी की बात काट कर कहा-"हाँ, मैं समझ गया ! तुझे अज़ीज़ा ने भेजा है?" कमाल कुछ रुके। फिर उन्होंने शिताबी से कहा-" अच्छा, तू मेरे साथ अन्दर आ।"

यह कहते हुए कमाल ने फिर सदर मुकाम में प्रवेश किया। लतीफ़ा हानम् को कुछ आश्चर्य्य हुआ, कि यह कौन स्त्री है ?

कमाल एक कुर्सी पर बैठ गये और शिताबी को भी बैठने का इशारा किया। हानम् ने हँसी और आश्चर्य्य दबाते हुए कहा-"क्या मैं चली जाऊँ ?

कमाल ने मुस्करा कर कहा-"नहीं बेगम, तुम भी बैठो !"

हानम् मुस्कराते हुए मुँह पर हाथ रखे एक कुर्सी पर बैठ गयी। वह बड़ी चंचल दृष्टि से कभी शिताबी को और फिर कभी कमाल को देखती थी।

कमाल ने गम्भीरता पूर्वक शिताबी को सम्बोधन करते हुए कहा-"तू जाकर अज़ीज़ा से कह दे, कि वह मेरी याद भुलादे। मैं ने अब विवाह कर लिया है, इसलिये मेरा मिलन अब उससे नहीं हो सकता। तू अज़ीजा से कह देना, कि वह भी किसी योग्य तुर्क से विवाह करले और अपना जीवन सुखमय बनाये।"

यह सुनते ही शिताबी का जी बहुत ही दुःखी हुआ। उसने आश्चर्य से कहा-"क्या आपका बिवाह हो गया? अज़ीज़ा-दुखिया बालिका दिन रात आपही की याद में निमग्न रहती है-उसने सब सुख बिलास त्याग दिया;-सुख की नींद त्याग दी क्या उस दुःखिया को इतने शीघ्र आपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

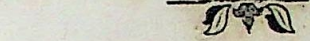

भुला दिया ? उसके प्रेम का यही पुरस्कार है ?"

कमाल ने रोब से कहा-"बस, चुप रहो, शिताबी ! ऐसी बातें न सुनाओ ! मैंने दीन दुनिया के सामने एक स्त्री से विवाह कर लिया है। अब मैं किसी अन्य स्त्री की तरफ़ नहीं देख सकता। किसी बालिका से प्रेम का अभिनय नहीं खेल सकता।"

शिताबी की जिह्वा भी इस समय बहुत तेज़ हो गयी थी। उसने बेधड़क कहा-"क्या सेनापति ! वह तुम्हारा छिप छिप कर आना, अज़ीज़ा से प्रेम जताना, और प्रेम की कठोरतम् प्रतिज्ञाएं करना, सब केवल एक मिथ्या प्रेम का अभिनय और प्रपंच था ? क्या आप नहीं देखते हैं, कि मिथ्या भ्रम में रख कर आपने एक निरीह, सरल बालिका के साथ कैसा भारी विश्वासघात किया है ! आश्चर्य है ! महा आश्चर्य है !!"

लतीफ़ा हानम् इस समय ध्यान पूर्वक ये सब बातें सुन सुन कर चकित हो रही थी। "अज़ीज़ा" का नाम वार्तालाप में कई बार आया, हानम् ग़ौर करने लगी कि, यह "अज़ीज़ा" कौन है !

कमाल ने शिताबी को ज़रा धीमे गम्भीर स्वर में कहा-"इस समय किसी अन्य बीते बात की चर्चा करनी वृथा है ! मैं किसी भी हालत में अब किसी अन्य स्त्री से मिलकर प्रेमालाप नहीं कर सकता। मैं उसको (अज़ीज़ा को) भी यही नेक राय देता हूँ, कि वह किसी अन्य पुरुष से विवाह करके सुखी बने। तू यही उससे कह देना और मेरे पास अब न आना !"

शिताबी ने कहा-"हज़ूर ! आप क्या कहते हैं ! क्या वह (अज़ीज़ा) किसी अन्य पुरुष से विवाह कर सकती है ? यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह सोच भी नहीं सकती। वह मर कर भी किसी पुरुष से विवाह नहीं करेगी, उसे आपका इतना प्रगाढ़ प्रेम हो गया है!" यह कहते हुए शिताबी ने अज़ीज़ा का दिया पत्र, जेब से निकाल कर कमाल को दिया।

कमाल ने उंगलियों से पहले वह पत्र पकड़ा, फिर झिझक कर उसे पृथ्वी पर फेंक दिया। "यह कैसा पत्र है! मैं नहीं किसी स्त्री का पत्र पढ़ता।" कमाल ने कहा,—"तू जाकर उससे कह देना कि मेरी याद करना बिल्कुल व्यर्थ है। जा, यही उससे कह देना, और अब फिर कभी मेरे पास न आना!"

कमाल ने अज़ीज़ा का पत्र जो बेख़बरी से फेंक दिया था, वह हानम् की कुर्सी के पास जा गिरा। हानम् ने होंट चबाते हुए, आँख बचाकर वह पत्र उठा लिया।"

शिताबी ने गिड़गिड़ा कर कहा—"क्या आप कुछ भी उत्तर न देंगे?"

कमाल अब की कुर्सी से उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा—"नहीं! तू अब लौट जा। जो कुछ बातें कहीं हैं, उन्हें अज़ीज़ा से कह देना। बस, अब हमारी मुलाकात यहीं समाप्त होती है।"

शिताबी मायूस होकर, वह पत्र खोजने लगी, जो कमाल ने फेंक दिया था, पर न मिला। वह शीघ्रता में कमाल के साथ बाहर निकली।

कमाल के साथ लतीफ़ा सदर मुकाम से बाहर निकल कर एक ओर चले। शिताबी का सलाम आज कमाल को देखने का भी अवकाश न था।

शिताबी शोक से भरी हुई घोड़े पर सवार हुई। सोचने लगी—"मैं अज़ीज़ा को क्या कहूँगी? उस दुखिया बालिका को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमाल का क्या सन्देसा सुनाऊँगी? क्या वह सुनते ही पागल नहीं हो जायगी? कमाल के हृदय में ऐसा प्रकांड परिवर्तन कैसे हुआ?" यही सब सोचती हुई शिताबी ग़ेज़ाल ग्राम की ओर जाने लगी?

२१

(लतीफ़ा का आनन्द बिहार)

उसी रात में लतीफ़ा हानम् अपने वैभव पूर्ण आनन्द भवन में, कमाल के हाथ में हाथ दिये बातें कर रही थी। लतीफ़ा का अनुपम रूप, लावराय, यौवन संचारित सहज मधुर भाव, चपल नेत्र, और मृदु हास्य, तथा सर्वाङ्ग मुग्धकारी छटा कमाल को विमोहित कर रही थी। एक विश्वविजयनी पटरानी की तरह वह कमाल के हृदय सिंहासन पर आसीन हो गयी थी। उसके शरीर में रक्त जैसे मधुर मद्य की तरह बह रहा था। और वह आनन्द के उछाह में मस्त हो हो कर कमाल पर न्योछावर हो रही थी। उसका कद ज़रा नाटा, पर इतना नहीं कि जिससे सौन्दर्य्य का एक बिन्दु भी दबे। उसके केश इतने लम्बे, जिनपर वह आसानी से बैठ जाती थी। लतीफ़ा अपने सम्भाषण में, सम्बोधन में, और सम्पर्क में बड़ी ही लतीफ़ और मधुर मालूम होती थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह एक संयोग था, कि तुर्की के सब से महान नेता मुस्तफ़ा कमाल पाशा से लतीफ़ा हानम् की भेंट हो गयी, और लतीफ़ा उन्हें बहुत ही पसन्द आ गयी, जिसके साथ चटपट उनका विवाह भी हो गया। कौन जाने, यदि लतीफ़ा से भेंट न हुई होती तो, कमाल अज़ीज़ा को न भूलते। मनुष्य स्वभाव सदा कुछ न कुछ अपनी विलक्षणता दिखाता है। कभी कभी मनुष्य-स्वभाव का निर्णय साधारण बुद्धिवाले मनुष्यों को बहुत ही चकित कर देता है। परन्तु, भावानुकारी स्वभाव किसी नियम या परम्परा का अनुगामी नहीं होता। उसकी समस्त चेष्टाएं एक निसङ्कोच भावना से भरी रहती है। वह स्वतंत्र मनुष्य की तरह अपने निर्णय में निर्भय रहता है।

लतीफ़ा के पास बैठे कमाल हँस हँस कर बातें कर रहे हैं। लेम्पों के प्रकाश से कमरे में दिन की तरह उजेला फैला है। उस प्रकाश में लतीफ़ा एक गोरी संगमरमर की पुतली की तरह बैठी कमाल को मदभरी चितवन् से देख रही थी।

अनेक प्रकार के प्रेमालाप के पश्चात लतीफ़ा ने मुस्करा कर कहा—"क्यों, यह अज़ीज़ा कौन है? मुझे बताओ।"

कमाल ने खिन्न चित्त होकर कहा-"प्रिये! उस चर्चे को जाने दो। मुझे प्रसन्नता नहीं मालूम होती।"

लतीफ़ा ने हठ के साथ कहा—"नहीं, मुझे यह भेद बताओ! देखो, वह तो पुरानी बात हो गयी! पुरानी बात के बताने में कोई हर्ज नहीं है।"

कमाला ने हँस कर कहा—"तुम इतना हठ करती हो! अच्छा, वह भेद मैं तुम से गुप्त न रखूँगा। सुनो, अज़ीज़ा एक भोली सरल लड़की है, जिसे मैं पहले जानता और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहता भी था। परन्तु, प्रिये! तुम्हें जानने के बाद अब मैं किसी रमणी की तरफ़ ताकूँ! क्या ऐसा करना मेरे लिये गुनाह न होगा?"

लतीफ़ा ने कहा—"प्यारे! सच बताओ, कितनी मुद्दत तक तुम्हारा उसका प्रेम रहा! मैं यह जानना चाहती हूँ।"

"नहीं तुम यह न पूछो! मेरे दिल में दर्द होता है। यह दर्द क्यों होता है? मैं स्वयं ही इसे समझा नहीं सकता। पर, तुम मुझ से यह चर्चा न करो। बस, इसे यहीं समाप्त करो।" कमाल ने ये वाक्य बड़े खेद भरे लहजे में कहे।

परन्तु, लतीफ़ा मानने वाली न थी। वह कुछ और भी चुहुल सी शरारत करने के लिये तैयार थी। उसने अज़ीज़ा का पत्र जेब से निकाल कर कमाल को दिखाया, और कहा—"देखो उस बिचारी ने तुम्हें कैसे कैसे प्यार भरे शब्दों से याद किया है!"

कमाल ने विस्मित होकर कहा—"क्या तुमने पत्र रख छोड़ा है? तुमने क्या उसे पढ़ा? तुम्हें नहीं पढ़ना चाहिये था, लतीफ़ा! तुम अब भी उसे फाड़ कर फेंक दो!"

लतीफा ने बड़ी विनय की हँसी से कहा—"प्यारे! तुम मुझे इस धृष्टता के लिये क्षमा करना! परन्तु, मैं तुम से एक प्रार्थना करती हूँ। तुम एक बार इस पत्र को पढ़ो। इसमें बड़ी दिल्लगी है, मैं तुम्हें उस मूर्ख लड़की की लचर लिखावट और मन्द मति के मनोभाव दिखाना चाहती हूँ। इसी लिये कहती हूँ कि ज़रा एक बार इस पत्र को पढ़ डालो।"

कमाल का मुख इस समय बहुत ही गम्भीर हो गया। न जाने किन किन बातों को याद करके क्या विचारने लगे। परन्तु, उन्होंने पत्र पढ़ा नहीं, बल्कि उसे फाड़ कर टुकड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टुकड़े कर दिया। अज़ीज़ा के हृदय के टुकड़े क्रूर निर्मोही की तरह बिखेर दिया।

उन्होंने कुछ सोचते सोचते कहा-"देखो लतीफ़ा! यह मेरी ही मूर्खता थी, मेरी ही मति उस समय मन्द हो गयी थी, जो मैंने उस बालिका के प्रेम को बराबर उत्साहित किया। उस समय मेरे भी मनोभाव कुछ अवश्य कुत्सित हो गये थे, और मेरे विचार बिल्कुल निश्चित न थे, कि मैं क्या करूँगा। राह में चलते हुए जैसे कोई किसी फूल को इत्तफ़ाक से देख लेता है, वैसे ही मैंने भी उस बालिका को देखा था और शायद यह इच्छा भी की थी, कि उस फूल को मैं चिरकाल के लिये अपने अधिकार में करलूँ। मैं उस समय एक साधारण सैनिक था, और ऐसी अवस्था में किसी सुन्दरी से बिना परिणाम सोचे प्रेम कर लेने का जो फल होता है, उसे मैं अब स्पष्ट देख रहा हूँ और अपने उस प्रेमालाप से घृणा करता हूँ। तुम्हीं बताओ, जब तुम्हारी सी विश्व विजयनी सुन्दरी मुझे जीत ले, तो मुझे कौन रमणी जीत सकती है?"

सुनते सुनते लतीफ़ा के तेवर बदल जाते थे। उसने नैन कटाक्ष चलाते हुए कहा-"जी हाँ, मैंने ही आपको पथ भ्रष्ट किया। मुझे इसके लिये बड़ा खेद है। नहीं तो आप उसी सुन्दरी से विवाह करके सुखी होते।"

कमाल ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं लतीफ़ा! ऐसा न कहो। मनुष्य जब अपने पुराने विचार, नयी परिस्थितियों के प्रकाश में देखता है, तो उसे जहाँ भूल मालूम होती है वह वहाँ उस भूल को सुधारता है। तुम्हारे साथ विवाह करके मैंने ऐसी ही एक भूल सुधारी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर कमाल ने तनिक मुख गम्भीर बनाकर कहा,—"सुनो लतीफ़ा! मैंने बहुत सोच विचार कर यह निर्णय किया। यदि मैं चाहूँ तो उससे (अज़ीज़ा से) विवाह कर सकता हूँ, ऐसा करने में मुझे कोई रुकावट भी नहीं है, बल्कि दीन इसलाम कई शादियाँ करने की आज्ञा भी देता है। परन्तु मैं ऐसी आज्ञा का विद्रोही हूँ जो धार्मिक आज्ञाओं की आड़ में कई शादियाँ करते हैं, वे केवल साधारण मनुष्यों के लिये पाप के बीज बोते हैं, जिनका परिणाम जाति भर के लिये नाशकारी होता है। मैं तुर्की की नयी जागृत जाति के लिये ऐसे बीज नहीं बोना चाहता, जिनका फल बुरा और कड़ुआ हो! इसलिये राष्ट्र की भलाई के लिये मैंने यही उचित समझा, कि तुम मेरी प्राणेश्वरी बनो। मन के कितने ही तर्कों के उत्तर देने के बाद मैंने तुम्हें अपनी रानी बनाने का निश्चय किया। देखो प्यारी! मेरा दिल तुम्हारी चाहना से कितना भर गया है! तुम मेरे हृदय और प्रेम की रानी हो!"

यह कहते हुए कमाल ने लतीफा के चुम्बन लिये। और, उसे अपनी गोद में दबा लिया। लतीफ़ा ने प्यार के दुलार के साथ कहा—"मैंने न जाने तुम्हें कहाँ से आकर छीन लिया! परन्तु, मुबारक है वह शुभ घड़ी, जब मैंने प्रथमबार तुम्हारा दर्शन किया था!"

कमाल ने प्यार करते हुए कहा—"और, मुबारक है यह घड़ी जब मैं तुम्हारी सी दुर्लभ प्राण प्रिया को लुभा रहा हूँ। सचमुच, लतीफ़ा! ईश्वर ने तुम्हें केवल मेरे लिये पैदा किया है!"

"तुम्हें भी ईश्वर ने मेरे लिये सृजा है!" यह कहती हुई प्रेम विह्वला लतीफ़ा ने कमाल के गले में बाहें डाल दीं। दोनों के प्रेमालाप होने लगे। दोनों हँस हँसा रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु, इस आनन्द के अट्टहास में विलक्षण कमाल को यह क्या मालूम था, कि किसी गाँव में एक तुर्क-तरुणी किस तरह प्राण विसर्जन करने के लिये तैयार बैठी है।

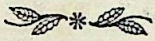

२२

बिरहनी ! बिरहनी !

"अगर दानिस्तम् अज़ रोजे अज़ल दागे जुदाई रा।
नमी करदम् बदिल रौशन चिरागे आशनाई रा॥

रात्रि का समय। अज़ीज़ा शोकातुर मुख किये, उदासी और निराशा के आँसुओं में डूबी हुई पलङ्ग पर पड़ी धीरे धीरे सिसकियाँ ले रही थी। दीर्घकाल के रोदन से आँसू कपोलों पर चिपक गये थे। सुन्दर मुख मलीन हो गया था। बहुत देर रोने के बाद अभी चुप हुई है। पर चुप होने पर भी उसकी गम्भीर शान्ति का निस्तब्ध रोदन निरन्तर जारी है। हृदय में रक्त की समस्त बूँदे आँसू हो रही थी। अज़ीज़ा के सामने सारा संसार आँसुओं से भरा था।

कमरे में लेम्प का मध्यम् प्रकाश था, जिसके आस पास कुज पतङ्ग उड़ रहे थे, और कोई कोई पतङ्ग प्रकाश में जल मरता था। अज़ीज़ा के निकट कोई नहीं है। वह कभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निस्तब्धता भङ्ग कर "हाय !" करके फिर चुप हो जाती थी। दुःखिनी ! निसहाय ! मर्म पीड़िता ! अज़ीज़ा ! यह उसने कब सोचा था, कि एक दिन प्रेम की लहलहाती कियारी प्रतिहिंसा की तुषार से झुलस जायगी ! जिस 'प्रिय पुरुष' की याद और आस में जीवन के ये कठोर चार वर्ष धूलधूसरित हुए, जिसकी प्रिय स्मृति करुणाविलाप की तरह हर समय रुलाया करती है, वही भूल गया ! उसी ने हृदय हीन की तरह निर्दय हो मुख फेर लिया !

उस प्रथम दिवस की याद आज भी अज़ीज़ा के हृदय पट पर बनी है। वह सोचने लगी–"उस दिन घोड़े पर से गिरते कमाल को देखा था। न जाने क्या हुआ, कि एक ही क्षण में उस सौम्य मुख पर मोहित हो गयी। फिर, उसने प्रीति प्रकट करते हुए बड़ी प्रतिज्ञाएं की। मेरे हृदय पर हाथ रख कर कितनी सान्तवना दी थी ! अपने दिव्य प्रेम का परिचय देने के बाद फिर कई दिन आकर मेरे अतिथि बने, और अपने मन का सारा प्रेम प्रकट दिया। मैंने समझा था, कि यही उसके हृदय का सुन्दर रहस्य है, जो वह सुन्दर शब्दों में प्रकट कर रहा है ! मैंने उस समय असीम प्रसन्नता की प्रमोद भरी लहरी में तल्लीन होकर समझा था, कि प्रियतम् कमाल से चिर संयोग रहेगा–वह मेरे हृदयेश बनेंगे, मैं उनकी हृदयेश्वरी बनूँगी ! परन्तु उफ् ! कैसा विकट वियोग है ! वह मेरा भ्रम था ! हाय ! मेरा भ्रम था ! यह कैसी असह्य वेदना है ! मैं इसे कभी सहन नहीं कर सकती ! वियोग के दिन नहीं काट सकती ! तब, मैं मर क्यों नहीं जाती ? सारा शरीर निर्जीव हो गया है, पर प्राण कहाँ अटका है ? मैं मर क्यों नहीं जाती ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अज़ीज़ा तकियों में मुँह धँसाये पड़ी थी। उसे कुछ नहीं मालूम कि संसार में क्या हो रहा है? वह केवल रोदन और विलाप से अपना मनोरंजन कर रही थी!

इतने ही में कमरे का दर्वाज़ा खुला। उदास मुख किये शिताबी ने प्रवेश किया। शिताबी कमाल से भेंट करके आयी है, परन्तु अज़ीज़ा को उसकी बिल्कुल खबर नहीं। शिताबी पैर दबाये धीरे धीरे पलङ्ग के पास गयी और नीचे बैठ गयी।

शिताबी ने धीरे से कहा-"बानू! तबियत कैसी है?"

अज़ीज़ा ने तकियों से मुँह उठाकर, शिताबी की ओर घूर कर देखा। फिर उसने बड़ी ही धीमी उत्सुक आवाज़ में कहा-"शिताबी क्या तू कमाल से मिल कर आयी है? हाँ! हाँ, सच बता, उसने क्या उत्तर दिया? क्या मेरी याद उसे अब तक है? शिताबी! उसने तुझसे क्या कहा?"

शिताबी क्या कहे? वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ की तरह हो रही थी। उसे कुछ न सूझता था, कि वह दुःखिनी अज़ीज़ा को किस तरह सान्तवना दे। पीड़ित-हृदया को क्या कह कर समझायें?

शिताबी ने बहुत ही दुःखित कंठ से कहा-"बानू! अब उस निर्मोही कमाल को भूल जाओ। उसे याद करके दिल न दुःखाओ!"

अज़ीज़ा ने चिढ़ कर कहा-"तू कौन मुझे राय देने वाली है। तू जल्द यह बता कि मेरा पत्र पाकर उसने क्या कहा?"

शिताबी-"उन्होंने कुछ भी न कहा। कुछ उत्तर देना तो दूर रहा, उन्होंने आपका पत्र पढ़ा तक नहीं, उसे पृथ्वी पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फेंक दिया, और मुझसे कहा-'मैंने दोन दुनिया के सामने एक स्त्री से विवाह कर लिया है। अब मैं किसी अन्य स्त्री से प्रेम नहीं कर सकता। तू जाकर अज़ीज़ा से कह दे, कि वह मुझे भूल जाय और किसी अन्य तुर्क से ब्याह कर ले।"

इतना कहते कहते शिताबी एक दम चुप हो गयी। क्योंकि उसने देखा, कि अज़ीजा की चेष्टा बड़ी भयानक हो गयी है, उसके नेत्र जैसे बड़े बड़े होकर बाहर निकलना चाहते थे, और वह दोनों हाथों से अपना गला ज़ोर से दबा रही थी। अज़ीज़ा ने एक बार तकिये से अपना सिर उठा कर उठना चाहा, परन्तु फिर बेसुध होकर पलङ्ग पर गिर गयी।

उसकी यह दशा देख शिताबी बहुत ही घबरायी। उसने पास जाकर अज़ीज़ा को देखा। हिलाने डुलाने से वह बिल्कुल न हिलती थी। उसकी साँस जैसे बन्द हो गयी थी। शिताबी उसे बार बार हिलाने लगी। उसने गुलाब जल की कुछ बून्दे उसके मुँह में छोड़ी और आंखें भी तर की।

धीरे धीरे अज़ीज़ा के नेत्र खुलने लगे। वह विलक्षण मुद्रा से आँखों को घुमा घुमा कर कमरे में चारो तरफ़ देखने लगी। फिर उसने शिताबी को देखा और झट बोली-"हाँ, बता, उस निष्ठुर प्रियतम् ने क्या कहा? क्या उसने मुझे मर जाने के लिये कहा है? हाँ, बता, उसके क्या शब्द थे? तू उसके शब्द बराबर उस समय तक दोहराती रहे, जब तक कि मेरे प्राण न निकल जायें! बोलती क्यों नहीं, शिताबी! बता, उसने क्या कहा?"

शिताबी बिचारी क्या कहे? वह अज़ीज़ा का हाथ पकड़े चुप चाप उसे सहलाने लगी। अज़ीज़ा ने झटकार के अपने हाथ खींच लिये। और तीव्र ध्वनि में कहा-"तू उसके विष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुल्य वाक्य मेरे कानों को फिर सुना ! यदि चुप रहेगी, तो मैं अभी मर जाऊँगी ! अभी विषपान कर लूँगी ! अभी ऊपर से कूद पड़ूँगी। बता, मैं तुझे आज्ञा देती हूँ, तू उसके समस्त निष्ठुर वाक्य मुझे सुना ! जल्दी सुना !!" अज़ीज़ा ने शिताबी को दोनों हाथों से पकड़ लिया, और उसे ज़ोर से हिलाने लगी। शिताबी ने विवश हो फिर कमाल के वाक्य दोहराये, जिन्हें सुनते ही अज़ीज़ा को फिर ग़शी आ गयी ! नेत्र निरन्तर रोदन से कुछ फूल आये थे, जिनमें अब आँसू न थे। मर्म पीड़ा सूइयों की तरह सारे शरीर में चुभ रही थी।

अज़ीज़ा ने करवट ली, और एक हाथ पलङ्ग की पाटी पर ज़ोर से पटका। उसने हताश भरी वेदना की तिलमिलाहट से कहा—"शिताबी ! मुझे विष दे ! मुझे विष पिला दे ! मेरा गला दबा कर मुझे मार डाल ! मुझे मार डाल ! मैं मरने के योग्य हूँ ! ओह ! कल का प्रभात ! नहीं, नहीं, कल का प्रभात मुझे जीवित न देखे। मुझे अभी खतम कर दे ! शिताबी !"

शिताबी उसे बहुत तरह सान्तवना देते हुए समझाने लगी। पर, यह सान्तवना ऐसी ही थी, जैसे कोई मुर्दा पेड़ को जल से सींचने की कोशिश करे। अब की अज़ीज़ा उठकर पलङ्ग पर बैठ गयी। उसने कहा—"अरी शिताबी ! पुरुष इतना बेपीर निर्मोही और निष्ठुर होता है ! पुरुष के हृदय में जो कुछ भी दया, प्रेम, सहृदयता है, क्या वह सब दिखाने की है ? क्या उसकी किसी भावना में भी कुछ भी सत्यता नहीं होती ? क्या वह कभी किसी क्षण में भी पुनीत प्रेम के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाता ? हाय, मेरा दिल ! हाय, मैंने उसे प्रथम दिवस ही क्यों न जान लिया कि प्रिय दर्शन का पुर-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्कार असत्य प्रेम है ! मनभावन सुन्दर नेत्र और हृदय में केवल हलाहल विष भरा है !"

अज़ीज़ा फिर पलङ्ग पर गिर गयी। शितावी ने उसके सिर के नीचे मुलायम तकिये रख दिये। रात्रि के दो बजे थे। सारा संसार सुख की नींद में विश्राम कर रहा था। पर विरहणी अज़ीज़ा पड़े पड़े रो रही थी। रोते ही रोते उसे नींद आ गयी।

२३
नीरस जीवन का बोझ !

पृथ्वी पर जब कोई भी प्रिय वस्तु प्रेम करने के लायक न हो, जब कोई भी मृदु अवलोकन मनोरंजन की सामग्री न रहे, जब कोई भी लम्बी सी लम्बी कल्पना सुख दायी प्रतीत न हो, तो ऐसा नीरस, निस्सार मय जीवन का बोझ कितने दिनों ढोया जायगा ?

अज़ीज़ा का जीवन ऐसा ही निस्सार मय हो गया था। वह निरन्तर रोते रोते, वियोग में प्रियतम् की चिन्ता करते करते बहुत ही दुबली हो गयी थी। उसे न भोजन की सुध रहती थी, न साफ़ वस्त्र पहनने की परवाह करती थी। उसे जब कोई देखता था, तो रोते ही पाता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके पिता सर्दार सफ़दर ने उसकी यह दशा देख कर विवाह की फ़िक्र की। पिता ने एक अच्छे, सुन्दर सैनिक तुर्क जवान को अपना दामाद बनाना निश्चय किया। उस तुर्क को एक दिन घर बुलाया। नीचे वह तुर्क बैठा था। सर्दार सफ़दर ऊपर अज़ीज़ा के पास गये।

सर्दार ने कहा-"चलो बेटी! ज़रा बाग़ में चल कर टहलो! इस तरह हर घड़ी रोने और चिन्ता करने से जान जाने का ख़तरा है। तू मेरे आँख का तारा है! जाने दे बेटी, जो हो गया सो हो गया! कमाल जहन्नुम में जाय, उस कम्बख्त की चिन्ता छोड़ दे। मैंने तेरे लिये अब एक दूसरा बर ठीक किया है, जो हर तरह अच्छा और योग्य है! बाहर घूमने जाया कर···

अज़ीज़ा बीच ही में बोल उठी-"हैं! हैं! पिताजी! आप क्या कहते हैं? जहन्नुम में मुझे भेजिये! मैं ही जहन्नुम के क़ाबिल हूँ! पिताजी! मुझे क्षमा कीजिये! अभी कुछ न कहिये!"

सर्दार ने बहुत चेष्टा की, कि वह अज़ीज़ा को नीचे लाकर उस तुर्क से सामना करायें, पर अज़ीज़ा अपने स्थान से न हिली। वह बारम्बार यही कहती रही—"यदि आप मुझे जीवित रखना चाहते हैं तो अभी मुझसे कुछ न कहिये।"

पिता ने देखा कि, इस समय उससे कुछ भी कहना व्यर्थ है। उन्होंने अज़ीज़ा के माथे पर हाथ फेरा। माथा गर्म मालूम हुआ। उन्होंने देखा कि अज़ीज़ा को ज्वर चढ़ा है। शिताबी और अन्य दासियों ने आकर अज़ीज़ा को आराम से पलङ्ग पर लेटा दिया। कुछ देर अज़ीज़ा को देख कर सर्दार सफ़दर चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अज़ीज़ा ने आह भर कर कहा—"शिताबी! यह जीवन कितना है? इस पतित जीवन की घड़ियाँ कब समाप्त होंगी! देख नेही के नेह का अन्त हो गया, प्रेम और स्नेह का अन्त हो गया, कष्ट और पीड़ा का अन्त हो गया, पर मेरा अन्त क्यों नहीं होता? मेरे हृदय में कौन सी अपवित्र आत्मा मुझे जिला रही है? हाय, इस शरीर में कौन सी अधमरी साँस अब तक चल रही है? इसका कब अन्त होगा? शरीर में सुलगी हुई इस सारी ज्वालाग्नि का कब अन्त होगा?"

यह कहते हुए अज़ीज़ा ने करवट ली। बहुत देर तक नेत्र बन्द किये न जाने सो गयी थी, या बेसुध पड़ी थी। जब उसकी आँख खुली, तो उसने देखा संध्या हो रही है। वह लेटे ही लेटे खिड़की में से दूर देखने लगी, और भावों में निमग्न हो कर न जाने क्या विचारने लगी। सूर्य्य की शेष किरणें पर्वतों की आड़ में छिप रही थीं।

अज़ीज़ा लेटे हुए अरुण आकाश की छटा देखने लगी। उसने कहा—"देख शिताबी! यह संध्या का कलङ्की सूर्य्य है! याद है वह मोहनी संध्या, जो कमाल को लेकर आयी थी? परन्तु, वह प्राणघातिनी संध्या थी। मेरे भी जीवन की संध्या समाप्त हो चुकी और मैं अब मृत्यु की कराल रात्रि में समाने जा रही हूँ। देख, मेरे रोम रोम में से जीवन शक्ति फटती हुई निकलती मालूम हो रही है। मेरे कलेजे में, अङ्ग अङ्ग में असहय वेदना, और दर्द हैं। (कुछ ठहर कर) मुझ में क्या रह गया है, बता? कुछ भी नहीं! शून्य की तरह भी मेरा अस्तित्व कहीं नहीं है! आज भी यह पापिनी संध्या मेरे सामने है, और इस डूबते हुए सूर्य्य की सौगंध है कि मुझे भी अपना जीवन निर्वाण सत्य ही प्रतीत होता है!! शिताबी! मेरे गले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में कांटे चुभ रहे हैं ! मुझे प्यास लगी है !" विरहनी थक कर फिर अपने में समा गयी।

शिताबी दौड़ कर गुलाब जल ले आयी और थोड़ा सा अज़ीज़ा को पिलाया। अज़ीज़ा ने आँखे खोलीं, परन्तु कैसी डरावनी आंखे थीं। आँखें खून सी भरी मालूम होती थीं, जैसे आंखें खूब खून के आँसू रोई हैं।

शिताबी के बहुत कहने पर भी अज़ीज़ा ने आज कुछ न खाया। रात्रि हो गयी थी, लेम्प के प्रकाश में पतङ्गे उड़ कर अपने प्राण बलिदान चढ़ा रहे थे, अज़ीज़ा उन पतङ्गों का तमाशा देखने लगी। उसे आज पतङ्गों के बलिदान में कुछ विचित्र मनोरंजकता मालूम हुई। जैसे उसने आज के पहले कभी इस तरह पतङ्गों को जलते न देखा था। अज़ीज़ा बहुत ध्यान पूर्वक उनका उड़ना, जलना देख रही थी। उसने कहा-"आह ! ऐसा निःस्वार्थ प्राण बलिदान ! कुछ भी आशा नहीं, कुछ भी वेदना नहीं, कुछ भी उपालम्भ नहीं ! आह, पतङ्ग ! तुम्हारा बलिदान धन्य है ! तुम्हारा स्वार्थ और पुरस्कार केवल जलना है, मरना है ! अहा ! तुम्हारी आने की तेज़ी से तुम्हारी मुस्तैदी मालूम होती है ! प्राण प्रियतम् प्रकाश से मिलन के लिये कितने आतुर हो ! केवल मरने के निमित्त मरते हो !"

अज़ीज़ा ने धीरे से कहा-"क्या मैं एक पतङ्ग से भी क्षुद्र प्राणी हूँ ! क्या वही इच्छा और शक्ति मुझ में नहीं है ? उफ् ! पतङ्ग कितना तड़पता, लोटता उड़ता हुआ आता है ! जलने और मरने के लिये कितना आतुर है ! क्या यही आतुरता मुझमें नहीं है ? तब, मैं भी क्यों नहीं इसी पतङ्ग की तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रियतम् के समीप जल मरती ? हाँ...हाँ...मरूँगी, अवश्य मरूँगी ! ओह ! यह चिर वेदना सहन नहीं होती ? कमाल ! कमाल !...प्यारे कमाल !...क्यों, मुझसे क्या कसूर हुआ ? हाँ, मैं जानती हूँ ! मैं न्योछावर हो जाऊँ ! इसी पतङ्ग की तरह ! हाँ...इसी तरह !!"

अज़ीज़ा के हाथ पैर काँपने लगे । वह फिर बेसुध सी हो गयी । देह में जैसे साँस न थी । शिताबी पैरों के पास बैठी उसके तलुए मल रही थी । अज़ीज़ा फिर चौंक कर जैसे जाग गयी । उसने दोनों लातें ज़ोर से झटकारीं । शिताबी ने कहा-"बानू !"

अज़ीज़ा ने मन्द कंठ से कहा-"तू मुझे मत स्पर्श कर ! मुझे तू कोई कष्ट न दे । मैं चुपचाप पड़ी हूँ मुझे न छूना !"

कुछ देर बाद अज़ीज़ा को नींद आ गयी । शिताबी नीचे फर्श पर बैठी उसे देख रही थी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२४
अन्तिम मिलन

(1)

The night has a thousand eyes,
The day has one
Yet the light of a whole world dies
With the Setting sun.

(2)

The Mind has a thousand eyes,
The heart but one,
Yet the light of a whole life dies,
When Lone is done.

कई दिन बीत गये। अज़ीज़ा का दिल आज कुछ थमा है। आज वह सोच रही है, कि चाहे जो हो मैंएक बार कमाल से अवश्य मिलूँगी।" उसने मन में कितने ही विचार किये, अन्त में उसने शिताबी से कहा—"आज मैं कमाल से मिलूँगी। शिताबी! आज मैं स्वयं उसके पास जाकर उसकी निष्ठुर चितवने देखूँगी और बातें सुनूँगी। उसकी प्रेममयी मूर्ति देखी थी, और उसका मुझ पर प्रभाव पड़ा था, आज उसकी निष्ठुर मूर्ति देख कर, देखूँ कैसा प्रभाव पड़ता है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिताबी ने दुःखित स्वर में कहा-"नहीं, बानू ! आप न जाइये ! मुझे बड़ा भय मालूम होता है, आप को कष्ट होगा !"

अज़ीज़ा ने तुरन्त उत्तर दिया-"क्यों शिताबी ! तुझे भय मालूम होता है, पर मुझे तनिक भी भय नहीं मालूम होता। आज से बढ़ कर मेरा हृदय कभी साहसी नहीं था। क्या मेरे कष्ट के लिये तू डरती है ? क्या मेरा कुछ अनिष्ट होगा। कुछ नही शिताबी ! मेरा कुछ भी अनिष्ट न होगा। मैं आज किसी परिणाम के लिये नहीं डरती। मैं अवश्य जाऊँगी !"

कमाल से मिलने की कल्पना ने आज उसके हृदय में बल पैदा कर दिया था। वास्तव में वह सब दिन से आज कुछ स्वस्थ मालूम होती थी। उसने शिताबी को दो घोड़े तैयार करने की आज्ञा दी। आज कई दिनों के बाद अज़ीज़ा ने स्नान किया, साफ़ वस्त्र पहने। अज़ीज़ा और शिताबी दोनों अपने २ मुँह पर नक़ाब डाले घोड़ों पर रवाना हुए।

दोनों तुर्क सैनिक सदर मुकाम के पास पहुँचे। सदर मुकाम के फाटक पर शस्त्रधारी सैनिकों का पहरा था। अज़ीज़ा ने पास पहुँच कर एक सैनिक से पूछा-"क्या प्रधान सेनापति मुस्तफ़ा कमाल पाशा अन्दर हैं ?"

सिपाही ने कहा—हाँ।

अज़ीज़ा ने कहा—"मैं उनसे मिलना चाहती हूँ। एक विशेष आवश्यक कार्य्य है। मेरा नाम अज़ीज़ा है, तुम जाकर उन्हें खबर कर दो !"

सिपाही भीतर कमाल पाशा के पास गया, और जब लौटा तो उसकी चेष्टा से मालूम होता था, कि वह स्वीकृति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की आज्ञा लेकर लौटा है। वह अज़ीज़ा को अपने साथ प्रधान सेनापति के सन्मुख ले गया। शिताबी बाहर ही खड़ी रही।

अज़ीज़ा ने अन्दर जाकर देखा, कि एक प्रशस्त एकान्त कमरे में प्रधान सेनापति मुस्तफ़ा कमाल पाशा जंगी लिबास में बैठे हैं। उनके चारो ओर भयानक शान्ति छायी है। उनका रोबीला वीर मुख, जो सैनिकता के तेज से तमतमा रहा है, बड़ा ही कठोर और नीरस सा मालूम हुआ।

कमाल की उसकी आँखे मिलीं, परन्तु कमाल ने जैसे उसे न पहिचाना। न जाने क्यों, अज़ीज़ा का हाथ आज सलाम करने के लिये न उठा। पहली दृष्टि में तो अज़ीज़ा ने सोचा कि वह कमाल के हृदय से लिपट जाय। परन्तु, फिर ठिठक कर उन्हें देखने लगी।

कमाल ने अज़ीज़ा को पहिचाना या नहीं ? उन्होंने प्रश्न किया-"तुम किस लिये आयी हो ?"

अज़ीज़ा कमाल की ओर देखती रही, पर उससे बोला न गया। परन्तु, फिर दूसरे क्षण में, हृदय का सारा वेग स्थिर कर उसने कहा-"क्या मुझे आपने नहीं पहिचाना ! मैं आपकी वही चिर परिचता लैला अज़ीज़ा हूँ ! क्या मुझे भूल गये ?"

कमाल कुछ विचार में पड़ गये, फिर बोले-"तुमने आने का क्यों कष्ट किया ? मैंने तुम्हारी दासी से तुम्हें कहला दिया था, कि तुम अब मेरा ख्याल छोड़ दो। तुम्हारे दिन शादी करने के हैं, तुम अब शादी कर लो। मेरी याद करनी वृथा है। ख्याली बेवकूफियों के लिये सारी ज़िन्दगी तबाह नहीं करनी चाहिये !"

अज़ीज़ा का हृदय उमड़ा आ रहा था। उसने कमाल की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरफ़ देख कर वेदना भरी ध्वनि में कहा-"मेरी ज़िन्दगी खराब होगी तो हो, मेरी हस्ती सिर्फ एक खराबी का नमूना है। मैं शादी किसी अन्य पुरुष से कभी न करूँगी। मेरे प्राणात्मा में तुम बैठे हो, उसमें किसी अन्य पुरुष का अधिकार पाना असम्भव है। मैं तुमसे यही कहने आयी हूँ, कि हे मेरे प्रिय पुरुष! तुमने मुझे गुमराह क्योंकर दिया है? तुम्हारी सारी प्रतिज्ञाएं मेरे हृदय पर लिखी हुई हैं। हे मेरे प्रभु! मुझ पर दया करो!"

कमाल ने बड़ी संजीदगी से कहा-"कोरी कल्पना का साम्राज्य त्याग दो! तुम्हें अपने सामने देख कर भी मुझे सङ्कोच होता है। जो मुझसे नहीं हो सकता, उसे मैं कभी न करूँगा। जाओ, किसी योग्य तुर्क से विवाह कर अपना और उसका जीवन सार्थक करो! मैं तुम्हारे शुभ के लिये कहता हूँ-मेरी यह बात मानो।"

अज़ीज़ा ने आँखों में आँसू भर कर कहा-"क्या कहते हो? मैं तुम्हारी सब बातें मानूँगी, परन्तु यही एक अपवित्र बात न मानूँगी। तुम मुझे आग में भस्म कर दो, समुद्र में डुबा दो, मुझे जीवित कब्र में गाड़ दो, पर मैं तनिक भी आपत्ति न करूँगी। परन्तु, हाय! अन्य पुरुष से मैं विवाह करूँ? मैंने जिस प्रथम प्रिय पुरुष को प्यार किया, उसके अतिरिक्त संसार में अन्य किसी पुरुष को प्यार न करूँगी! तुम्हारे हृदय में इतना बल है, कि तुम मुझे-अपनी प्रथम प्रेयसी को त्याग कर दूसरी स्त्री से विवाह कर सकते हो, परन्तु, प्रियतम्! मुझ में इतना बल नहीं है! तुम मुझे यहीं अपने हाथों से मार डालो-मैं इसीलिये तुम्हारे पास इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय आयी हूँ !" अज़ीज़ा दोनों हाथ फैलाये झूमती हुई बिरहनी की तरह कमालपाशा के सामने खड़ी थी।

कमाल अपना मुख दोनों हथेलियों से दाबे बैठे थे। और अज़ीज़ा की बातें सुनते हुए न जाने किन विचारों में निमग्न थे। फिर, उन्होंने अज़ीज़ा की ओर देखा, अपनी असमर्थता और लाचारी दिखाते हुए कहा-"मैं असमर्थ हूँ। अब अपना निश्चित निर्णय नहीं बदल सकता। मैंने जो कुछ किया, वह सार्वजनिक हितचिन्तन की दृष्टि से किया है। मुझे जो कुछ कहना था, वह मैं तुम्हारी दासी (शिताबी) और तुमसे कह चुका हूँ। अब मैं अन्तिमबार फिर तुमसे यही कहता हूँ, कि जाकर विवाह करलो और फिर यहाँ आकर मुझसे कभी न मिलना। जाओ, अब यहाँ कभी न आना !!" कमाल ने ज़ोर से कहा।

मोह और क्षोभ, क्रोध और अपमान, निराशा और पश्चाताप से अज़ीज़ा काँपने लगी। उसने तीव्र ध्वनि में, जितनी ज़ोर से वह बोल सकती थी, कहा-"हाँ, जाती हूँ ! जाती हूँ ! और अब जहाँ जाती हूँ, वहाँ से फिर लौट कर तुम्हारे पास न आऊँगी ! हश्र के दिन दामनगीर होऊँगी, और उस दिन मैं भी तुम्हें माफ़ न करूँगी !!"

इसके बाद अज़ीज़ा बिदा हुई। क्या विचित्र उसकी मुद्रा थी ! व्याकुलता से छटपटाती हुई, हाथ झटकती हुई और पैर पटकती हुई वहाँ से चली। वह जैसे शून्य मन्दिर में मतवाले शराबी की तरह डोल रही थी, उसका कोई अङ्ग उसके काबू में न था और अपने शरीर को सैकड़ों बल देती हुई, कभी ठिठक कर और फिर जल्दी चलती थी। उसके सुन्दर नेत्र जैसे और भी बड़े होकर फटे पड़ते थे। दो तीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क़दम आगे रखती थी, फिर ठहर कर आश्चर्य से अपने चारों ओर देखती थी। उसने चलते हुए स्फुट शब्दों में दो तीन बार केवल यही कहा-"निर्दयी ! निर्दयी ! अत्याचारी !!" कमाल चुपचाप अपने होंठ दबाये उसे देख रहे थे।

उस सदर मुकाम के बाहर अज़ीज़ा बड़े वेग से निकली, पर जैसे बिल्कुल बेसुध थी। बाहर शिताबी खड़ी थी, पर उसने उसे न देखा। अज़ीज़ा ज़ोर से भागने लगी, पर ज्यादा दूर न भागा गया। आठ दस कदम जाकर अभागिनी ज़ोर से ज़मीन पर गिर पड़ी। शिताबी दौड़ कर पास गयी। उसने अज़ीज़ा को उठाना चाहा, परन्तु वह न उठ सकी। क्या अज़ीज़ा का प्राण रहित शरीर पड़ा है ?

कई अन्य मनुष्य भी वहाँ पहुँच गये। सब ने देखा कि अज़ीज़ा के शरीर में सांस नहीं चला रही है। सब को ऐसी आकस्मिक मृत्यु पर बड़ा दुःख और आश्चर्य्य हुआ।

इसी समय मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने भी बाहर निकल कर देखा।

निराश प्रेम की प्यासी पुतली पृथ्वी पर प्राण रहित पड़ी है !

मुस्तफ़ा कमाल को प्रथम बार एक दुःख दायी आश्चर्य का अनुभव हुआ। उनके हृदयसे भी लम्बी आह निकल गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपसंहार

राष्ट्रद्रय तुर्कों के भीम पराक्रम और उद्योग से तुर्की में अब प्रजातंत्र राज्य स्थापित हुआ है। इस प्रजातंत्र के प्रधान संचालक और राष्ट्रपति (प्रेसिडेन्ट) मुस्तफ़ा कमाल पाशा हैं, जिनके निरीक्षण में नवजात तुर्की प्रजातंत्र दिनो दिन उन्नति कर रहा है। स्वेच्छाचारी, तुर्क सुल्तान की सत्ता सदा के लिये लुप्त हो गयी। प्रजातंत्र की आज्ञा से खलीफ़ा का पद भी मिटा दियागया। सुल्तानियत और ख़िलाफ़त की धर्मान्धता से मुक्त, तुर्की प्रजातंत्र संसार के उन्नतशील राष्ट्रों में समझा जाता है, जिसकी सत्ता अब मदांध यूरोपीय राष्ट्रों को भी स्वीकार करनी पड़ी है।

पुरानी राजधानी कुस्तुन्तुनिया के बदले अब अङ्गोरा में राजधानी नियत की है। यही अङ्गोरा में तुर्कों की राष्ट्र महासभा है, जिसके प्रधान मुस्तफ़ा कमाल पाशा हैं। कई शताब्दियों के बाद तुर्कों ने यूरोप छोड़ कर एशियाई भूमि (अङ्गोरा) पर राजधानी स्थापित की, जो उनकी उन्नति का शुभ लक्षण है। आज, अङ्गोरा सरकार की आज्ञा से तुर्की के भाग्य का संचालन हो रहा है। तुर्क जाति की राजनैतिक सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति के लिये अङ्गोरा सरकार ने आज ऐसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे सुचारु विधान और आदेश प्रचारित किये हैं, जो तुर्की में पहले कभी नहीं हुए थे। ऐसे उन्नतशील, शक्तिशाली तुर्की को देख कर यूरोप के ईसाई राष्ट्र शङ्कित हो रहे हैं, क्योंकि तुर्की को टुकड़े टुकड़े कर बाँट लेने का स्वप्न फिर दूर हो गया। तुर्की में जीवन था, और जीवन है, यह मुस्तफ़ा कमाल ने अपने उद्योग से सिद्ध कर दिया। तुर्कों ने अपनी सर्वश्रेष्ठ स्वतंत्रता स्थायी रखते हुये, विदेशी राष्ट्रों के हस्तक्षेप का तिरस्कार कर दिया। सारांश यह कि आज तुर्की-प्रजातंत्र ईसाई राष्ट्रों के पंजे से सर्वथा स्वतंत्र है।

कमाल पाशा की सुन्दरी गुणवती स्त्री लतीफ़ा हानम् सारे तुर्की की एक आदर्शरमणी समझी जाती है। श्रीमती लतीफ़ा हानम् स्वयं स्त्रियों की उन्नति के लिये उत्साहित हैं। बालिकाओं और स्त्रियों की शिक्षा के लिये उन्होंने सैकड़ों पाठशालाएं और विद्यालय खोले हैं। बालिकाओं को नवीन उन्नतशील प्रणाली से शिक्षा दी जाती है और उन्हें राष्ट्रीय कार्य्यों में भाग लेना सिखाया जाता है। तुर्की में पहले स्त्रियों की घोर पराधीनता थी, जैसी भारत में आज तक है, परन्तु लतीफ़ा हानम् की सिफ़ारिशों और प्रजातंत्र की कार्य्य दक्षता से वह पतित पराधीनता दूर हुई। शताब्दियों की परतंत्रता के बाद, आज तुर्की स्त्रियों ने अपने स्वाभाविक स्वत्व हस्तगत किये, और उन्हें भी देश की राजनीति, समाजनीति और अन्य समस्त जातीय कार्य्यों में पुरुषों के समान स्वतंत्र अधिकार प्राप्त हुए हैं।

परन्तु, इन सुख के दिनों में अज़ीज़ा कहाँ है? प्रेम की बावली बालिका ने प्रियतम् के लिये निज प्राण बलि चढ़ा दिये!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहसा, अनन्त आपदाओं और पीड़ाओं से हृदय जब भर गया, जब उस व्याकुल निःसहाय दीन हृदय की पीड़ा सहन न की गयी, निराश प्रेम के ऊष्ण अनुताप से जब जला न गया, जीवन से घृणा हो गयी, संसार सचमुच असार हो गया, जब पृथ्वी और आकाश अस्तित्वहीन मालूम होने लगे, तब प्रलय के विघातक बेग से कराल मृत्यु के एक धक्के से, प्राण स्वयं ही उछल कर मुँह के पास आ गया। और वह व्याकुल अति आतुर अज़ीज़ा इस तुच्छ संसार से, व्यतीत काल की तरह, विदा हो गयी। आज उसकी स्मृति केवल एक समाधि है।

तुर्की के एक कोने में मर्मपीड़िता अज़ीज़ा की एक कब्र बनी है। क़ब्र के चारों ओर दूर तक मैदान है, और आस पास अनेक पुष्प, पौधें लगे हैं। कभी कभी उस कब्र पर कुछ फूल चढ़े रहते हैं, जो न जाने कौन आकर चढ़ा जाता है। सारी कब्र कभी २ रंग बिरंगी बहुत फूलों से ढकी रहती है। अज़ीज़ा आज संसार में नहीं है, पर उस गांव के लोग आज भी उसकी दर्द भरी प्रेम कहानी कहते हैं और शोक दुःख तथा समवेदना प्रकट करते हैं।

वायु के झोकों से कभी कभी कब्र पर चढ़े हुए फूल बिखर जाते हैं। सूर्य्य, चन्द्र और तारे उसकी शोभा देखते हैं। यह प्रकृति अति शान्ति दायिनी बन गयी है। क्योंकि दलित कुसुम की तरह दलित हृदय समाधि में सानन्द विश्राम करता है।

॥ इति ॥

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

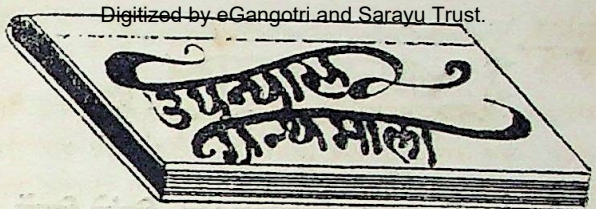

उपन्यास-प्रेमी पाठकों तथा अग्रिम चन्दा भेजने में हिचकिचाने वाले उपन्यास-प्रेमियों को प्रसन्न हो जाना चाहिये कि उनकी असुविधाओं तथा रुकावटों और शिकायतों को देख कर कि "मासिकपत्रों में (१) प्रायः अधूरे अधूरे उपन्यास रहते हैं, इससे प्रेमी-पाठकों को पहिले तो नायकों के नाम इत्यादि भूल जाते हैं, (२) किस्से का सिलसिला ख्याल से उतर जाता है, (३) अगर याद भी रहा तो कहीं यदि बयान किसी उलझन की जगह में टूट गया तो आगे के लिये बेचैनी होती है और (४) कहीं यह सोच कर कि आगे का अंक आवेगा तो फिर पढ़ लेंगे, उसे उठा कर रख दिया और दूसरे अंक के आते जाते वह खो गया तो सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया।" हमने हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों से लिखा तथा बँगला गुजराती, मराठी और उर्दू भाषा के अच्छे अच्छी उपन्यासों का तर्जमा करा कर यह "माला" प्रकाशित की है। इसके हर एक अंक में एक उपन्यास रहता है। आज तक इसकी ३५ संख्यायें निकल चुकी हैं। सिर्फ़ एक कार्ड पर ग्राहक होने की सूचना मय आठ आने प्रवेश फीस के साथ भेज दीजिये, जभी पूरा (पुस्तक छपकर) अंक तैयार हो जावेगा तभी यथार्थ मूल्य का सचित्र उपन्यास केवल पौनी कीमत बाद देकर वी० पी० से भेज दिया जावेगा। डाक खर्च जिम्मे खरीदार के होगा। और यदि कभी वी० पी० लौटी न होगी, ग्राहकता छोड़ते समय पेशगी जमा किये गये आठ आने भी वापस दे दिये जावेंगे। साथ ही इस वर्ष से ग्रन्थमाला के ग्राहकों को रत्नमाला की पुस्तकें भी उपरोक्त नियमानुसार दी जायँगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

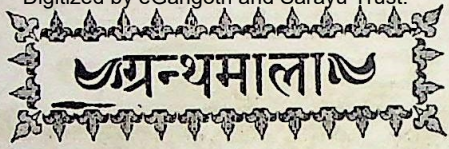

में

निकली हुई अति उत्तम शिक्षाप्रद रंग बिरंगे चित्रों से सुसज्जित पुस्तकें।

बड़े घरकी बड़ी बात	१)	रमणी रहस्य	॥)
रहस्यकुण्ड दो भाग	३।)	प्रवासिनी	१॥)
प्रेत-तर्पण	२)	कंकणचोर	२)
सीताराम	१।)	सोने की कंठी	१)
चन्द्रशेखर	१।)	सोने की प्याली	१)
सम्राटचन्द्रगुप्तदोनोंभाग	२॥)	सुनहला साँप लगभग	१)
जन्मभूमि	१)	अल्ला हो अकबर ,,	१॥)
घर का नौकर (यन्त्रस्थ)		अरुणमन्दिर (छपरहा है)	
तुर्कतरुणी	१)	काँटो में फूल ,,	
आँख का नशा	१।)	आग की चिनगारी	॥)
दौलत का नशा	१)	खूनी पंजा (यंत्रस्थ)	
पैशाचिक काण्ड सचित्र	२)	नव्वाबनन्दिनी दो भाग	१॥)
सोने की राख सचित्र	॥≈)	दिल का काँटा	१)
नव्वाबी महल सचित्र	१)	लालचिट्ठी	१।)
भ्रमर सचित्र रेशमी जिल्द	२)	सुकुमारी	१॥)
,, सादी सचित्र	१॥≈)	सफेद औरत	१।)
मृणालिनी	१)	हेमचन्द्र	१॥≈)
विषवृक्ष	१।)	आरण्यबाला	१॥≈)
राजदुलारी	१)	महेन्द्रमोहनी	१॥≈)
जहर का प्याला	१)	रामप्यारी	१।)
कनकलता	१)	राजराजेश्वरी	१)
रजनी	॥)	भोजपुर की ठगी	॥≈)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोने की राख

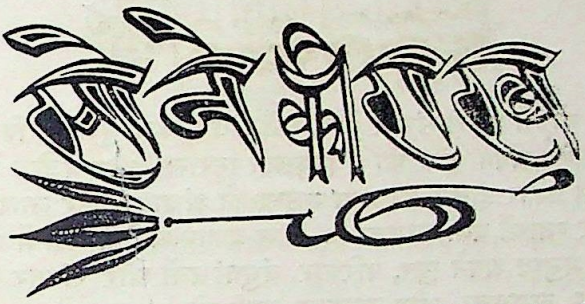

कौन सा ऐसा हिन्दू होगा जो महारानी पद्मिनी को न जानता हो ? और उनके अटलव्रत की मुक्तकंठ से प्रशंसा न करता हो। इस उपन्यास में उन्हीं महारानी का ऐतिहासिक वृत्तान्त लिखा गया है। साथ ही पाँच सुन्दर २ चित्र भी दिये गये हैं। एक वर्ष में पुस्तक कई बार छप चुकी है। दाम ॥≈)

जहरकाप्याला

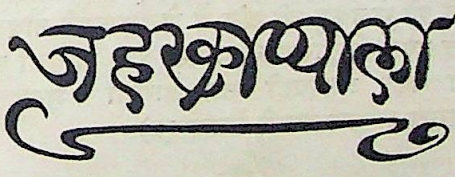

यह उपन्यास क्या है मानों एक जीता-जागता चित्र है। रंडियों की चालाकी, धूर्तता और कपट पढ़ दाँतों ऊंगलियाँ दबानी होंगी। एक सती स्त्री की आदर्श पति-भक्ति और पति-सेवा देख शिक्षा ग्रहण करनी होगी। पति की निष्ठुरता और साध्वी की पति-पूजा पढ़ विचलित होना, कलियुगी मित्रों की मित्रता और पुलिस की दोस्ती का वृत्तान्त पढ़ कान पकड़ना होगा। ऐय्याशी और बदकारी नतीजा ऐसी खूबी और दिलचस्पी के साथ खींचा गया है, कि पढ़कर आँखों का अन्धेरा दूर हो जाता है। सुन्दर चित्र सहित का मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by Dharmarth and Seva Trust

यों तो हिन्दी-संसार में अनेकों ग्रंथ निकल चुके हैं, किन्तु यह ग्रंथ अपने ढंग का बिल्कुलही निराला और बेजोड़ है। किस प्रकार दौलत का नशा मनुष्य को अंधा बनाकर लालची और स्वार्थी बना डालता है, किस प्रकार धन के नशे में पड़ कर मनुष्य अपने सुत, परिवार, बंधुबांधवों और संसार को तुच्छ समझता और एकमात्र उसी की भावना में तन्मय हो जाता है। किस प्रकार एक पवित्रहृदय अबला बालिका को एक इसी धन के नशे में उन्मत्त मनुष्य के हाथ से कष्ट उठाने पड़े हैं और किस तरह उसकी जीवन-धारा उलट पलट होकर अंत में आदर्श का स्तंभ बनकर लोगों को चकित कर डालती है, किस प्रकार इसी नशे में रंगे हुए अर्थ के दास अपने पिता के कारण एक उच्च शिक्षाप्राप्त महत् हृदय वाले पुत्र को हजार कष्टों को झेलकर भी अंत में जेल तक की नौबत उठानी पड़ी, आदि हृदय-विदारक दृश्य पढ़ कर आपकी आँखों से दौलत का नशा अवश्यही उतर जायगा। मूल्य १) सुंदर छपाई के साथ सचित्र रेशमी जिल्द १॥)

बंग-साहित्य-सम्राट् बंकिमचन्द्र चटर्जी का नाम पाठकों से छिपा नहीं है, उनके लिखे हुए उपन्यास अपना शानी नहीं रखते, वख्तियार खिजली का कपट, हेमचन्द्र की अद्भुत वीरता, माधवाचार्य्य का भारत-हित-चिन्तन मृणालिनी का आदर्श पतिप्रेम, मनोरमा के अद्भुत रहस्य इत्यादि। रंगीन चित्र सहित का मूल्य केवल १) तीसरी बार छप रही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

यह एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इसमें अकबर के समय की उन गुप्त घटनाओं का वर्णन है जो कि बड़े छिपे २ रूप में होती थीं। वीर क्षत्रियों कैसे क्या अत्याचार हुए हैं? किस किस प्रकार प्रजाओं को वहाँ के कर्मचारी लोग पीड़ा पहुँचाते थे, किस तरह राठौर अमरसिंह ने म्लेच्छ अत्याचारी कर्मचारियों के हाथों से भारतवासी राजपूतों की रक्षा कर उन्हें सहायता पहुंचाई और उस दुःख से उद्धार किया इत्यादि बातों को पढ़ कर आप थर्रा उठेंगे—आपका हृदय एकदम कम्पायमान हो जायगा। विशेष प्रशंसा व्यर्थ है। पुस्तक हाथ में लेते ही यदि आप छोड़ दें तो दाम वापस—हिन्दी संसार में अब तक ऐसी पुस्तक न निकली है न निकलेगी। सुन्दर छपाई बढ़िया कागज पर छपी हुई सचित्र पुस्तक का दाम लगभग २)

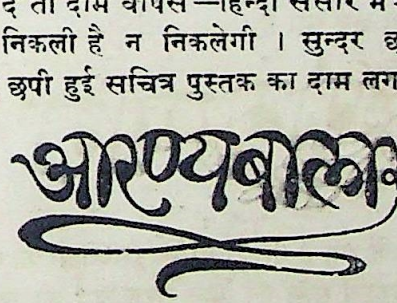

नये ढंग का हिन्दी में यह अकेला उपन्यास है। इसमें फिलासफी के साथ रोचकता भी भरी हुई है। पढ़े-लिखे लोग हिंदी में अच्छे २ उपन्यास न होने की जिस बात को कह, हिंदी उपन्यासों के पढ़ने से नाक भौं सिकोड़ते हैं, उन्हीं के उलहने को दूर करने के लिये यह तैयार किया गया है। मूल्य सुंदर चित्र के साथ नये संस्करण का केवल १॥=)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बंकिम बाबू के जितने उपन्यास हैं, सब अपने अपने ढङ्ग के निराले हैं। और एक दूसरे से बढ़कर दिलचस्प हृदयग्राही और आकर्षण पूर्ण हैं। परन्तु सब से सीताराम में यह विशेषता है कि यह ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा गया है, धर्म का इसमें खूब महत्व दिखलाया गया है और आकर्षण शक्ति इसमें इतनी भरी गई है, कि एक बयान पढ़ लेने पर आप पुस्तक छोड़ नहीं सकते। लगभग २५० पृष्ठों की सजिल्द और सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल १॥) सादी का १।) इसका उपसंहार भाग छप रहा है।

यह उपन्यास क्या है मानों धार्मिक शिक्षाओं का एक सजीव चित्र है। गृहस्थ मात्र को किस तरह धर्म को सामने रखते हुए सब काम करना चाहिए। योग और जप की अद्भुत महिमा और शिक्षा, आदर्श दम्पति प्रेम का सुन्दर दृश्य, पातिव्रतधर्म और सेवामार्ग का उत्तम महत्व, बड़ी सरलता से इसमें दर्शाये गये हैं। साथ ही किस उपाय से मनस्थिर और ब्रह्म-दर्शन होता है, अच्छी तरह दिखलाया गया है। मूल्य दूसरे संस्करण सचित्र का सुंदर छपाई बढ़िया कागज १।) रेशमी जिल्द १॥।)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

आंख के आंसू

पाठक ! ये वह आंख के आँसू हैं जो कि आपके हाय के आंसुओं को उभाड़ कर बाहर बहा देंगे। कठोर से कठोर हृदय को भी पिघला कर मोम बना देंगे फिर इसको पढ़ कर निर्दय हृदय वालों के मनमें दया का संचार होगा, डब डबाती हुई आंख से निकली हुई आंसुओं की बूदें टूटे और जले हृदय में मरहम का काम करेंगी। कपूत पुत्र का अपने पिता के प्रति महा अत्याचार और निष्ठुर व्यवहार देखकर आप रो पड़ेंगे। सच्चे मित्रका यथार्थ प्रेम व्यवहार और "मित्र वही जो विपत्ति परे काम आवे" इसका ज्वलंत उदाहरण देख आप वाह २ करने लग जायंगे। सुन्दर छपाई के साथ मूल्य ॥।)

नवाबनन्दिनी

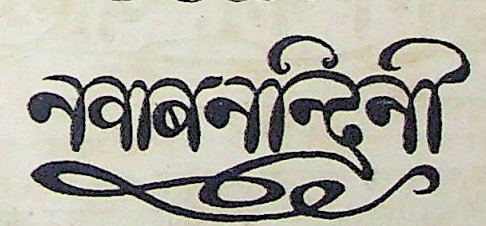

यह उपन्यास बंगभाषा के सुप्रसिद्ध लेखक बंकिम बाबू के लिखे हुए प्रसिद्ध उपन्यास "दुर्गेशनन्दिनी" का परिशिष्ठ है। जहाँ पर दुर्गेशनन्दिनी की कहानी समाप्त हुई है, उसी जगह से इसका आरम्भ हुआ है। पुस्तक की कथा बड़ी ही शिक्षा-पूर्ण और मनोरञ्जक है। सुन्दर छपाई के साथ मूल्य दोनों भाग का केवल १॥)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

SPS
391.433 V 84 T
10510

यह बंगाल के प्रसिद्ध लेखक बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जी सी-आई-ई की बंगला पुस्तक "रजनी" का अनुवाद है। बंकिम बाबू के उपन्यासों की प्रशंसा करना व्यर्थ है। क्योंकि उनके नाम ही से लोग लट्टू हो जाते हैं। अपने अपूर्व घटना पूर्ण उपन्यासों के कारण ही बंकिम बाबू अपना नाम अमर कर गये हैं। तीसरी बार छपा है—मूल्य ॥)

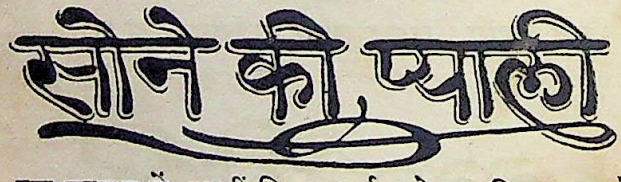

इस पुस्तक में उन्हीं मि० राबर्ट ब्लेक प्रसिद्ध अङ्गरेज जासूस की अद्भुत जासूसी भरी है। जिनकी अनेकों कौतूहल-मयी हृदय को दहला देनेवाली कहानियाँ आप अन्य किताबों में पढ़ चुके हैं। देखिये, किस तरह इतिहासप्रसिद्ध 'अग्निगर्भ' नाम की सोने की प्याली का प्रसिद्ध डाकुओं के सर्दार हेनरी ग्यारक के चंगुल से राबर्ट ब्लेक पुनरुद्धार करते हैं। डाकुओं के भयानक षड़यन्त्र जाल को किस अद्भुत कौशल से सुलझा कर मि० ब्लेक उन लोगों की सभी चेष्टायें व्यर्थ कर डालते हैं, किस प्रकार नकली ब्लेक की असली ब्लेक के साथ मुठभेड़ होती है—इत्यादि २ बातों को पढ़ आप चकित हो जायेंगे छप रहा है। दाम १)

Sri Pratap Singh Library

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE